CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

HINDU ASTROLOGICAL MAGAZINE
OF ANCIENT SCIENCE

ज्यौतिष मार्तण्ड

• प्रधान सम्पादक-देवधर पाण्डेय

भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली ज्यौतिषीय हिन्दी पाक्षिक पत्रिका

दिपावली पूजन पर विशेष अंक

* दीपावली पूजन के कुछ मुहूर्त
* कार्तिक मास में पंचपर्व और लक्ष्मी पूजन
* तांत्रिक साधना और दीपावली
* ज्योति पर्व
* दीपावली पर भविष्यवाणियाँ
* घट में दीप धरो
* कुंवर की कुण्डलियाँ
* कालदेव सूर्य
* दीपावली एक पर्व त्यौहार
* हथेली पर विभिन्न पर्वत
* ज्यौतिष और आपका नाम
* ज्यौतिष में नेत्र रोग
* ज्यौतिष में गुण मिलान की वैज्ञानिकता
* कर्क राशि
* मृत्यु और आशक्ति
* महिला और अंगलक्षण
* आपके प्रश्न और हमारे उत्तर
* आपका मासिक भविष्य
* व्यापार भविष्य

-आदि अनेक-

नवम्बर १९८५]
प्रथम पक्ष

[मूल्य : छः रुपए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-पत्रिका निर्माण कार्य

१. **सप्तवर्गी जन्म पत्रिका** (पुस्तकार)—ग्रहस्पष्ट, नक्षत्रावस्था, भावस्पष्ट चलित, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, विशोंतरी महादशा और अन्तर्दशाएँ । रु० ५१.००

२. **दशवर्गीय जन्मपत्रिका**—(पुस्तकार) संख्या एक का पूर्ण गणित कार्य, तथा फलादेश सहित । रु० १०१.००

३. **जन्मपत्र दिवाकर**—(७० पृष्ठ की पुस्तकार) संख्या १-२ का पूर्ण गणित कार्य एवं २५ पृष्ठ का फलादेश । रु० ५०१.००

४. **जन्मपत्र भास्कर**—१०० पृष्ठ की पुस्तकार (संख्या १-३ का पूर्ण गणित कार्य), अप्रकाश ग्रहस्पष्ट, षठबल एवं ३५ पृष्ठ का फलादेश । रु० १०१.००

५. **जन्मपत्र मार्तण्ड**—२०० पृष्ठ की पुस्तकार (संख्या १-४ का पूर्ण गणित कार्य), एवं १२० पृष्ठ फलादेश, इनके साथ ही किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर भी पूछा जा सकता है । रु० १००१.००

६. **जन्मपत्र सर्वेश्वर**—(३०० पृष्ठ की पुस्तकार) संख्या १-५ का पूर्ण गणित कार्य तथा १५० पृष्ठ फलादेश के साथ । रु. २५०१.००

१. कार्यारम्भ अग्रिम-पारिश्रमिक प्राप्त होने पर ही किया जाता है ।
२. निर्माण कार्य हिन्दी में होगा ।
३. समस्त जन्म-पत्रिकायें रजिस्टर्ड डाक से भेजी जावेगी ।

भूलियेगा नहीं

※ जन्म-स्थान ※ जन्म-तारीख ※ जन्म-समय

उपरोक्त तीनों बातें लिखकर भेजने पर आप अपनी जन्म-पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं ।

अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों व मित्रवर्गों की जन्म कुण्डलियों का वैज्ञानिक ढंग से निर्माण कराइये ।

—व्यवस्थापक

ग्रहदशा हेतु-रत्न प्राप्त करें

१. आपकी जन्म-कुण्डली के अनुसार अगर आप ग्रहदशा-शांति हेतु रत्न धारण करना चाहते हैं, तो इच्छुक रत्न की प्राप्ति हेतु पूर्ण विवरण के लिए ३ रु० का टिकट भेजें, तभी हम पूर्ण सूचिपत्र भेज सकेंगे । रत्न की शुद्धता की गारन्टी हमारी होगी ।

२. यदि आप प्रतिदिन सुबह-शाम की प्रार्थना में विश्वास व श्रद्धा रखते हैं तो इस पुस्तक में दी गई प्रार्थनायें प्रत्येक दिन-वार के अनुसार, आपके लिए लाभदायक है । मूल्य २)रु.

—व्यवस्थापक

Nepal Sanskrit University

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीं सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतजस्राम् । चन्द्रां हिरण्मयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥
तंप्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपामिनीम् । यस्यां हिरण्य प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्म स्थितां पद्मवर्णा तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः
तस्य फलानि तपसा नुदन्त या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनच्श्र सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन कीर्तिमृद्धि ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्हम् । अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारांय दुराधर्षा नित्य पुष्टां करीषिणम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रिमम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहिं । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ! श्रियं वासय में कुले मातरं पद्मालिनीम् ॥११॥
आपः मृजन्तु स्तिग्धानि चिक्लीत वस में गृहे । नि च देवीं मातंर श्रियं वासय में कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गला पद्मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्यमयी जातवेदो म आवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयी लक्ष्मी जातवेदो म आवह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्य प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरेषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुय दाज्यमन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सतत जपेत ॥१६॥

॥ इति ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तम् समाप्तम् ॥

❋ प्रार्थना ❋

हे श्री महालक्ष्मी जी ! हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे मन की सभी अभिलाषाऐं पूर्ण हों, और हमारे वचन सदैव सत्य सिद्ध होते रहें। हमारी कीर्ति, रूप, धन-धान्यादि सदा स्थिर रहें। इस दीपावली-पूजन के पावन अवसर पर, हम अपने हित-चिन्तकों के सुख-समृद्धि की भी कामना करते हैं।

॥ शुभम् भूयात् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Phone : Res. 716699
Offi. 743840
713840

With Best Compliments

FROM

JAY INDUSTRIES

A-67-2, G. T. KARNAL ROAD, INDUSTRIAL AREA, DELHI
DELHI-110 033

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा"

ज्यौतिष-मार्तण्ड-पाक्षिक
संस्थापिका–ब्रह्मलीन राजरानी देवला
वार्षिक शुल्क 45-50 रु० प्रथम पक्ष (12 अंक)
वार्षिक शुल्क 25-50 रु०द्वितीय पक्ष (12 अंक)

फोन : 62506 & 66516
पता–पं. देवधर पाण्डेय, प्रधान सम्पादक
ज्यौतिष-मार्तण्ड-पोस्ट बाक्स नं. १९९
डी १९ गणेश मार्ग, बापू नगर, सत्संग भवन के सामने–जयपुर ३०२०१५ (राजस्थान)

अनुक्रमणिका

नं.	लेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	दीपावली पूजन के कुछ मुहूर्त्त		५
२.	कार्तिक मास में पंचपर्व और लक्ष्मी पूजन	श्री सत्यनारायण ओझा एम. ए., एल. एल-बी.	९
३.	घट में दीप धरो		११
४.	ज्योति पर्व	स्व. अमरचन्द नाहटा	१२
५.	कुंवर की कुण्डलियां	श्री कुंवर यादव	१३
६.	तांत्रिक साधना और दीपावली	श्री सत्यनारायण ओझा एम. ए., एल. एल-बी.	१४
७.	कालदेव सूर्य	डा. अभयदेव शर्मा, एम.ए पी.एच.डी.	१७
८.	ज्यौतिष में नेत्र रोग	श्री ब्रजमोहन पन्त	२१
९.	ज्यौतिष में गुण मिलान की वैज्ञानिकता	पं. धर्मनारायण तिवारी	२३
१०.	महिला और अंग लक्षण	पं. शान्ताप्रसाद पाराशर एम. ए.	२७
११.	हथेली पर विभिन्न पर्वत	श्री ओंकारलाल शर्मा "प्रमद आचार्य"	२९
१२.	कर्क राशि	डा. घनश्यामदास मेहरा एम. काम, एल.एल.बी.	३१
१३.	मृत्यु और आसक्ति		३५
१४.	ज्यौतिष और आपका नाम	पं. रामगोपाल दाधीच	३७
१५.	दीपावली पर्व पर भविष्यवाणी	श्री विद्यासागर एम.ए. ज्यौतिष रत्न	३९
१६.	आपके प्रश्न हमारे उत्तर	पं. देवधर पाण्डेय बी ए. ज्यौतिषाचार्य	४१
१७.	आपका मासिक भविष्य	भाष्कर	४४
१८.	पर्व त्यौहार एवं व्रत		४५
१९.	व्यापार भविष्य	श्री दुर्गाप्रसाद गुप्ता साहित्य विशारद	४७

दीपावली की इस शुभ महारात्रि में, श्री महालक्ष्मी के पूजन अर्चन के पश्चात, नववर्ष के उज्वल प्रभात में, हम समस्त ग्रहों और नक्षत्रों के समक्ष, राष्ट्र के शुभत्व के लिए मंगल कामना करते हैं और ज्यौतिष मार्तण्ड परिवार के अपने समस्त पाठकों, हित-चिन्तकों और विद्वान लेखकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए, उनके लिए अनेक शुभ कामनाएं, इस पावन अवसर पर प्रस्तुत करते है।

देवधर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋद्धि सिद्धि

श्रीं गणेशाम्बा-चरणान्तत्वा प्राचीननावाचीन होरा-तन्त्र सारमुद्ध् त्याहम् ज्यौतिष-मार्तण्ड कुरुते"

Having bowed to the feet of GURU the GOD Ganesh and the Gadess Amba I write JYOTISH MARTAND by extracting the essence of the astrological science contained in the ancient work on the subject :--

वर्ष १७ | नवम्बर १९८५ | अंक १२

अपनों से अपनी बात:--दीपावली का पूजन, व्यवसायी वर्ग और धनी लोगों के अलावा साधारण गृहस्थजन भी अपनी क्षमता और श्रद्धा के अनुसार इस दिन श्रीमहालक्ष्मी का पूजन करते हैं, परन्तु व्यापारियों के लिये दीपावली पर्व पर श्री महालक्ष्मी जी का पूजनार्चन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हैं, क्योंकि इस पर्व पर श्री महालक्ष्मी के पूजन के साथ-साथ गणेश पूजन, कुवेर, इन्द्र आदि का पूजन करने से व्यक्ति को व्यापारिक सफलता, धन, सुयश की प्राप्ति होती है। श्री महालक्ष्मी समृद्धि की देवी है, प्रत्येक व्यक्ति की समृद्धि से समाज की समृद्धि होती है और समाज की समृद्धि से ही राष्ट्र समृद्ध होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने कुटुम्बिक परिपाटी के अनुसार श्री महालक्ष्मी का पूजन दीपावली के इस पर्व पर प्रसन्नतापूर्वक स्वच्छ वस्त्रों एवं विविध अलंकारों से अपने शरीर को अलंकृत कर करना चाहिये। दीपावली पूजन के लिये मैं कुछ शुभ मुहूर्त लिख रहा हूँ, इन मुहूर्तों में से किसी एक में श्री महालक्ष्मी जी का पूजन करने से, अवश्य शुभ फल की प्राप्ति होगी। पाठकों से निवेदन है कि दीपावली पूजन से पूर्व, ज्यौतिष-मार्तण्ड के सन् 1983 और सन् 1984 के दीपावली विशेषांकों का अध्ययन करलें, इन दोनों विशेषांकों में श्री महालक्ष्मी जी के पूजन के सम्बन्ध में विशिष्ठ सामग्री प्रकाशित की जा चुकी है।

दीपावली :— इस वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष 30 मंगलवार दिनांक 12 नवम्बर 1985 को साम 7 बजकर 50 मिनट तक अमावस्या तिथि रहेगी, इसके बाद प्रतिपदा तिथि भोग करेगी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

एक आवश्यक सूचना

ज्यौतिष मार्तण्ड के १९८३ व १९८४ के दिप्रावली विशेषांक संग्रहरणीय हैं, इनमें ऐतिहासिक पाठनीय कुछ श्रेष्ठ रचनाएं जैसे–अनुभूत लक्ष्मी साधना, एक विचित्र अनुभूत प्रयोग, भारतीय अभूत कलश, वैदिक श्रीसूक्त में भगवती लक्ष्मी, वेदों में महालक्ष्मी का स्वरूप, श्रीयंत्र में त्रिकोण रहस्य, श्रीयंत्र दीप, दीप अमावस्या की रात्रि में लक्ष्मी, स्त्रोत, लक्ष्मी साधना, लक्ष्मी प्राप्ति का अमोघ साधन, स्वास्तिक का स्वरूप, दीपावली में लक्ष्मी का तांत्रिक रहस्य, दीवाली कैसे मनायें, अभिजित मुहूर्त, चण्डिका स्त्रोत, दिपावली पूजन कैसे और क्यों, आदि अनेक श्रेष्ठ लेख है।

जिज्ञासुओं के लिए दीपावली पूजन से पूर्व इनका अध्ययन आवश्यक है ये दोनों विशेषांक १२/- रुपये तथा ७/- रुपये रजिस्ट्री डाक व्यय याने कुल १९ रुपये में प्राप्त कर सकते।

— व्यवस्थापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रातः 9 बजकर 36 मिनट तक स्वाती नक्षत्र, पश्चात् विशाखा नक्षत्र, सौभाग्य योग रात्रि के 8 बजकर 22 मिनट तक तदुपरान्त शोभन योग रहेगा। इस वर्ष क्रूर ग्रह (मंगलवार) की दीपावली है, सावधानी की अत्यन्त आवश्यकता हैं। महालक्ष्मी पूजन के लिये प्रदोषकाल ही शुभ माना गया है जो इस दिन साम 5 बजकर 20 मिनट से प्रारम्भ होकर साम 7 बजकर 41 मिनट तक है। अतः श्री महालक्ष्मी जी का पूजन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मन्दिर में दीपदान कर श्री महालक्ष्मी पूजन का संकल्प कर लेना चाहिये। इस समय स्थर लग्न "वृषभ" लग्न भी है जो संकल्प और पूजन के लिये अति शुभ है। वृषभ लग्न कुण्डली में, कन्या में मंगल–तुला में केतु सूर्य चन्द शुक्र–वृश्चिक में बुध शनि और मकर में गुरु तथा मेष में राहू स्थित है। लग्नेश शुक्र छटे भाव में है परन्तु वह षष्ठेश भी हैं और अपने भाव में पराक्रमेश चन्द्र और सुखेश सूर्य के साथ उपचय में है। इस प्रकार पराक्रम और सुख का सम्बन्ध लग्नेश के साथ छटे भाव में हो रहा है। व्यापारिक आदि कार्यों में प्रतिस्पर्धा तो अवश्य होगी परन्तु कठिन परिश्रम के बाद सफलता भी प्राप्त होगी। पंचम–सप्तम भावेशों का (मंगल–बुध) आपस में अन्योन्य भाव परिवर्तन है जो बुद्धि और व्यापार की वृद्धि का सूचक है। दसम भाव से दसम भाव, सप्तम भाव में बुध शनि की युति राजयोग कारक है, लाभेश गुरु का भाग्य भवन में स्थित होना भी शुभ है। केवल व्यय भाव में राहू की स्थिति शुभ नहीं है, अतः पूजन करने से पूर्व राहू का दान आदि करा लेना चाहिये।

सिंह लग्न :—इसके बाद दूसरा स्थर लग्न। सिंह लग्न रात्रि में 11 बजकर 48 मिनट से रात्रि के 2 बजकर 21 मिनट तक है। इस स्थर लग्न, में यह विशेष बात ध्यान में रखनी है कि चन्द्रमा रात्रि के 1 बजकर 22 मिनट पर वृश्चिक राशि (नीच राशि) में आ जाता है अतः समस्त शुभ कार्य रात्रि के 1 बजकर 15 मिनट से पूर्व ही कर लेने चाहिये। सिंह लग्न की कुण्डली में द्वितीय भाव में मंगल, तृतीय भाव में केतु सूर्य चन्द्र शुक्र–चतुर्थ भाव में बुध शनि–छटे भाव में वृहस्पति और भाग्य भवन में राहू है। सुखेश और भाग्येश मंगल धन भाव में है, मंगल वैसे भी धन के लिये कारक नहीं माना है और भाग्य भवन को देखता भी है जहां राहू स्थित है अतः दंगल होने की सम्भावना अधिक है, श्री महालक्ष्मी कापूजन ही इसलिये किया जा रहा है कि दंगल न हो। खैर सावधानी की आवश्यकता है। तृतीय भाव में सूर्य चन्द्र शुक्र और केतु की स्थिति व्यापार उन्नति के बजाय पुरुषार्थ एवं पराक्रम की वृद्धि के लिये शुभ है। चतुर्थ स्थान में, धनेश लाभेश बुध के साथ सप्तमेश शनि हैं। शनि अपने छटे भाव को जहां वृहस्पति है पूर्ण दृष्टि से देखता है, फिर भी व्यावसायिक लाभोन्नति हेतु, सिंह लग्न में अर्धरात्रि में खाता (बसना) एवं श्री लक्ष्मी गणेश कुबेर इत्यादि देवताओं का पूजन करने से सर्वविधि कल्याण होगा।

चौघड़िया मुहूर्त : श्री महालक्ष्मी जी का और खाता (बसना) पूजन हेतु साम 6 बजकर 46 मिनट से साम 7 बजकर 50 मिनट तक का समय में लाभ वेला प्राप्त होगा, इसमें प्रदोष काल एवं स्थर लग्न का भी समावेश है और अमावस्या तिथि भी है, अतः यह भी शुभ और परमोपयोगी शुभ मुहूर्त है इसके बाद रात्रि में 10 बजकर 4 मिनट से 1 बजकर 21 मिनट तक शुभ और अमृत चौघड़िया की संयुक्त बलाऐ प्राप्त होगी, इसमें "शुभामृत" वेला के संयुक्त काल में महानिशीथकाल की स्थिति एवं स्थर लग्न का संयोग भी रहेगा। अतः इस "शुभामृत" वेला के शुभ मुहूर्त में खाता (बसना) एवं श्री महालक्ष्मी, गणेश, कुबेर इन्द्रादि देवताओं का पूजन सर्वविधि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कल्याणकारी और श्रीपद होगा। अतः आप अपनी आस्था एवं सुविधानुसार उपरोक्त श्रेष्ठ शुभ मुहूर्त में श्री महालक्ष्मी पूजा, सर्वविधि से सम्पन्न अवश्य करें। ज्यौतिष मार्तण्ड परिवार के सभी आजीवन सदस्यों को जिनकी जन्म पत्रिकाएं हमारे पास है, प्रत्येक वर्ष की भांति श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्री गणेश पूजन, श्री कुबेर पूजन और इन्द्रादि देवताओं की सम्पूर्ण पूजन विधि मय शुभ मुहूर्त के आज दिनांक 20 अक्टूबर 1985 को रजिस्ट्री से भेज रहा हूँ।

—देवधर

एक निवेदन

अपने श्रद्धालू एवं सहृदय पाठकों के बलबूते पर ही 'ज्यौतिष मार्तण्ड" पत्रिका नियमित रूप से विगत १९६९ से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित होती रही है, यह गौरव की बात है कि यह पत्रिका पिछले १६ वर्ष से नियमित रूप से प्रकाशित होकर ज्यौतिष जगत में अपनी ख्याति प्राप्त कर चुकी है, इतना ही नहीं, विदेशों में भी इसने अपना स्थान बनाया है।

पिछले कुछ अर्से से हमारे अनेक पाठकों का अनुरोध है कि इस पत्रिका को पाक्षिक पत्रिका बनाया जाय। पाक्षिक की मांग करने वालों की मान्यता है कि "ज्यौतिष मार्तण्ड" सर्वसाधारण को लाभान्वित नहीं हो सकती, क्योंकि यह अपने आप में ज्यौतिष विद्वानों एवं ज्यौतिष शास्त्र के स्तर की पत्रिका है। इन लोगों के लिये भलेही मासिक पत्रिका यथावत प्रकाशित होती रहे किन्तु सर्वसाधारण के लिए दिन प्रतिदिन प्रयोग की उपयोगी सामग्री वाली पाक्षिक पत्रिका अलग से प्रकाशित की जाये।

अतः हमने नवरात्रा के शुभ महोत्सव पर अक्टूबर १९८५ से यह पत्रिका पाक्षिक रूप में भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है।

जो महानुभाव दोनों पत्रिकाओं को मंगाना चाहेंगे उनसे ७१/- रुपया वार्षिक शुल्क लिया जायेगा और जो केवल मासिक पत्रिका लेंगे उन्हें ४५.५० रुपया और जो केवल पाक्षिक मंगवायेंगे उनसे २५/- रुपया शुल्क लिया जायेगा।

प्रारम्भ में पाक्षिक पत्रिका साप्ताहिक अखबार के चार पृष्ठ के बराबर की होगी और थोड़े समय में ही पृष्ठ संख्या बढ़ादी जायेगी।

हमें विश्वास है कि पाठक दोनों पत्रिकाओं को ७१/- रु. वार्षिक शुल्क भेजकर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे और इसके प्रचार प्रसार में योगदान करेंगे। वार्षिक शुल्क जनवरी १९८६ से दिसम्बर १९८६ तक माना जायेगा जो सज्जन नवम्बर १९८५ में शुल्क भेजेंगे उन्हें अक्टूबर, नवम्बर व दिसम्बर ८५ के पाक्षिक अंक निशुल्क प्राप्त होंगे।

—व्यवस्थापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

PRONIC

MINDA®

AUTO ELECTRICAL PARTS

Manufacturers
MINDA INDUSTRIES

81-D, Kamla Nagar
DELHI–110007.
Phone : 230871, 2522610

IF YOU WANT TO KNOW
ABOUT MINDA PRODUCTS ....
ASK THE REPUTED VEHICLE MANUFACTURERS
WHO ARE USING AS OE

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

❋ यन्त्र निर्माण कार्य ❋

मन्त्र विद्या दैनिक काल से चली आ रही है। मन्त्र-तन्त्र और यन्त्र उपासना से सिद्ध होते हैं। पाठकों को ज्ञात है कि "शनि मुद्रिका" और सिद्ध बीसा मुद्रिका" कितनी प्रभावकारी एवम् कल्याण-कारी सिद्ध हुई है। अतः इस वर्ष हमने दीवावली की रात्रि और सूर्य-चन्द्र ग्रहणकाल में, कुछ योग्य अनुभवी तांत्रिक विद्वानों की देखरेख में, कुछ प्रभावकारी यन्त्रों का निर्माण कराकर, तथा विधिवत पूजा आदि कराकर (प्राण प्रतिष्ठा कर) इन्हें इतना शक्तिशाली बना दिया है जिससे इनका लाभ, उत्तम और उच्च श्रेणी का होकर, प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता देता है। इन यन्त्रों को २०० ग्राम से अधिक वजन की शुद्ध ताम्बे की प्लेट पर, अति सुन्दर ढंग से निर्माण किया गया है। इन यन्त्रों की शुद्धता की हमारी गारन्टी है। जिस घर में, दुकान में, कार्यालय और फैक्ट्री में यह धातु निर्मित यन्त्र (सिद्धयन्त्र) रहते हैं, वहां धन लाभ और प्रतिष्ठा बढ़ती है। राज्य और समाज से सम्मान प्राप्त होता है।

श्रीयन्त्र—उस महाशक्ति का प्रतीक है जो वैभव सम्पदा की अधिष्ठात्री देवीलक्ष्मी के रूप में विख्यात है। इस यन्त्र का प्रत्येक अक्षर "बीज" है, जो अपने आप में सम्पूर्ण मन्त्र अथवा स्त्रोत का प्रभाव सजोये हुए है। यह यन्त्र जहां भी रहता है, दुःख दरिद्रता को दूर कर, सम्पदा और वैभव का विस्तार करता है। यही कारण है कि इसे यन्त्रराज की संज्ञा से अभिहित किया गया है। श्रीयन्त्र पर अष्ट-लक्ष्मी सम्पुट व प्राण संजीवनी क्रिया का भी प्रयोग किया गया है, इस कारण यह विशेष प्रभावोत्पादक बन गया हैं। यह केवल आजीवन ग्राहकों के लिये हैं।

बगलामुखी यन्त्र—(सर्व-सिद्धि फलदायक) इस यन्त्र का प्रभाव विशेष रूप से शत्रु-दमन, वाद-विवाद, प्रतिरोध, मामला मुकदमा, शत्रुकृत-उपद्रव आदि समस्याओं के निराकरण और उनकी सफलता के लिए है। इस यन्त्र की अधिष्ठात्री देवी बगुलामुखी है। ',मन्त्र महार्णव" जैसे ग्रन्थ में बगुलामुखी यन्त्र को समस्त कामनाओं का पूरक बताया है। इसके माध्यम से कोई भी कार्य सहज में ही सम्भव हो जाता है। यह श्रीयन्त्र से बड़े साइज में है (केवल आजीवन ग्राहकों के लिए)।

उपरोक्त यन्त्र हमारे पास बहुत कम संख्या में हैं। अतः जवाबी पत्र भेजकर पहले पता करलें। आजीवन ग्राहकों को केवल आंशिक मूल्य पर ही, आजीवन शुल्क प्राप्त होते ही दोनों यन्त्र भेजे जा सकेंगे।

शनि मुद्रिका शनि प्रकोप के प्रभाव को नष्ट करने के लिए, काले घोड़े की नाल से शनि मुद्रिका का निर्माण शास्त्रोक्त विधि से किया गया है। मूल्य ५१) रु. के साथ ही, हाथ की सबसे बड़ी आगुली (माध्ममा) का नाप भी भेजे। धारण करने की विधि शनि-मुद्रिका के साथ भेजी जावेगी।

सिद्ध बीसा यन्त्र--(मुद्रिका रूप में) पाठकों को ज्ञात है कि यह मुद्रिका कितनी प्रभावकारी एवम् कल्याणकारी सिद्ध हुई है। बीसा यन्त्र को शुद्ध चांदी की आकर्षक अंगूठी में शास्त्रोंक्त विधि से इक्कीस दिन शुभ मुहूर्त में तांत्रिक मन्त्रों द्वारा अभिभूत कर "बीसा यन्त्र" की मुद्रिका तैयार की है। इसके धारण करने से व्यापार में उन्नति, राजकाज, में सफलता, यश, कीर्ति, धन सुख, स्त्री, सन्तान-सुख आदि अनेक प्रकार की कामनाऐ पूर्ण होती हैं। अंगूठी काफी वजनी और सुन्दर हैं। मूल्य १२०) रु. के साथ तीसरी आंगुली (अनामिका) का नाप भी भेजें। धारण करने की विधि मुद्रिका के साथ भेजी जा सकेगी। हमारे द्वारा निर्मित सभी यन्त्रों के असली होने और उनकी शुद्धता की गारन्टी हमारी होगी। आजीवन ग्राहकों के पत्र प्राप्त होते ही उपरोक्त यन्त्र अति शीघ्र भेजे जाते हैं। यदि आप किसी विशेष साइज में उपरोक्त यन्त्रों को चाहते हैं तो वह भी आपको प्राप्त हो सकते हैं।

—व्यवस्थापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्तिक मास में :-पंचपर्व और लक्ष्मी पूजन !

▷ सत्यनारायण ओझा
एम०ए०एल०एल०बी०

दीपावली हमारे देश में मनाए जाने वाले त्यौहारों में सर्वाधिक उल्हासमय, मगलमय एवं महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी अर्थात धनतेरस से पांच दिन तक, अर्थात कार्तिक शुक्ला द्वितीया तक मनाया जाता हैं। इन पांच दिनों का प्रत्येक दिन, एक पर्व एवं त्यौहार के रूप में है, इसलिए दीपावली को "पंचपर्व संयुक्ता दीपावली महोत्सवः" कहा जाता है। यह पांच पर्व निम्न प्रकार हैं--

१: कार्तिक कृष्णा १३, धन्वंतरी त्रयोदशी-धनतेरस
२ कार्तिक कृष्णा १४, रूप-चतुर्दशी-नरक चौदस
३. कार्तिक कृष्णा १५, अमावस्या दीपावली-
४. कार्तिक शुक्ल १, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा
५. कार्तिक शुक्ल २, भाईदोज यम द्वितीया

उपरोक्त पाँच दिनों को यमपंचक भी कहते हैं। सामान्य रूप से पूरा कार्तिक मास ही दीपदान के लिए उत्तम कहा गया है, परन्तु उपरोक्त पांच दिनों में दीपदान का सर्वाधिक महत्व होने से सर्वोत्तम शुभ फल की प्राप्ति होती है। पद्म पुराण में कहा गया है कि जिसने कार्तिक मास में भगवान श्री केशव के आगे दीप प्रज्वलित किया उसने सभी यज्ञों एवं तीर्थ स्थानों में स्नान का फल पा लिया है। विशेष रूप से जो धनतेरस को दीपदान करता है उसे अल्प मृत्यु का भय नहीं रहता, क्योंकि धनतेरस आरोग्य के देवता श्री धन्वंतरी भगवान का जन्म दिवस है। सभी आयुर्वेदिक प्रतिष्ठानों में यह पर्व, वैद्य समुदाय के द्वारा बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। चतुर्दशी एवं अमावस्या को दीपदान करने से धन संपत्ति प्रदान करने वाली लक्ष्मी-देवी प्रसन्न होती है। अब हम सर्वसाधारण के ज्ञान-वर्धन हेतु प्रत्येक पर्व का संक्षिप्त विवेचन करते हैं—

(१) धन-तेरस (धन्वंतरी जयन्ती)—वेद संहिता एवं पुराण ग्रन्थों में भगवान श्री धन्वंतरी का चरित्र मिलता है। भगवान धन्वंतरी समुद्र मंथन के समय निकले, नवरत्नों में भगवान धन्वंतरी एवं महालक्ष्मी, विशेष रूप से पूज्यनीय हैं। भगवान धन्वंतरी भगवान विष्णु के अंशावतार हैं तथा आरोग्य के देवता हैं। यह अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। इनका स्मरण करने से रोग एवं ज्वर का भय नहीं रहता। यह आयुर्वेदिक चिकित्सा के जन्म-दाता हैं। अतः सारे भारत में वैद्य समाज इनको अपना आराध्यदेव मानकर धन्वंतरी जयन्ती महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाता है। धनतेरस को यमराज की भी पूजा करने की परम्परा है। हमारी संस्कृति में मृत्यु को, भय की दृष्टि से नहीं देखा जाता, बल्कि उसे नवजीवन प्रदान करने हेतु माना जाता है। अतः इस दिन सूर्यास्त के पश्चात घर के बाहर दीपदान करना चाहिए, इससे यमराज प्रसन्न होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२). रूप-चतुर्दशी (नरक चौदस)–पुराणों के अनुसार इस दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध करके उसके द्वारा बन्दी बनाई गई देव, मानव और गन्धर्वों की सोलह हजार कन्याओं को नारकीय यन्त्रणा से मुक्ति दिलाई थी। इस दिन शारीरिक स्वच्छता एवं रूप सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए सूर्योदय से पूर्व, तेल एवं बेसन का उवटन लगाकर स्नान करना चाहिए। लोकाचार में इस दिन को छोटी दीपावली भी कहते हैं। इस दिन भी दीपदान का महत्व है। तथा इसीदिन अंजना देवी के उदर से श्री हनुमानजी का जन्म होने से, हनुमंत-जयन्ती भी मनाई जाती है।

(३) दीवाली (दीपावली)––कार्तिक मास का महान पर्व धनतेरस एवं रूप चतुर्दशी के पश्चात कार्तिक वदी अमावस्या को आता है। दीपमालाओं से सुसज्जित, उल्हास एवं आनन्द का प्रतीक (दीपावली महोत्सव, अमावस्या के दिन जबकि सारे भूमण्डल में अन्धकार फैला रहता है, तब छोटे-छोटे असंख्य दीप जलाकर हम भगवती लक्ष्मी का स्वागत करते हैं एवं यह प्रेरणा लेते हैं कि हम ज्ञान, स्नेह, प्रेम व सद्भाव से अपने हृदय दीप को प्रज्वलित रखकर ही धन का उपार्जन कर सकते हैं, अन्यथा धन की प्राप्ति नहीं होगी। इस त्यौहार को मानने की परम्परा वैदिक काल से चली आ आ रही है। अतः यह विभिन्न नामों से विश्व के सभी देशो में सभी धर्मावलम्बियों एवं सभी जातियों के द्वारा बड़े उल्हास एवं आनन्द के साथ मनाया जाता है। हिन्दू धर्मावलम्बियों के अनुसार आज ही के दिन भगवान श्रीराम ने अहंकार और असत् के प्रतीक रावण को मारकर तथा चौदह वर्ष की अपनी वनवास अवधि को समाप्त कर अयोध्या में प्रवेश किया था। अतः अयोध्यावासियों ने अपने प्रिय राम का स्वागत सारी नगरी में दीप जलाकर किया था। मिट्टी के दीपों के साथ साथ अयोध्यावासियों ने अपने हृदय में भी दीप जलाए थे, तभी से उस दिन के स्मृति स्वरूप यह त्यौहार मनाया जाता है।

एक कथा और भी है कि दैत्यों के राजा बलि, की दानशीलता की परीक्षा हेतु भगवान विष्णु ने वामन अवतार लेकर तीन पग पृथ्वी, दान स्वरूप मांगी थी जिसे राजा बलि ने देना स्वीकार कर लिया था। भगवान विष्णु ने जब दो ही पग में सारी पृथ्वी को नाप ली, तब तीसरे पग की नाप के लिये राजा बलि ने अपना मस्तक प्रस्तुत कर दिया था। राजा बलि की इस दानशीलता से प्रसन्न होकर भगवान ने राजा बलि को पाताललोक का राजा बना दिया, तथा स्वयं उसके द्वारपाल बने। राजा बलि की दानशीलता की स्मृति में धनतेरस, चौदस एवं अमावस इन तीन दिनों में सम्पूर्ण रात्रि में दीप जलाकर महोत्सव मनाया जाता है। यही दीपावली का त्यौहार है।

तीसरी कथा यह भी है कि भगवान श्री विष्णु, कार्तिक शुक्ला एकादशी, जिसे देवउठनी एकादशी भी कहते हैं–इस दिन जागते हैं तथा भगवान विष्णु की पत्नी श्रीमाता लक्ष्मीजी, भगवान से १२ दिन पूर्व कार्तिक कृष्णा अमावस्या को जागती है। इस दिन, दिनभर व्रत रखने के पश्चात सायंकाल को दीपदान के पश्चात शुभ मुहूर्त में गणपति, कुवेर के साथ श्रीलक्ष्मी जी का पूजन करना चाहिये। रात्रिभर दीप प्रज्वलित रखें। रात्रि भर दीप रखने से अन्धकार रूपी दरिद्रता का विनाश होता है। तथा ज्योति स्वरूपा लक्ष्मी के रूप से धन सम्पदा की वृद्धि होती है। इस हेतु श्री लक्ष्मीजी की शोडषोपचार, पूजा करनी चाहिए चमेली के तेल में सिन्दूर मिलाकर या गेरू से ही श्री महालक्ष्म्यै नमः, श्री कुवेराय नमः, लक्ष्मी पूजा के स्थान पर दीवाल पर लिखना चाहिए तथा स्वास्तिक पर, लक्ष्मीस्वरूप चांदी का रुपया रखकर पूजन करना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अन्नकूट (गोवर्धन पूजा)--अन्नकूट महोत्सव कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाता है। इस दिन सर्वप्रथम प्रातःकाल, गाय के गोबर से गोवर्धन बनाकर उसकी पूजा की जाती है तथा उसके पश्चात सभी प्रकार के नये अन्नों के, भांति-भांति के व्यंजन बनाकर छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन से भगवान को भोग लगाकर अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है। गोवर्धन पूजा, श्रीकृष्ण भगवान की पूजा है। इस दिन इन्द्र ने, अप्रसन्न होकर भयंकर जल-वृष्टि की थी जिससे गोकुल की गायें, तथा गोप-गोपिकायें पीड़ित होकर त्राहि-त्राहि करने लगी तब भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अगुली पर उठाकर उसके नीचे सभी जनता को बिठाकर, उनकी रक्षा की थी। इस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने इन्द्र का अहंकार नष्ट कर गोवर्धन पूजा का महत्व प्रतिपादित किया था।

(५) भैय्या दूज--कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया को भाई-दूज का त्यौहार मनाकर, इस पंच दिवसीय त्यौहार की समाप्ति होती है। भाई-दूज के दिन प्रत्येक बहिन अपने भाई को आमंत्रित कर, उसके मस्तिष्क पर मंगल तिलक लगाकर उसकी खुशी व दीर्घ जीवन की कामना करती है। इस सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा यह है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई यमराज को घर बुलाकर उसका स्वागत सत्कार किया था। बहिन के स्वागत सत्कार से प्रसन्न होकर यमराज ने बहिन, यमुना को वर मांगने हेतु कहा, तब यमुना ने यह वर मांगा कि आज के दिन जो भी बहिन अपने भाई को अपने घर बुलाकर उसे भोजन करावे तथा वह मेरे जल में स्नान करे, तो उसे यम यातना से मुक्ति मिले। यमराज ने यह स्वीकार कर तथास्तु कहा। अतः भाई दूज के दिन भाई-बहिन यमुना के पवित्र जल में स्नान कर मोक्ष की प्राप्ति करते हैं।

घट में दीप धरो

'दीप' हमें प्रकाश देता है, ज्ञान देता है, चेतना देता है। ये तीनों गुण दीप के 'द' वर्ण में निहित है। इसके बदले में दीप सन्तोष और आत्म-सुख प्राप्त कराता है; जो दीप के 'प' वर्ण में ध्वनित है। अतः दीप का त्योहार आनन्दमंगल का त्योहार है। हम दीप जलाकर लोगों को देने और पाने का मर्म समझाते हैं। दीप जलाकर हम घर में, मार्ग में, किनारे-कोने से, इधर-उधर से अन्धकार को, जड़ता को, दुर्बलता और धनाभाव को मार भगाने का उपक्रम करते हैं। इसमें हमें बहुत कुछ सफलता मिलती है। सचमुच दीप में अवस्थित तेल रूपी स्नेह, और बत्ती रूपी गुण, तेजाग्नि से प्रज्वलित होकर हमारे कान में बहुत कुछ कह जाते हैं; किन्तु हम हैं संसारी जीव। तमाशबीन की की तरह ताली बजाते जाते हैं, हा-हा, ही-ही करते हैं, मिलते-मिलाते हैं, राग-अनुराग से भर उठते हैं, दीप-पूजा करके, योग-क्षेम, धन-वैभव, श्री-सुयश माँगकर ठहर जाते हैं। यह वास्तव में बाह्य पूजा है, पानी के तल पर तैरने के समान है और क्षणिक है। हम देखते हैं दीप जलाकर भी हम ईर्ष्या-द्वेष, शोषण-उत्पीड़न, हिंसा-त्रास और भेदभाव से बुरी तरह जकड़े हुए हैं। हमारे दिल की बस्ती, मानसिक रोगों से तमाच्छन्न है। हमने दरवाजे का कूड़ा उठाकर सफाई का ढोल तो पीटा है; किन्तु आंतरिक अस्वच्छता काफी बढ़ा ली है। हम स्वार्थ, संकुचितता और सदाचार से क्षत-विक्षत होते हुए भी अपने को तीसमारखां समझते हैं। अतः समाज, धर्म, राजनीति और अर्थ-भूमि को पावन और स्वच्छ बनाने के लिए अब हमें घट में दीप-स्थापन करना होगा। यह दीप दिन-रात जलता रहकर, हमें देने-पाने का मर्म समझाएगा और प्रेम-एकता का पथ प्रशस्त करेगा। दीप की मृतिका-विनिर्मित काया, सादगी और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाती है दूसरे के लिए मर मिटने की याद दिलाती है; किन्तु जब हम अन्तराभिमुख होते हैं, तब बड़ी निराशा होती है। हम दीपावली का सन्देश सुनें और घट में दीप धरें, तो मानव-जगत का मंगल होगा, उत्थान होगा। इस अवसर पर हम अपने पाठकों को नूतन-वर्षाभिनन्दन देते हुए, घट में दीपक धरने की प्रार्थना करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(त्यौहार परक)

ज्योतिपर्व

(स्व०) श्री अगरचन्द नाहटा
साहित्य वाचस्पति

जैन परम्परा के अनुसार इस दीपावली पर्व की उत्पत्ति, भगवान महावीर के निर्वाण से हुई। कल्पसूत्र, निर्वाण भक्ति, हरिवंश पुराण, महावीर-चरित्र आदि अनेक ग्रन्थों के अनुसार भगवान महावीर का निर्माण, कार्तिक वदी अमावस्या को हुआ। केवलीज्ञानी भगवान महावीर, निरंतर उपदेश देते रहे, अतः उनके निर्वाण से अज्ञान रूपी अन्धकार-सा छा गया। बाहर में तो अन्धकार था ही, पर ज्ञानज्योति भी बुझ गई। अतः वातावरण बड़ा गम्भीर बन गया। बाह्य प्रकाश के रूप में रत्नों के दीये, देवों ने एवं, मनुष्यों ने मिट्टी के दीये जलाए। तभी से आज तक इस पर्व पर दिये जलाएँ जाते रहे हैं। जीवन की आवश्यकताओं और प्रतिष्ठा के लिए धन की आवश्यकता होती है और धनदाता, लक्ष्मी देवी मानी गई हैं। इसलिए लक्ष्मी की पूजा घर-घर में की जाती है। एक विशिष्ट देवी के आगमन की प्रतीक्षा सभी करते हैं, इसलिए घर को साफ-सुथरा धवल बनाया जाता है। बड़े उल्लास से मिष्ठान्न आदि बनाए और खाए-खिलाये जाते हैं। नये कपड़े पहने जाते हैं। अन्धकार में कहीं देवी इधर-उधर भटक न जाए, और अपने घर में सीधी आ जाए इस दृष्टि से, घर-बाहर सब जगह-जगह दीपकों द्वारा प्रकाश किया जाता है।

आगे चलकर इस दीपावली पर्व के साथ और भी कई प्रसंग जुड़ते गएँ। उनमें कुछ ऐतिहासिक हैं और कुछ पौराणिक एवं काल्पनिक। कई लोक-कथाएँ भी इस पर्व के संबंध में जोड़ दी गई, पर इन सबको, यदि हम एक तरफ छोड़ दें तो यह आध्यात्मिक पर्व दीपावली का त्यौहार बहुत कुछ सात्विक प्रेरणा देने वाला है। इस दृष्टि से जो वैदिक या उपनिषद वाक्य बहुत प्रसिद्ध है, उसको हम सामने रखें एवं हमारी भावना को नित्य-निरन्तर उदात्त बनाते जाएँ तो जीवन में एक नई क्रान्ति आ सकती है। हम प्रत्येक व्यक्ति असत् से सत् की ओर, मृत्यु से अमृतत्व की ओर और अन्धकार से प्रकाश की ओर आगे बढते जाएँ। इन तीनों वाक्यों में भी "**तमसो मा ज्योतिर्गमय**" यह वाक्य बहुत ही महत्वपूर्ण है, और दीपावली पर्व से सम्बन्धित भी है, क्योंकि अज्ञान ही सबसे बड़ा अन्धकार है। ज्ञान के बिना कर्तव्य, अकर्तव्य-का विवेक जाग्रत नहीं होता। अन्धकार में हमारे सारे जीवन-व्यवहार छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, क्योंकि मार्ग स्पष्ट दिखाई नहीं दीखता। अतः भटक जाने और इधर-उधर गिर जाने की अधिक सम्भावना रहती है। इसलिए सूर्य के प्रकाश में हम जितने निश्चित होकर प्रवृत्तियाँ करते हैं, उतनी रात्रि में नहीं कर पाते। अन्धकार में प्रकाश फैलाने के लिए दीपक, मोमबत्ती और टार्च-लाइट और बल्ब जलाने की आवश्यकता हो जाती हैं। उसी तरह हमारे अज्ञान अन्धकार को हटाने या भगाने के लिए ज्ञान की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MiDF

ज्योति जलानी बहुत ही आवश्यक है।

अतः अपने अन्दर के कालुष्य को मिटाना होगा। हमारे भीतर जो बहुत कूड़ा-कचरा जम गया है उसकी सफाई करके, घर की सफाई करते हैं, कचरा बाहर डालते हैं। लिपाई-पुताई से घर को उज्जवल-निर्मल बनाते हैं और दीपकों के द्वारा सर्वत्र प्रकाश फैलाते हैं। उसी तरह अपने भीतर हृदय व मन की मलीनता, बुरी बासनाओं आदि को निकालकर स्वच्छ पवित्र बनाना होगा। तभी सद्-ज्ञान की ज्योति जगाई जा सकेगी। ज्ञान और लक्ष्मी अपने घर में विराजे तभी हमारा जीवन, उच्चस्तर का बनेगा। बाह्य, धनरूपी लक्ष्मी से हमारी बाहरी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है वैसे ही ज्ञान-लक्ष्मी से हमारा आन्तरिक वैभव बढ़ेगा। आन्तरिक गुणों का विकास या प्रकटन होगा। अतः दीपक के प्रतीकरूप हमें ज्ञान की लौ जलानी है, प्रज्वलित करनी है।

❀

❀ 'कंवर की कुण्डलिया' ❀

(१)

सांई तेरे दरबार में, अन्धेर नहीं पर देर है,
आज नहीं तो कल मिले, इतना ही बस फेर है।
इतना ही बस फेर है, मिले सबको सबका हिस्सा,
दौलत का चक्कर हो, चाहे हो कुर्सी का किस्सा।
कह 'कंवर' कविराय, तूं है बड़ा न्यायी
इसीलिए तो करते हैं, सब तेरी ही बड़ाई।

(२)

ईश इस जगत में, सज्जन की है हार,
जिसके हाथ में लाठी हो, सब उसीसे करते प्यार।
उसीसे करते प्यार, कहे सब उसको दादा,
उसके आगे तोड़, सभी दें निज मर्यादा।
कह 'कंवर' कविराय, यह दुनियां मजबूर बिचारी,
जल में रहकर बैर, मगर से पड़ता है भारी।

(३)

हे मेरे बिना सींग के गधे, तुमको मेरा नमन्!
तेरी सेवा में रत है, मेरा तन मन धन,
मेरा तन मन धन, तुम बोझा रहो उठाते,
घर से घाट, घाट से घर तक आते जाते।
कहे 'कवंर' कविराय, रातको जो चाहे सो मौज मनाना,
लेकिन पौ फटने से पहले, वापस घर आ जाना।

(४)

ढोल का छोड़ो विश्वास, यह होता हैं बड़ा मक्कार,
जो पड़े गाल पर थाप, तो, मचा दे हाहाकार।
मचादे हाहाकार, करे पल में लोग इकट्ठे,
पल में लोग इकट्ठे, कर दे इज्जत के बट्टे।
कह 'कंवर' कविराय, दोष नहीं इस नादान का,
इतना प्रभाव तो पड़ता ही है, निज खानदान का।

'कंवर यादव'

आनन्द

हम स्वयं आनन्द की अनुभूति लेने की अपेक्षा दूसरों को यह इत्मीनान दिलाने के लिए अधिक प्रयास करते हैं कि हम आनन्द में हैं।

खिताब और पदविया, पोशाक और गणवेश, दर्जा और मरतबा; इसलिए आकर्षित करते हैं कि वह मनुष्य की प्रदर्शनीयता को तृप्त करते हैं, किन्तु जीवन का आनन्द उनमें नहीं है। एक फ्रांसीसी दार्शनिक ने आनन्द-प्राप्ति में तीन नियम बतलाया, पहला था कार्य-व्यस्त रहना, दूसरा वही, तीसरा भी वही। आनन्द का मूल तो सन्तोष है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तांत्रिक साधना और दीपावली

> सत्यनारायण ओझा
एम०ए०एल०एल०बी०

कार्तिक कृष्णा अमावस्या अर्थात दीपावली की सम्पूर्ण रात्रि को, तंत्रशास्त्रों में यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्धि के लिए सर्वोत्तम बताया है। संपूर्ण रात्रि को चार भागों में विभक्त किया है तथा प्रत्येक भाग एक प्रहर का होता है। रात्रि के प्रथम प्रहर को निशा रात्रि, द्वितीय प्रहर को दारुण रात्रि, तृतीय प्रहर को कालरात्रि तथा चतुर्थ प्रहर को महारात्रि के नाम से अभिहित किया गया है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न पकार है--

(१) निशा रात्रि-(रात्रि का प्रथम प्रहर) इस समय लक्ष्मी पूजा करके श्रीयंत्र की सिद्धि एवं श्रीमंत्र का जाप करना चाहिए। प्रदोष

(२) दारुण रात्रि (रात्रि का द्वितीय प्रहर) इस समय भैरवी साधना-पूजा का विधान है। निशीथ

(३) कालरात्रि (रात्रि का तृतीय प्रहर) इस समय महाकाली की उपासना, पूजा, बलिदान, सावरी मंत्रों का जप एवं शभुनाशार्थ यंत्र सिद्ध करने का विधान है। त्रियामा

(४) महारात्रि (रात्रि का चतुर्थ प्रहर) इस समय त्रिपुर सुन्दरी, चौसठ योगिनी की पूजा कर तथा उनके ६४ प्रकार के मंत्र यंत्रों को जग्रृत कर, सिद्धि प्राप्त करना चाहिए। उषा

धार्मिक कार्यों में दीपक का इतना महत्व है कि यदि आप से भगवान के निमित्त, अधिक सेवा पूजा न निभ सके तो केवल मात्र, श्रद्धाभक्ति पूर्वक दीपक ज़लाकर, भगवत प्रार्थना अवश्य करना चाहिए। यदि मंत्र बोलकर दीपक जलाया जावे तथा ईशोपनिषद के अंतिम १८ वे मंत्र से प्रार्थना करली जावे तो सर्वोत्तम है। यह प्रार्थना केवल पांच मिनट में पूरी हो जाती है जो निम्न प्रकार है--

दीपक जलाने का मंत्र

ॐ अग्निः ज्योतिः ज्योति= अग्नि=स्वाहा।
ॐ सूर्योर्वचोः ज्योतिर्वचः स्वाहा।

श्री ईशोपनिषद का अठारवां मंत्र

ॐ अग्नेय सुपथा राये अस्मान,
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो,
भूयिष्ठां ते नमउक्ति विधेम ॥

अर्थ--हे अग्निसम शक्तिशाली भगवन. हे सर्वशक्तिमान, अब मैं भूमि पर लेटकर बारम्बार आपके चरणों में सादर प्रणाम करता हूँ। हे देव, अपनी प्राप्ति के सुपथ पर, मुझे बढ़ा ले चलिए। मुझे उन सब पापों से मुक्त कीजिए जो मैने पूर्व में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किए हैं, तथा जिन्हें आप जानते हैं, जिससे मेरी प्रगति में कोई बाधा न आए।

तात्पर्य—भगवान की शरण लेकर उनकी अहेतु की कृपा की याचना करने से, भक्त पूर्णस्वरूप साक्षात्कार के मार्ग में आगे बढ सकता है। भगवान को अग्निदेव से संम्बोधित किया है क्योंकि शरणागत जीव के पापों को, अग्निदेव ही भस्म कर सकते हैं।

इस प्रकार सन्तों की साधना का सारा परिवेश, ब्रह्म की ज्योति से ही प्रकाशित होता है। संत नानक ने उस अलौकिक ब्रह्म की आरती में, आकाश को धरती का थाल एवं सूर्य चन्द्र को दीपक बताया है। दीपक की इस महिमा को हृदयंगम करके हमें प्रतिवर्ष दीपावली के पर्व पर जगमगाते दीपों से प्रेरणा ग्रहण कर, हृदय के अंधकार को दूर करते हुए आत्म-साक्षात्कार करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

कृषि पर्व दीपावली

दीपावली का सम्बन्ध भारत की ग्रामीण जनता एवं कृषि संस्कृति से भी है। हमारे देश की अस्सी प्रतिशत जनता का व्यवसाय कृषि है। वर्षा के उपरान्त खरीफ की फसल बाजरा, मक्का एवं ज्वार से किसानों के घर भर जाते हैं। भगवान की कृपा के फलस्वरूप मौसमी वर्षा एवं किसानों के खून पसीने की मेहनत से उत्पन्न अनाज ही किसानों की लक्ष्मी है, इसे पैदा करने में खेत में, हल चलाने वाले बैलों का भी बड़ा महत्व है। अतः सभी किसान दीपावली के दिन अपने पशुधन गाय, बैल, भेड़, बकरी व भैंसों की भी पूजा करते हैं। तथा नए अनाज को प्रथम भगवान को समर्पित करने के लिए तरह-तरह के पकवान, पूए, मालपूये वगैरह बनाकर भगवान को अर्पित कर, सभी मिलने जुलने वालों को भोजन कराते हैं, ताकि वर्ष भर उनके खेत खलिहान अनाज से भरे रहें।

दीपावली एक अत्यन्त पावन पर्व है। यह असत्य पर सत्य की, अहंकार पर प्रेम की, लोभ पर त्याग की और अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। अतः इस त्यौहार का अपना सांस्कृतिक महत्व है। अतः वैदिक काल से ही यह त्यौहार सभी के द्वारा अमूल्य स्मृति के रूप में मनाया जाता है और आगे भी मनाया जाता रहेगा।

दीपावली एक आध्यामिक पर्व

भारतीय धार्मिक चिन्तन में दीपक को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। गीता के छठें अध्याय में योगी की चित्त वृत्ति को दीपक की लौ से तुलना की गई है।

"यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्रस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥
(गीता अ. ६/१९)

इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि योगी अपनी चित्तवृत्ति को निवात (वायु रहित) दीपक की लौ की भांति बनाकर ही परम-स्वरूप का साक्षात्कार कर सकता है। गीता के इस श्लोक की ही भांति ब्रह्मज्ञान प्राप्त योगी की तुलना श्वेताश्वरोपनिषद में भी दीपक के प्रकाश से की गई है। बौद्धों के सहजदान में भी वोधि सत्व को दीपक के समान ज्योतिर्मय माना गया है। निर्गुण सन्तों एवं सूफियों ने भी दीपक को ज्ञान का प्रतीक मानकर अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। नाथ-पन्थी शिवदीन केसरी के मराठी ग्रन्थ का नाम ही "ज्ञान दीपक" है। उसी तरह सूफी कवि शेख नवी की प्रेमगाथा परक ग्रन्थ को भी 'ज्ञान दीपक' नाम से अभिहित किया गया है।

दीपावली—एक आध्यात्मिक पर्व क्रमशः सन्त दरिया साहब का पौराणिक आत्म-चरित्र भी 'ज्ञान दीपक ही है। इस तरह दीपक को ज्ञान का प्रतीक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानने की परम्परा प्रारम्भ से ही लोकप्रिय रही है। भारत के सभी सन्तों ने दीपक की प्रतीकात्मकता को प्रमुख रूप से दो अर्थों में ग्रहण किया है। एक ज्ञान ज्योति के अर्थ में, और दूसरे ब्रह्मज्योति के अर्थ में। परम तत्व को प्राप्त करने के लिए सन्तों ने अपने शरीर को जलाना, दीपक से ही सीखा। दीपक जलता है तभी ज्योति का आविर्भाव होता है। साधक भी जब स्व को तिरोहित कर दीपवत जलता है तभी उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। कबीर ने गुरु कृपा से प्राप्त ज्ञान दीपक को ही सबसे बड़ी उपलब्धि माना है। इस ज्ञान दीपक के बिना, कोई भी सन्त अपने ही हृदय में स्थित, अपने प्रियतम परमेश्वर से नहीं मिल सकता है। ज्ञानदीप की ज्योति ही माया के अन्धकार को दूर कर ब्रह्म के सही स्वरूप के दर्शन कराती है। ज्ञान मार्गियों की भांति ही भक्त कवि तुलसीदास जी ने भी ज्ञानदीप के जलने की प्रक्रियाओं को सांगरूपक के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

ज्ञान ज्योति और ब्रह्म ज्योति के व्यापक रहस्यमय सन्दर्भों में दीपक के प्रतीकात्मक उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि सन्त महात्माओं ने दीपक को एक आदर्श साधना के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया है।

हमारे समस्त धार्मिक कार्यों में सर्वप्रथम दीपक जलाकर भगवान अग्निदेव का आवाहन किया जाता है। वेदों में अग्नि को जातवेदस कहा है। श्रीसूक्त में जातवेदस अग्नि से प्रार्थना की गई है कि, हे जातवेद आप ही देवताओं के देव हैं, लक्ष्मी देवी को बुलाने में आप ही सामर्थ्यवान हैं। जैसा कि श्रीसूक्त के निम्न प्रथम श्लोक से उद्भाषित होता है।

"हिरण्यवर्णा हरिणी सुवर्णरजतस्रस्जाम।
चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मी जातवेदो ममावह ॥1॥

दोहा दीप

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून॥

१. रहीम कहते हैं कि अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि बिना प्रतिष्ठा के संसार का सर्वस्व लाभ, व्यर्थ है। मोती, मनुष्य और चूना या चूर्ण (आटा) बिना पानी (प्रतिष्ठा) के शून्य (बेकार) हो जाता है।

पानी बाढे नाव में, घर में बाढे दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यह सज्जन का काम॥

२. नाव में पानी और घर में दाम (सम्पत्ति) बढ़ने पर उसे दोनों हाथ से उलीचना चाहिए या बाहर निकालना चाहिए या दान देना चाहिए। अर्थात मनुष्य को अपरिग्रही बनना चाहिए।

नर की अरु नल नीर की, गति एकै करि जोय।
जेतो नीचो ह्वै चले, ते तो ऊँचो होय॥

३. नर (मनुष्य) की और नल के पानी की एक ही दशा है। ये जितने ही नीचे (नम्र) होते हैं, उतने ही ऊँचे (प्रतिष्ठित) होते हैं।

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुन तीन।
जैसी संगति कीजिए, तैसो ही फल दीन॥

४. स्वाती नक्षत्र का जल, कदली, सीप और सर्प के मुख में पड़ने पर, भिन्न-भिन्न गुण (क्रमशः कपूर, मोती और विष) ग्रहण कर लेता है। जिसे जैसा साथ मिलता है, वैसा ही गुण ग्रहण करता है अर्थात जैसा संग होता है, वैसा रंग हो जाता है।

जल पय सरिस विकाय, देखहु प्रीति की रीति भलि।
बिलग होत रस जाय, कपट खटाई परत ही॥

५. प्रीति या प्रेम का यह आदर्श सचमुच देखने योग्य है। जल जब दूध में मिलता है, तब वह दूध के मोल बिकने लगता है। दूध उसे मित्र मान अपने जैसा बना लेता है; किन्तु जब उसमें कपट रूपी खटाई मिल जाती है, तब वह फट जाता है। अर्थात कपट से मित्रता नष्ट हो जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MiDF

कालदेव = सूर्य

□ डॉ० अभयदेव शर्मा एम०ए०पी०एच०डी०

सात रश्मियों-रासों वाला हजार अंक्षोंवाला जरा-हीन,प्रभूत रेतः वाला, कालरूप अश्व विश्व, को वहन कर रहा है। कवि, प्राज्ञ, उस पर आरोहण करते हैं। सारे भुवन उस कालाश्व के चक्र हैं। (१) काल :—इस मंत्र से काल की महिमा का आरम्भ होता है। 'काल' शब्द अथर्ववेद का अपना विशिष्ट प्रयोग है। अन्य वेदों में इसका प्रयोग कहीं-कहीं ही मिलता है। काल शब्द में धातु कल है, जिसके दो अर्थ होते हैं, शब्द,और संख्यान, यह धातु क्षेप, और गति अर्थ में भी हैं। काल प्रवाहरूप है। वह सतत वहता रहता है। उसकी गति इतनी तीव्र है कि काल के एक क्षण को भी पकड़ना व पकड़कर रोकना चाहे, तो कोई ऐसा कर नहीं सकता। हम 'वर्तमान काल' शब्दों का उच्चारण करते हैं. पर जिस क्षण को हम 'वर्तमान काल' कह कर परिगृहित करते हैं, शब्दोच्चारण के साथ ही वह क्षण 'भूतकाल' वन चुका होता है। वर्तमान अनुभव में आता है, भाति-सिद्ध है, पर उसकी भौतिक, इन्द्रियग्राह्य सत्ता नहीं है। प्रतिक्षण भविष्य वर्तमान की ओर जा रहा है और वर्तमान भूत वनता जा रहा है। न जाने कव से यही क्रम है और न जाने कभी समाप्त भी होगा या नहीं। रेल, कार आदि द्रुतगामी वाहन पर वैठे हुए मनुष्य को अगल-वगल के पेड़-मकान आदि पीछे की ओर भागते दिखाई देते हैं और तदपेक्षा से वह स्वयं को न चलता हुआ-सा अनुभव करता है। यही स्थिति इस जड़-चेतन जगत् की है। वस्तुतः द्रुत गति से अखिल ब्रह्माण्ड चल रहा है, सतत परिवर्तनशील है; पर प्रतीत ऐसा होता है मानो कुछ भी नहीं बदल रहा। यह सतत परिवर्तन ही काल का स्वरूप है। परिवर्तन गतिशीलता का नाम है। परिवर्तन रूप—'क्षेप' गति ही है। क्षेप-अपेक्ष = गति-अगति। हृदय से निकल कर रक्त सारे शरीर में दौड़ता है, यह क्षेप वा गति है। शरीर में घूम-घामकर वह हृदय में लौट आता है, यह अ-पेक्ष वा अ-गति है। निक्रमण-परायण, आवागमन सर्वत्र प्रकांत है, चाहे चींटी हो वा हाथी, अणु हो वा महत्, जड़ हो वा चेतन। अतः काल = गति (वा क्षेप, वा परिवर्तन), समस्त काल विज्ञान-कालविवेचन में यह सूत्र स्मरण रहना चाहिए। क्रमशः एक के बाद दूसरा क्षण आता-जाता है, यह काल की सूक्ष्मतम पकड़ है। एक के बाद दूसरा वर्ष बीत रहा है, एक के बाद दूसरा युग पलट रहा है, यह काल की स्थूलतम पकड़ है। एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु, प्रातः के बाद दोपहर और फिर सायं, यह सब कालचक्र ही है। पर हमें काल का बोध कैसे होता है ? चित्त किसी कार्य में एकाग्र हो तो एक घण्टा एक क्षण जैसा बीत जाता है। चित्त बेचैन हो तो एक-एक क्षण का बीतना पहाड़ हो जाता हैं। वस्तुतः काल का बोध तब होता है जब कोई परिवर्तन ध्यान में आ जाता है। अभौतिक काल का प्रभाव जब किसी वस्तु वा प्राणी के भौतिक शरीर पर दिखाई पड़ता है तो काल के बीतने का ध्यान आ जाता हैं। काल के पैरों की छाप, प्रत्येक भौतिक पदार्थ पर पड़ रही। पेड़ों के तनों में एक संवत्सर के बीतने पर एक वृत चढ़ता जाता है, जिससे पेड़ का तना मोटा होता जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण काल के रस को ग्रहण कर रहा है। काल का अभिप्राय है वस्तु का उद्भव, स्थिति और विनाश। यह सब परिवर्तन-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चक्र और भौतिक प्रजननचक्र काल के बल का परिणाम है। काल की महिमा से प्रत्येक पदार्थ अपने-अपने कार्य में रत है।

एक मौलिक प्रकृति से यह षड्भावविकारों (१) वाला विकृतिमय जगत् बना है। एक से अनेक करना, यह काल का स्वभाव ही है। काल ही मिलाता है, वही तोड़ता है। अतः काल शब्द का अर्थ हुआ कलाभाव, कलनधर्म। एक ही अनेक कलाएं होकर पुनः वे सब कलाएं एक मौलिक, अखंड कला में गुंथ जाती है। यह जगत षोडशकाल हैं। (२) प्रकृति ही वह मूलभूत उपादन है जिससे जगत् बना है। जगत् प्रकृति का बृंहण है। अतः प्रकृति को 'ब्रह्म' कहा जाता है। उपादान ब्रह्म की अभिव्यक्ति का अन्तिम अव्यक्त बिन्दु है 'भूत' जो क्रमशः पांच है : अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश। इनका भी मौलिक अभिव्यक्ति-बिन्दु, जो स्वयं में अव्यक्ततर है, हैं 'तन्मात्रा' जो प्रत्येक भूत की एक के अनुसार पांच हैं : शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध। शेष चार भूतों का उत्स है आकाश, और आकाश की तन्मात्रा वा विषय वा गुण है शब्द (३)। प्रकृति का अव्यक्त मौलिक स्वरूप 'शब्द ब्रह्म' है; शेष चार इसी के विवर्त हैं। अतः यही काल है। इसी का विशकलन सतत हो रहा है, जिन नाना भावों की एक, दो, तीन, चार आदि संख्याओं से संख्यान—गणना की जाती है। अतः काल शब्द और संख्यान, अर्थ ठीक ही हैं। काल की अभिव्यक्ति प्रकाशांधकार के तारतम्य से हमें हो रही है। एक-एक मंडल के मध्य एक-एक ज्योति रखी हुई है, मंडलांतर्गत सब पिण्ड जिसका परिभ्रमण कर रहे हैं। पिंडों का जो भाग ज्योति के सम्मुख होता है, वहाँ प्रकाश और पिंडों की ओर अन्धकार होता है। ये ही क्रमशः अहोरात्र हैं। पिंडों की कालगणना तथा पिंडों का प्रजननादि-चक्र मध्यवर्ती ज्योति के कारण होता है। यह व्यवस्था इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र है जिसे अपने इस सौर मंडल में हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। अणु से महत् तक, सर्वत्र यही व्यवस्था है। अणु के केन्द्र में भी एक ज्योतिर्बिन्दु है जो अतिभीषण गति से विचाली है, उनके चारों ओर असंख्य तत्त्व चक्कर लगा रहे हैं। अणुओं के संघात से बने भौतिक पदार्थों मे भी यही नियम है। काल की अभिव्यक्ति (गति, क्षेप) क्योंकि ज्योति से, सूर्य से होती है, अपने मंडल से नाना भावों के संख्यान का आधार यह ज्योति वा सूर्य ही है, अतः वेदों ने व्यक्त काल के अपने विवेचन का आधार भी ज्योति वा सूर्य को ही बनाया है। स्थूलरूप में कह सकते हैं कि काल = सूर्य।

(२) अश्व : काल अश्व है। काल पर अश्वत्व का आरोप किया गया है। अश्व लोकप्रसिद्ध पशु है यह अपनी द्रुतगति के लिए तथा तीन पैरों पर खड़े रहने के लिए प्रसिद्ध हैं। काल को अश्व कहने में ये दोनों अभिप्राय दृष्ट हैं। वैसे द्रुतगामी तो हरिण आदि अन्य भी अनेक पशु हैं, पर काल को जिस व्यक्ताव्यक्त विशेषता को वेद, पकड़ना चाहता है वह इसी पशु के रूपक द्वारा स्पष्ट होना सम्भव है। अश्व तीन पैरों पर खड़ा होता है और एक पैर विचाली तथा अधर में लटका रहता है। जैसे अश्व के तीन पैर स्थितमान्, रहते हैं और एक पैर गतिमान् उसी प्रकार अव्यक्त प्रकृति को चतुष्पाद् कल्पित करते हुए कहा जा सकता है कि काल के तीन पाद अव्यक्त हैं; केवल एक पाद सृष्टिरूप में व्यक्त हो रहा है। (१) काल की अभिव्यक्ति तो उसका एक यत्किंचित्, नगण्य-सा अंश है, उसका वृहत्तर बलविधान तो अव्यक्त ही है। इस जगत् में मन, प्राण, वाक् (शब्द भूत) की जितनी माया काम में आई है, प्रकृति के अनंत भंडार में निहित मात्राओं से उसकी कोई तुलना ही नहीं है।

(३) सप्त-रश्मि : सूर्य की अश्वरूप में कल्पना भारतीय ही नहीं, यूनानी आदि पौराणिक आख्यानों तथा काव्य में भी प्रसिद्ध है। इन्द्र के दो हरि (अश्व) माने गए हैं जो उसके रथ को हाँकते हैं। प्रस्तुत मन्त्र में काल को ऐसे अश्व के रूप में कल्पित किया गया है जिस पर कोई सवारी कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

रहा है तथा जिस पर भार लदा हुआ है। इन प्रयोजनों से अश्व को लगाम लगानी होती है। कालास्वरूप सूर्य की सप्त रश्मियां वा लगामें हैं जिनसे संयत हुआ वह अपने व्रत पर अटल है। (२) रश्मियां कालाश्व को सौर मण्डल के कौने-कौने में पहुंचा रही हैं, तथा साथ ही उसके जीवनार्थ रस (सोम, आपः) रूप पोषण भी लेकर जाती हैं। प्रत्येक किरण में सात वर्ण होते है। ये ही वे सात रश्मियां हैं जिन्हें अन्यत्र कालरूप सूर्यरथ के सप्ताश्व (सप्त हरित) भी कहा गया है। कालरूप सूर्य की सप्तरश्मिता के कारण जगत् में सर्वत्र सप्तता विद्यमान है। भारतीय वाङ्मय के अनेक पदार्थ सप्त गिनाए गए हैं, यथा अहोरात्र, अङ्गिरस, आदित्य, आस्य, ऋतु, ऋत्विज, ऋषि, गर्भ, ग्रह, चक्र, छन्द, जिह्वा, तन्तु, दानु, दिशें, देश, धाम, धेनु, नदी. नाडीवृत, नाम, मन्वन्तर, मरुद्गण, माता, मेघ, पद, पर्वत, पशु, पाताल, पुत्र, योनि, रत्न, लोकवाणी, विप्र, व्याहृति, शिर, समिध्, सुपर्ण, स्वर, स्वसा, होता, होम आदि, सप्त संख्या वस्तुतः प्रतीक बन गई है, जगत् और जीवन के आधारभूत सात तत्त्वों की। वे सात तत्व हैं मन (Mind), प्राण–चेतना (energy), पंच-भूत (Matter, gross, mass), घूम फिरकर नाना रूपों में सर्वत्र इन्हीं का नर्तन है। अतः सप्तता की विराट् कल्पना वेदादि वाङ्मय में मिलती है। काल की सप्तरश्मिता से इस मौलिक सप्ततन्तु जीवनविधान को लक्षित करना चाहिए। सप्ततन्तु जगत् और जीवन सप्तरशिम कालाश्व की महिमा है।

(४) सहस्र अक्ष : अक्ष शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, यथा चक्र की धुरी, चक्षु (बुद्धि, नेत्रेन्द्रिय), अक्ष-रत्व। पहिया धुरी पर आधृत होता है। बिना धुरी के जैसे चक्र, चक्र नहीं रहता, वैसे ही कालरूप धुरी के बिना जगत् की सत्ता नहीं रहती। सौरमंडलरूप चक्र का केन्द्र सूर्यरूप कालाश्व है, अक्ष से दर्शन किया जाता है, दर्शन से ज्ञान प्राप्त होता है। अतः अक्ष बुद्धि, प्रज्ञा, विज्ञान वा विवेक का वाचक भी है। (१) कालरूप सूर्यकेन्द्र से ही सौरमंडल में जड़-चेतन, सबको मनोमात्रा, प्राण-मात्रा और भूतमात्रा प्राप्त होती है इन मात्राओं की अनंतता को सहस्र शब्द से लक्षित करना चाहिए। इसी सहस्रता के कारण सूर्य को सरस्रांशु कहा जाता है। कालाश्व सूर्य ही वेदसाहस्री, वाक्सा-हस्री और लोकसाहस्री का प्रभव है काल वा अक्ष अनंत बल का भंडार है। चक्र के सतत चलते रहने पर साधारण अक्ष गर्म हो जाता है, टूट भी जाता है, पर कालाश्व सूर्यरथ की धुरी न गर्म होती है, न टूटती है। (२)

(५) अ-जर : जीर्णता वा जरा 'अपक्षय' नामक पांचवा भाव विकार है, जिसकी परिणति 'नाश' (मृत्यु) में होती है। लोक में देखा जाता है कि जो जन्मता है वह बढ़ता-बढ़ता अंततः जीर्ण होकर नष्ट हो जाता है, पर कालाश्व को बुढ़ापा नहीं आता। काल के विकारों का उद्भव है, पर स्वयं काल अमर है। काल की महिमा सतत एक-सी है, घटती-बढ़ती नहीं। काल मृत्युरूप है, सबको मारता है, पर काल को मौत नहीं आती। कालाश्व यह सूर्य कभी समूल उच्छिन्न नहीं होगा। एक सूर्य के बुझने पर दूसरा सूर्य उपस्थित हो जायेगा। यों प्रवाह से सृष्टि अजर है, सत्य है, मिथ्या नहीं।

(६) भूरि-रेता : कालाश्व की अजरता का कारण उसका प्रभूतवीर्यवान् होना है। रेतस्वी ब्रह्मचारी से मृत्यु दूर रहती है। कालाश्व के भूति-रेतस्त्व का प्रमाण तो उसका यह जगत् है ही। भूरि का अर्थ है महद्भाव। यह महद्भाव सप्तरश्मिता और सहस्राक्षता में भी द्योतित है। रेतः (शुक्र, वीर्य, बीज) वा सोम से अग्नि प्रज्जवलित रहता है। अग्नि को जब तक सोमाहुति मिलती रहती है यज्ञ जारी रहता है। सोमाहुति के विच्छिन्न होते ही सृष्टियज्ञ रुक जाता है। कालाश्व सूर्य अपने सौर मण्डल में जो यज्ञ जारी रखे हुए हैं उसमें प्रकृति का बल उसे सतत प्राप्त हो रहा है। अग्नि, सौम्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीलाकाश में सूर्य एक छोटे-से टिमटिमाते हुए दीपक से अधिक कुछ नहीं है। विशाल समुद्र में एक द्रप्स (बूंद) मात्र यह सूर्य है। अपने चारों ओर वितत अंतरिक्ष से सूर्य अपनी रश्मियों द्वारा जो सोमांश ग्रहण करता है वही उसकी रेतः है। प्रभूत रेतों (बीज) वान् कालाश्व सूर्य में सब व्यक्त विवर्तों के बीज निहित हैं। पूर्ण काल से पूर्ण सृष्टि का उदय काल के रेत की महिमा है। इसी की अनुकृति प्राणियों के शुक्र वा वीर्य में है। कैसा अद्भुत् और महान् आश्चर्य है कि प्राणी के वीर्य के एक बूंद की कणिकामात्र से उत्पन्न होने वाले प्राणी में मेधा, मन, प्राण, शरीर, रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, आकार, परिमाण, सब कुछ सूक्ष्मरूप में भरा हुआ है। बीज में वृक्ष समाया हुआ है,—यह काल का भूरिरेतस्व ही है।

(७) ऐसा यह कालाश्व वहति = भार ढो रहा है, खींच रहा है किसका ? इसका उत्तर मन्त्र में स्पष्ट नहीं, संकेतमात्र में दिया गया है। वहन क्रिया का कर्मभूत पदार्थ इतना गौण है कि उसका स्पष्ट उल्लेख तक करना वेद ने आवश्यक नहीं समझा है, हाथी को चींटी का भार भी कोई भार है जिसका उल्लेख किया जाए ? कालाश्व इस अखिल ब्रह्माण्ड को, जड़-चेतन विश्व को, अपनी पीठ पर लादे ऐसे भागे जा रहा है मानो उस पर कुछ भी भार न हो। काल की यह विश्वरूप कृति-प्रकृति पर अधिष्ठित है। कृति स्वतन्त्र नहीं है, परतन्त्र है। स्वतन्त्र तो प्रकृति है। कृति कालातिक्रमण नहीं कर सकती। परतन्त्रभूत जगत् का, स्वतन्त्र काल को, भार नही है।

(८) पर कुछ ऐसे भी हैं जिनका भार काल को अनुभव होता है और जिनके भार से वह मुक्त होना चाहता है। अतः उस भार को काल पर पटक देता है और इस प्रकार वह भार कालातीत (फलतः दिगतीत और देशातीत भी) हो जाता है। वह भार उनका है जिनके आगे काल—प्रकृति अपने को स्वतन्त्र नहीं, परतन्त्र समझती है। यहां भार स्वतंत्र है, काल को पीड़ा देने वाला है। अतः वेद स्पष्ट निर्देश करता है कि काल की पीठ पर सवारी करने वाले दो प्रकार के भार हैं : कवि, विपश्चित्। कवि मनोलोक में विहार करने वाले, भावनाप्रधान होते हैं, तो विपश्चित् बुद्धि वा विज्ञान के लोक में विहार करने वाले निष्ठा–आस्थाप्रधान होते हैं। कवि में श्रद्धा का प्राधान्य होता है तो विपश्चित् में निष्ठा–आस्था का। कवि ते ऋतु वा स्नेह प्रधान है, तो विपश्चित् में सत्य वा तेज। विपश्चित् चिकित्सान् है, विज्ञानी है, कवि प्रज्ञानी है। एक आग्नेय है, तो दूसरा सौम्य है। एक पुरुष है दूसरा स्त्री है। जगत् की सारी द्वन्दमयता वा द्विप्रकृतिकता अग्नि और सोम के तारतम्य का परिणाम है, प्रत्येक प्राणी में मन और बुद्धि के रूप में कवि और विपश्चित् बैठे हुए हैं, पर इनका सबसे प्रखर प्रकाशन मानव में ही है। मानव का स्वरूप शरीर-प्राण-मन-बुद्धिरूप प्राकृत–वैकारिक भाव से नियंत्रित है, पर उसमें आत्मतत्त्व का वह प्रकाश सविशेष प्रखर है जिसने उसे कवि + विपश्चित् ही नहीं, उससे भी बढ़कर 'मनु' बना दिया है। अतः केवल कवि-विपश्चित् मनु में ही काल के पाशों को तोड़कर कालातीत वा अमर हो जाने का सामर्थ्य है। मनुष्य ही कुरुक्षेत्र–धर्मक्षेत्र है, यही वह कर्मक्षेत्र है जहाँ आत्मा जन्म-मरण के चक्रव्यूह को भेदकर काल के, प्रकृति के आवरण को छिन्न-भिन्न करके परली पार निकल जाती है। ऐसे जो कवि-विपश्चित् है काल उनके भार को महसूस करता है और उन्हें अपनी पीठ से उतार देता है। पर शेष विश्व तो कालपरतंत्र बना उसकी पीठ से उछलकर उतर जाने की सामर्थ्य ही नहीं रखता। कवि-विपश्चित् काल पर, मन बुद्धि आत्मा की लगाम लगाये रहते हैं, वे जब, जैसे चाहते है काल को नचाते है, परिस्थितियों को स्वानुकूल बना लेते है। भौतिक परिवेश उनके आत्मा की प्रगति को रोक नहीं पाते।

(९) पर शेष सारा ब्रह्माण्ड—भुवनानि विश्वा, सारे लोकलोकान्तर उस कालाश्व के चक्र (चंक्रमण स्थान, गति की परिधि) में सिमटे हुए हैं, मानव को यत्न करना है; अपने को कवि-विपश्चित् बनाने का, न कि काल का चक्र बने रहने का। ※

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्यौतिष में नेत्र रोगों के योग

□ ब्रजमोहन पन्त

हमारे नेत्र हमारे शरीर के महत्वपूर्ण अंग है। हमारे ये नेत्र संसार में होने वाली घटनाओं को देखते हैं। नेत्रों के द्वारा हम इस संसार की सुन्दर व मनोहर वस्तुओं, का आनन्द व सुखदायक घटनाओं का अनुभव लेते हैं। नेत्रों के अभाव में संसार सूना हैं, तथा सब कुछ निरर्थक प्रतीत होता है। अन्धा व्यक्ति जीवन के वास्तविक सुख व प्रसन्नता से वंचित रहता है। नेत्रों का पूर्ण स्वस्थ रहना भी अति आवश्यक है। ज्यौतिष, जन्मकुण्डली के माध्यम से नेत्रों की स्थिति बता देता है। जन्म-कुण्डली में द्वितीय स्थान दांये नेत्र व द्वादश स्थान बांये नेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। यदि इन स्थानों के स्वामी दुष्ट स्थान में अथवा दुष्ट ग्रहों से दृष्टि रखते हों तो नेत्रों को पीड़ा होती हैं। मारक स्थान के स्वामी यदि नेत्रों को प्रतिनिधित्व करने वाले स्थानों को ग्रहण करते हैं तो नेत्रों को हानि पहुंचती है। बांये नेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह चन्द्रमा व दांये नेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह सूर्य, यदि पीड़ित हों तो नेत्ररोग का कारण बनता है। ज्यौतिष ग्रन्थों में नेत्र-रोग के कुछ योग हैं जो निम्न हैं—

(१) लग्न तथा आठवें स्थान में शुक्र स्थित हो और उस पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक को नेत्र रोग होता है।

(२) छठे तथा आठवें स्थान में शुक्र हो तो दांया नेत्र रोग, ग्रस्त होता है।

(३) शुक्र के स्थान से ६।८।१२ वें स्थान में २।१२ स्थानों के स्वामी हो तो नेत्र रोग होता है।

(४) चन्द्र और सूर्य दोनों तीसरे स्थान में हों अथवा १।४।७।१० वें स्थान में हों या पाप ग्रह की राशि में गया हुआ मंगल १।४।१० वें स्थान में हो तो जातक नेत्र रोग के बाद अन्धा होता है।

(५) मकर या कुम्भ का सूर्य ७ वें स्थान में हो या शुभ ग्रह ६।८।१२ वें स्थान में हो और क्रूर ग्रह उन्हें देखते हों तो जातक अन्धा होता है।

(६) बारहवें भाव में सूर्य नेत्रों को कमजोर करता है, एसा देखा गया है।

(७) बारहवें भाव में चन्द्रमा नेत्रों को हानि पहुंचाता है।

(८) यदि सिंह लग्न हो और लग्न में सूर्य हो तो नेत्र रोग होता है।

(९) कर्क लग्न में सूर्य नेत्रों को कष्ट पहुंचाता है।

(१०) लग्न में या सातवें स्थान में सूर्य, राहु, मंगल बैठे हो तो नेत्रों को हानि पहुंचती है।

(११) बुध और चन्द्रमा द्वितीय स्थान में स्थित हो तो जातक अंधा होता है।

(१२) सूर्य और चन्द्रमा दोनों बारहवें भाव में हो तो जातक अन्धा होता है।

(१३) दूसरे स्थान का स्वामी लग्नेश के साथ ६।८।१२ वें स्थान में हो तो अन्धत्व योग बनता है।

(१४) शनि व मंगल साथ हो और चन्द्रमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६।८।१२ वे स्थानों में हो तो जातक अंधा होता है।

(१५) लग्नेश ३।६।१।८ राशियों में हो एवं बुध व मंगल उसे देखते हों। लग्नेश तथा अष्टमेश छठे स्थान में हो तो बांया नेत्र प्रभावित होता है।

(१६) यदि दूसरे व बारहवें स्थान के स्वामी लग्न में शुक्र व चन्द्र से युक्त हो तो रतौंधी नाम का नेत्र रोग होता है।

(१७) मंगल या चन्द्रमा लग्न में स्थित हो और शुक्र व गुरु उसे देखते हों या कोई एक ग्रह देखता हो तो जातक काना होता है।

(१८) चन्द्र व मंगल का योग ६।८।१२ वे स्थान में हो तो गिरकर अन्धा होता है। गुरु और चन्द्रमा का योग ६।८।१२ वे स्थान में हो तो ३० वर्ष की आयु में अन्धा होता है।

(१९) यदि बारहवे स्थान में मंगल हो तो बांए नेत्र में तथा दूसरे स्थान में शनि ग्रह हो तो दांए नेत्र में चोट लगती है।

(२०) लग्नेश सूर्य, शुक्र से युक्त होकर ६।८।१२ वे स्थान में हो और नेत्र स्थान २।१२ के स्वामी और लग्नेश दोनों सूर्य व शुक्र से युक्त होकर ६।८।१२ वें स्थान में हो तो जातक जन्मान्ध होता है।

यदि दूसरे स्थान के स्वामी की दशा चलती हो तो नेत्र रोग से ग्रस्त होते हैं। चन्द्रमा की दशा में बांये नेत्र को हानि पहुंचती है तथा सूर्य की दशा में दाहिने नेत्र को हानि पहुंचती है। षष्ठेश की दशा में बांया नेत्र व अष्ठमेश की दशा में दाहिने नेत्र को हानि होती है। लग्न के निर्बल होने से लग्नेश की महादशा व सम्बन्धित ग्रह की अन्तर दशा में यह योग बनता है।

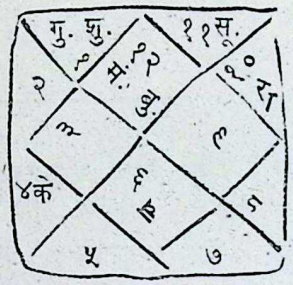

प्रस्तुत कुण्डली में प्रथम नेत्र स्थान का स्वामी द्वितीय स्थान का स्वामी) मंगल लग्न में मारक स्थान के स्वामी नीच बुध के साथ स्थित है। द्वितीय नेत्र स्थान (बारहवां स्थान) में सूर्य षष्ठेश होकर शत्रु राशि में स्थित है। सूर्य बारहवें स्थान में स्थित होकर नेत्रों को कमजोर बनाता है। चन्द्रमा, सातवे स्थान जो मारक स्थान माना जाता जाता है, में स्थित होकर दो मारकेश से दृष्टित है। इस प्रकार दोनों नेत्रों को प्रतिनिधित्व करने वाले ग्रह सूर्य व चन्द्रमा कुप्रभावित हैं। दोनों नेत्र स्थान भी पीड़ित है। यही कारण है कि जातक प्रबल नेत्रों की दुर्बलता से पीड़ित है। इसी प्रकार अन्य जन्म-कुन्डलियों की विवेचना की जा सकती है जिसके द्वारा जन्म-कुण्डलियों में नेत्र रोगों के कारण व तथ्य ज्ञात किए जा सकते हैं।

★ विशेष निवेदन ★

कुछ सम्मानित पाठकों की सेवा में प्रति मास 'ज्यौतीष-मार्तण्ड' के अंक निःशुल्क भेजे जाते हैं और वर्षों से उनका सम्पर्क स्थापित किया जाता है। पूरा विश्वास है कि वे 'ज्यौतिष मार्तण्ड' की स्तरीयता की सराहना करते होंगे और इसे अवश्य पढ़ते-पढ़ाते होंगे। आज की विषम स्थिति देखते हुए हमारे सहृदय सम्मानित पाठक ५००) रु० भेजकर ''ज्यौतीष मार्तण्ड'' के आजीवन ग्राहक बन सकते हैं अथवा ४५)५० रु० वार्षिक शुल्क भेजकर अर्थ-भार को हल्का करने में सहायक बनें, यह हार्दिक निवेदन है।

व्यवस्थापक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवाह में गुण मिलान की वैज्ञानिकता

□ पं० धर्मनारायण तिवारी

भारतीय समाज में सोलह संस्कारों A में विवाह भी एक संस्कार हैं, जिसका प्रभाव जीवन में सर्वाधिक हैं, क्योंकि दो अपरिचितों का जीवन भर के लिए, इस संस्कार के प्रभाव से, गठ-बन्धन कर दिया जाता हैं। प्रणय-सूत्र में बंध कर वे जीवन भर अभिन्न हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में उन दोनों के परस्पर स्वभाव, गुण-धर्म, आचार-विचार में नैसर्गिक समता होना बहुत जरूरी हैं। फिर भारतीय संस्कृति की, जीवन भर साथ देने वाली गरिमा अन्य विदेशीय संस्कृतियों में अनुपलब्ध हैं। यह देन है यहां के उच्च दर्शन की, 'जिय बिनु देह, नदी बिनु वारी' (रामचरित्रमानस) बिना जीव के देह एवं जल विहीन नदी, वैसे ही. हमारे यहां पर पति विहीन स्त्री का स्थान हैं। जीव और देह का प्रकृति प्रेम अति महान हैं। हमारे दर्शन में जीव को पुरुष और देह को स्त्री माना गया हैं। जीवित शरीर प्रकृति और पुरुष का सूक्ष्म मिलन हैं। उसका स्थूल रूप पुरुष और स्त्री का मिलन है। शरीर स्त्री रूप होने से, आत्मा रूप पुरुष से इतना प्रकृतिक स्नेह हैं कि आत्मा के विलग होते ही, उसके विरह में शव हो जाती हैं। एक पल की भी जुदाई उसे स्वीकार नहीं हैं। इसी प्रकार के उच्चकोटी का प्रेम, पति-पत्नि में होने की आकांक्षा की गई हैं।

हमारे देश का यही गौरव, यही आदेश रहा हैं। भगवान श्री राम जब चौदह वर्ष के लिये वन-गमन पर जाने लगे तब उनकी आर्दश पत्नि जानकी जी ने कहां "हे नाथ ? मैंने मन में समझकर देख लिया हैं कि पति के वियोग के समान जगत में कोई दुःख नहीं है, आप के बिना स्वर्ग भी मेरे लिए नरक के समान हैं। स्वजन, परिवार, नाते, स्नेह जहां तक हैं, पति के बिना स्त्री को सभी सूर्य से भी अधिक ताप देने वाले हैं। शरीर, धन, घर, पृथ्वी, नगर और राज्य, पति के बिना स्त्री के लिए सब शोक का समाज हैं। भोग, रोग के समान हैं। गहने भार रूप है और संसार यम-यातना (नरक की पीड़ा) के समान है। हे प्राणनाथ ! आपके बिना जगत में मुझे कही कुछ भी सुखदायी नहीं हैं। हे ! दीनबन्धु ! हे सुन्दर ! हे सुख देने वाले ! हे शील और प्रेम के भण्डार ! यदि चौदह वर्ष तक मुझे अयोध्या में रखते हैं तो जान लीजिये मेरे प्राण नहीं रहेंगे। (राम चरित्र मानस अयोध्या दोहा ६४ से ६६ तक)

यह हैं इस देश की नारी का पति प्रेम, इसी प्रेम परविवाह के बाद निर्वाह की आधार-शिला रखी गई, जो प्राकृतिक हैं, नैसर्गिक हैं। सुख-मय, मधुरमय, चिर स्थाई प्रेमपूर्ण जीवन, इसी प्रकृति, प्रेम की देन है। 'गुण मिलान' के रूप में, इस प्रकृति प्रेम की खोज की है। हमारे दिव्यदर्शी ऋषियों ने जो अति प्राचीन काल से चली आ रही है। भारतीय ज्यौतिष में बतलाया गया हैं कि अमुख

A (१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकर्म (६) निष्क्रमण (७) मेन्य अन्नप्राशन (८) चौड़ (९) उपनयन (१० से १३ तक) चारों वेदों का आरम्भ (१४) समावर्तन (स्नान) (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि कर्म।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र योग, ग्रह और राशि के प्रभाव से उत्पन्न नारी का अमुक नक्षत्र ग्रह और राशि के प्रभाव से उत्पन्न पुरुष के साथ सम्बन्ध करना हित कर हैं। कल्याण-कारी हैं, सुख की अभिवृद्धि करने वाला है क्योंकि दोनों के स्वभाव गुणों में नैसर्गिक समता नैसर्गिक प्रेम, ग्रह स्वभाव शामक सामंजस्य उत्पन्न करने वाले है। विवाह की भारतीय विचारधारा मात्र शारीरिक भोग पर भौतिकता पर आधारित न होकर उसका लक्ष्य, उद्देश्य बहुत ऊंचा है। इस देश में पति-पत्नि के प्रेम की परीक्षा दुःख से ली जाती है।

'धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखि अहि चारी॥'
[रामचरित्र मानस]

जबकि अन्य देशीय संस्कृतियों इसके अपवाद हैं। भारतीय दर्शन मोक्षप्रद और अन्य देशीय संस्कृतियां भोग प्रद है। इसीलिए यहां पर जीवन भर शाथ पति पत्नि निर्वाह लेते हैं। इसी देश में पति ही मोक्ष देने वाला कहा गया। पत्नियों का आदर्श ही पति सेवा है :—

'मातु पिता भ्राता हितकारी।
मितप्रद सब सुनु राजकुमारी॥'
[रामचरित्र मानस अरण्य काण्ड]

हे राजकुमारी ? सुनिये माता-पिता भाई सभी हित करने वाले है। परन्तु ये सब एक सीमा तक ही (सुख) देने वाले है। परन्तु हे जानकी पति तो (मोक्ष्यरूप) असीम (सुख) देने वाला है। वह स्त्री अधम है जी ऐसे पति की सेवा नहीं करती। यह है पति की आदर्श इच्छा—

पत्नि मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणी दुर्ग संसार सागस्य कुलोद भवाम्॥'

यही तो आदर्श है जो जीवन में प्रेम रंग अंकित करता हैं। लेकिन 'प्रेम' जैसे विशुद्ध आत्म तत्व का संकीर्ण अर्थ में प्रयुक्त अब हो रहा हैं प्रेम वासना बन गया तो युवा नर नारियों के बीच प्रेम के नाम पर वासनात्मक गतिविधियों की ही वृद्धि हुई है। प्रेम के नाम पर वे भ्रमित हो रहे है, विशुद्ध प्रेम तो कामशून्य हो जाता हैं। स्वामी रामकृष्ण परमहंस अजीवन ब्रह्मचारी रहे, उनकी धर्मपत्नि मां शारदा के साथ जीवन पर्यन्त अहर्निश प्रेम मधुर्य में डूबे हुए उनके सम्बन्ध बने रहें। वासनात्मक प्रेम कहे जाने वाले भ्रमात्मक तत्व में सड़न उत्पन्न कर सकता हैं। वस्तुतः सच्चा प्रेम तो कभी भी असफल नहीं होता, क्योंकि वह तो इन्द्रिय सीमा से हमेशा अलिप्त होता है। इसीलिए संतोष और दिव्य आनन्द का कारण बनता है। जो प्रेम सम्बन्ध भोगात्मक प्रवृत्ति वाले होते है उनका आधार ही शारीरिक आकर्षण होता है। किशोरवस्था में लड़के-लड़कियों के बीच स्वाभाविक आकर्षण होता है इसीलिए उनके प्रेम का विकर्षण होते भी देर नहीं लगती है।

'काम' एक जोश है, उस जोश के वशीभूत को प्रेम जैसे पवित्र शब्द का अर्थ यौनाचार से लगाकर उसकी गरिमा को संकीण करना न्याय-संगत नहीं मालूम होता है। अर्थ का अनर्थ होने से ही अतृप्ति और अशाँति उत्पन्न हो रही है, जो विचारणीय है। यौनतरंगों में भ्रमित अविवाहित नर नारियों के बीच जो जोश उमंगे भरता है, उसका परिणामप्रेम विवाह के रूप में परिणित हो जाता है। क्योंकि जोश को होश कहां ? जोशात्मक प्रेम कुछ ही समय में जब होश में आता है, तो तलाक में परिवर्तित हो जाता है। तलाक के मूलभूत कारणों में मात्र आपसी समाजस्यता का न होना होता है। विपरीत विचारधारा, विपरीत स्वभाव गुणों का होना है जिसे वे आनन्द कहते थे, उसकी कलाई छुटने के बाद ज्ञात होता हैं कि वह मात्र भ्रगतृष्णा है, जो अब तक प्रेम था वह अब तलाक हो गया।

जीवन जीने के लिये जाने, कितनी ही बातों का आपसी ताल मेल होना जरूरी हैं यही कारण है कि समान आचार-विचार वाले वर-कन्या के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभाव में हुये विवाह सुखमय नहीं हो पाते, फिर स्थिर कैसे हो पायेगें ? जैसे ही एक दूसरे के विपरीतात्मक गुण भेद प्रगट हुए कि ऊब, नफरत, निराश वैचारिक संघर्ष तथा आपसी टकराहट उनके शारीरिक भोग की आकांक्षा से निर्मिल दाम्पत्य जीवन-रूपी महल को गिरा देता हैं। जीवन नौका संघर्ष रूपी भवरों के बीच फसकर जानेकहा अपना असितित्व खो बैठे, नहीं कहा जा सकेगा। जोश भोगात्मक प्रेम हैं, वही पर तलाक होशात्मक एक कदम है। मानव जीवन का इन्हीं विसंगतियों को दूर करने के लिए तत्वदर्शी महार्षियों ने समाज–कल्याण के लिए संसार के नर-नारियों के उपकारके लिए, नैसर्गिक प्रेम को प्रदर्शित करने वाली गुण-मिलान पद्धति की खोज की, अविष्कार किया। गुण-मिलान के आधार-भूत क्या हो सकते हैं ? इसका शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक बोध में अल्पज्ञान,आप लोगों को कराने का प्रयास करता हूं मैं यहां पर यह नहीं कह रहा हूं, कि जो कुछ भी मैं कहूं आप उस पर विश्वास कर लें। मैं तो यहीं चाहता हूं कि आप उस पर उदार हृदय से विचार करें और जनभ्रातियों के निवारण हेतु स्वयं प्रयास करें जिससे हमारे पूर्वाजों का खरा ज्ञान-मात्र भारतीय संस्कृति का गढ़ा हुआ खजाना न होकर समस्त संसार वासियों के कल्याणार्थ प्रयोजन हो।

गुणों की उत्पत्तिः—इस सम्बन्ध में गीता कहती है :—

'सत्त्वम् रजा तमः इति गुणः प्रकृति संभवाः।'
(गीता १४/५)

सत्व, रज, तम ऐसे तीनों गुण प्रकृति द्वारा उत्पन्न हुए। यह गुण, प्रकृति और पुरुष के संयोग का परिणाम हैं। पुरुष चेतन हैं, प्रकृति जड़ हैं, इनके परस्पर संयोग से स्थावर जंङ्गम वस्तु उत्पन्न होती हैं।

'यावत संजायते किंचित सत्त्वम् स्थावर जङ्गमम्।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ संयोगात तत् विद्धि भरतर्षम् ॥'
(गीता १३/२६)

जड़ एवं चेतन दोनों विभिन्न गुणों के कारण पुरुष के अमलांश की अधिकता वाला भाग स्वभावतः 'सत्वगुण' प्रकृति के मलिनांश की अधिकता वाला भाग 'तमोगुण' तथा दोनों सत्व एवं तम समान रहते हैं, वह 'रजोगुण' कहा जाता हैं। जैसे दाल एवं चावल के संयोग से तीसरी वस्तु खिचड़ी उत्पन्न होती हैं, उसी प्रकार यह प्रकृति और पुरुष के मेल से प्रकृति त्रैगुणात्मक रूप हो गई। इन तीन गुणों से पंच-महाभूत की उत्पत्ति हुई, गीता कहती है कि–

'मम योनिः महत् ब्रह्म, तस्मिन गर्भम दधामि अहम्।
संभवः सर्वभूतानाम् ततः भवति भारत्।"
(गीता १४/३)

हे अर्जुन मेरी महत ब्रह्मरूपी प्रकृति अर्थात त्रिगुणमयी माया सम्पूर्ण भूतों की योनि हैं अर्थात गर्भाधान का स्थान है और मैं उस योनि में चेतन रूपी बीज को स्थापन करता हूं, उस जड़ और चेतन के संयोग से सब भूतों की उत्पत्ति होती हैं। मानव शरीर पंचभूतों का संयोग हैं—

'छिति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंच रचित यह अधम शरीरा॥'
(मानस)

शुद्ध सत्त्व–आकाश, सत्व + रज का सम्मिश्रण-वायु, शुद्ध रज–अग्नि, रज+तम–जल, तम्–पृथ्वी, इन तीनों गुणों से पंच महाभूत की उत्पत्ति उपर्समतानुसार ही हैं। इन प्रकृति श्रयगुण का वैद्यम्य ही सृष्टि हैं और उक्त तीनों गुणों की साम्यावस्था का नाम ही प्रलय हैं।

एक विशिष्ट समय में, ग्रहों के भ्रमण से विशेष प्रतिक्रिया होती हैं। अनेक प्रकार के अति संवेदनशील तत्व बनते बिगड़ते हैं। एक क्षण पहले जो जीवित था अब नहीं रहा। ऐसी अनेक बातें जो पहले थी अब नहीं हैं, जो अब हैं पहले नहीं थी। प्रतिक्षण अति सूक्ष्म परिवर्तन यहां होते ही रहते हैं। इसका कारण है चुम्बकीय शक्ति जो मानव में जैव विद्युत, चुम्वकीय शक्ति का विज्ञान ने उल्लेख किया। जिसका सीधा सम्बन्ध ग्रह एवं नक्षत्रों से है, अन्तरिक्ष में ग्रह नक्षत्रों के भ्रमण से वह सीधे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रभावित होकर मानव में क्रियाशील बनी रहती हैं। उसी का अच्छा या बुरा प्रभाव जीवन में समय-२ पर देखने में आता हैं। जन्म के समय प्रकृति के इन सूक्ष्म प्रभावी गुणों को अध्ययन के लिए संपूर्ण आकाश को १२ राशियों में विभक्त किया गया, और उन राशियोंका निर्माण नक्षत्रों से किया गया है। नक्षत्र विभिन्न गुणों के प्रतीक हैं। इसीलिए मन का कारक चन्द्र जब इन नक्षत्रों पर भ्रमण करता हैं, तब उनके भ्रमण से उत्पन्न होकर आने वाली सूक्ष्म राशियां अपने साथ विभिन्न गुणों का खजाना लाकर मानव मन में बीजरूप से प्रतिष्ठ करा देती हैं। जिसका विकास आयु के साथ-साथ होता रहता हैं। अंतरिक्ष उपग्रह से प्राप्त हो रही, जानकारी भी इसी बात को पुष्ट कर रही हैं। जिसके अनुसार ग्रह नक्षत्रों से निरन्तर अनन्त प्रकार की किरणें पृथ्वी पर आती रहती है। जो समस्त जड़-चेतन को प्रभावित करती रहती है।

१२ राशियों को चार वर्णों में विभक्त किया गया हैं। वर्ण विभाजन का आधार ये तीन गुण ही है। अतः नक्षत्र एवं चन्द्र संयोग से एक-एक राशि के तीन-तीन गुण के गणनानुसार बारह राशि के १२×३ = ३६ गुण उत्पन्न हुए।

एक नक्षत्र को चार चरणों में विभक्त किया गया हैं। उनमें पाये जाने वाले स्वभाव गुणों के आधार पर किया गया हैं, तथा सजातीय वर्ण के अनुसार राशि का निर्माण किया गया। एक राशि में नौ चरण कहे गये। जैसे—मेष राशि, अश्वनी, भरणी, के चार चरण एवं कृतिका का एक चरण जिसका वर्ण क्षत्रिय हैं जो सत्व एवं रज का मिश्रण हैं।

इस प्रकार एक राशि नौ चरण से निर्मित हैं। एवं एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। इसीलिए नक्षत्र के ४ एवं एक राशि के नौ चरण ४×९ = ३६ गुण कहें गये हैं।

वर्णों के विभाजन का मुख्य आधार गुण ही हैं। शुद्धतत्त्वमय ब्रह्मण सत्त्व + रज = क्षत्रिय, शुद्ध, रज = वैश्य, तम + रज = शूद्र। शास्त्र वचन—

'चत्वारो वर्णा ब्रह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्राः'

विप्र वर्ण के लिए रामचरित मानस में नौ गुण कहा गया—'नव गुण परम पुनीत तुम्हारे' विप्र वर्ण की राशि कर्क, वृश्चिक, मीन, सभी के नव चरण होते हैं। नक्षत्र के एक चरण को एक गुण माना गया। इसीलिए अन्य वर्ण राशियों के भी नौ-नौ चरण है। जैसे विप्र वर्ण के भी नौ गुण कहे गये शेष वर्ण के नौ गुण संमत है। प्रत्येक वर्ण की राशी के नौ-नौ चरण याने नौ गुण का ही सूचक है। इस सम्बन्ध में श्री व्रजेश कवि बानप्रस्थ जो पुराण कहने हमारे निवास ग्राम के समीप आये थे, उनसे बात-चीत के दौरान सभी वर्णों के नौ-नौ गुणों से सहमत हुये एवं उन्होंने गुणों की तालिका भी दी जो निम्नानुसार प्रस्तुत है—

(१) ब्रह्मण (१) शम (२) दम (३) तप (४) शौच (५) क्षमा (६) सरलता (७) ज्ञान (८) विज्ञान (९) आस्तिकता।

(२) क्षत्रिय—(१) शौर्य (२) तेज (३) धृति (४) चतुरता (५) युद्ध में अडिगता (६) दान (७) स्वामी स्वारूप स्वार्थ हीनता (८) प्रजा पालन (९) शास्त्र समर्थक।

(३) वैश्य—(१) कृषि (२) गोपालन (३) क्रय-विक्रय (४) सत्य व्यवहार (५) अर्थ संग्रह (६) समय पर उचित वितरण (७) सहन शीलता (८) संगठन स्थिति (९) स्वादेश भक्ति।

(४) शूद्र के—(१) सेवा भाव (२) प्रसन्नता (३) छलहीन (४) स्वावलम्बी (५) संतोषी (६) चपलता (७) सावधान हृदय (८) मर्यादा पालन (९) भक्ति-प्रधान। इस प्रकार चार वर्ण के ९ गुण, कुल ९×४ = ३६ गुण कहे गए।

जो परस्पर एक दूसरे के समान हो वे गुण, जो असमान हो वे दोष, रामचरित–मानस में कहा गया हैं कि 'सुनहु तात माया कृत, गुण अरु दोष अनेक।' इस प्रकार गुण दोष अनेक कहे गए हैं। जिनकी सीमा ३६ हैं, क्योंकि विश्व की एक परिधि हैं, जहां हमारी इच्छायें भाव सम्वेदनायें विचारणायें एवं गतिविधियां सीमित हैं। वर्षा, शीत, ग्रीष्म ऋतुयें क्रमशः आती जाती है। १२ माह की परिधि पार कर पुनः माह की गणना एक से आरम्भ हो जाती हैं। इसी प्रकार ३६ गुण ही गुणों की एक परिधि हैं जहां वे सीमित हैं। क्रमशः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

★ महिला और अंग लक्षण ★

□ पं० शान्ता प्रसाद पाराशर, एम. ए.

जन्म-कुण्डली का अवलोकन करने से पूर्व जातक के बाहरी अंग प्रत्यंगों के अवलोकन से उसके स्वाभावादि का ज्ञान किया जाना लाभप्रद होता है, जिससे वैवाहिक अवसर पर तथा व्यावहारिक जीवन में बड़ी सहायता मिलती है। प्रस्तुत लेख में हम महिलाओं के शारीरिक लक्षणों पर प्रकाश डाल रहे हैं—

(१) मस्तक—जिस स्त्री का मस्तक गज कुंभ सदृश उन्नत और गोल हो, वे सुख भोगने वाली होती है। विशाल लम्बा, टेढ़ा मस्तक वाली स्त्री दुःख भोगने वाली होती है।

(२) ललाट—जिस स्त्री का भाल-नसों से रहित, रोमहीन अर्द्ध-चन्द्राकार तथा लम्बाई में तीन अंगुल हो, वे पति और पुत्रादि का सुख भोगने वाली होती है। अधिक लम्बा कपाल रोम युक्त हो, तो दुःखप्रद होता है।

(३) मुख—स्त्रियों का मुख गोल, पुष्ट, सुगन्ध युक्त, स्निग्ध सम और मनोहर होवे, तो सौभाग्य सूचक होता है।

(४) अधर—लाल, चिक्कन, वर्तुलाकार, बीच में रेखा से विभक्त तथा सुन्दर हो, वह रानी होती है। कृश, रूखा लम्बा, फटा हुआ, श्यामल तथा स्थूल अधर, वैधव्य तथा दुःखप्रद होता है।

(५) कपोल—स्त्रियों के गाल उठे हुए, पुष्ठ उन्नत शुभप्रद होते हैं। कृश, रोमयुक्त, कठोर तथा नीचे की ओर धंसे अशुभ होते हैं।

(६) दन्त—स्त्री के दांत चिकने, दूधिया संख्या में ३२ (ऊपर नीचे बराबर) थोड़े ऊंचे हों, तो शुभप्रद होते हैं। यदि नीचे में अधिक संख्या हो, पीले, काले, लम्बे, पंक्ति में दो-दो दांत तथा अलग-अलग अशुभ होते हैं।

(७) जिह्वा—कोमल और लाल वर्ण की जिव्हा शुभ होती है। अग्रभाग में विस्तृत मध्य में संकुचित हो तो कपटकर होती है, सफेद हो तो पानी में मरण करने वाली होती है। श्यामल हो तो कलहकारिणी, मोटी हो तो दरिद्रा, लम्बी हो तो अभक्ष्य खाने वाली, बड़ी और चौड़ी हो तो स्त्री अधिक आलसी होती है।

(८) हास्य—हंसते में दांत दिखाई न दें और जरा-सा कपोल प्रफुल्ल दीख पड़े तो शुभप्रद होता है। इसके विपरीत हंसते समय यदि आंखें बन्द हो जाय, कंधे फड़क उठे, मुंह बार-बार कांपे तो अशुभ है। जिस स्त्री के हंसते समय गाल में गढ़े पड़ जाय तो वह भ्रष्ट होती है।

(९) नेत्र—दूधिया, निर्मल और अन्त में ललाई लिए हुए तथा बीच में पुतली काली हो और बाहरी किनारे कान के पास तक लगे हों, वह अत्यन्त शुभप्रद हैं। मधु समान पिंगल नेत्र वाली स्त्री सुख और सौभाग्यवती होती है। गोल आंखों वाली कुलटा होती है। यदि दोनों नेत्र स्पष्ट पीले रंग के हों, तो वह बहुत कामुक होती है। बड़े-बड़े नेत्र वाली स्त्री सहनशील, मितभाषी और मितभोगी होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१०) नासिका—नाक का आगे का भाग लाल या संकुचित होने पर विधवा, चपटी होने पर दासी, बहुत बड़ी या बहुत छोटी नासिका होने पर झगड़ालू होती है।

(११) स्तन—स्त्रियों के स्तन समान, पुष्ट, गोल तथा सुदृढ़ शुभप्रद होते हैं तथा अग्रभाग स्थूल निर्मांस तथा अलग-अलग स्थित शुभप्रद नहीं होते। दक्षिण स्तन ऊंचा होने पर पुत्र को जन्म देने वाली और वाम स्तन ऊंचा होने पर कन्या संतान वाली होती है।

(१२) ग्रीवा—जो ग्रीवा तीन रेखाओं से अंकित, हड्डियां दिखाई न दें शुभ होती है। बहुत मांसल, चपटी, लम्बी ग्रीवा अशुभ समझी जाती है। जिस स्त्री की ग्रीवा मोटी हो तो विधवा, टेढ़ी हो तो दासी, चपटी हो तो बांझ और काफी मोटी हो तो वह संतान रहित होती है।

(१३) भुजाएं—स्त्रियों के भुज निर्लोभ, शिराओं से रहित, पुष्ट तथा सीधी शुभप्रद। रोमों से युक्त भुजावाली विधवा होती है। छोटी भुजाओं वाली अभागिनी होती है।

(१४) करतल रेखाएं—करतल में स्पष्ट, लाल, गोल, चिकनी पूर्ण और गहरी रेखा सौभाग्यप्रद होती है। करतल में मत्स्य का चिन्ह हो तो सुभगा, स्वास्तिक होने पर धनी और कमल का चिन्ह हो तो राजमहिषी होती है। यदि वामहस्त में तराजू सदृश रेखा हो, तो उसका पति कुशल व्यापारी होता है। अंगूठे के मूल से कनिष्ठ पर्यन्त रेखा गई हो तो स्त्री विधवा हो जाती है। मध्यमा स्थित रेखा कटी हो तो व्यभिचारिणी तथा तर्जनी स्थित रेखा टूटी हो, तो विधवा होती है।

(१५) कटि—स्त्री की कमर यदि प्रमाण में २८ अंगुल हो और ऊंचे नितम्ब वाली हो, तो वह सुख सौभाग्यप्रद होती है। टेढ़ी, चपटी, लम्बी, मांस रहित छोटी तथा रोम सहित कटि दुःख और वैधव्य की सूचक होती है।

(१६) अरू—जिन स्त्रियों की जांघे नस-रहित, गोल, कोमल, चिकनी और निर्लोभ होती हैं वे राजरानी होती हैं। रोमयुक्त स्त्री विधवा हो जाती है।

(१७) पैर का अंगूठा—पुष्ट, गोल, उन्नत सौभाग्य सूचक और चिपटा, अतिछोटा और टेढ़ा अशुभ होता है। यदि स्त्री के पैर का अंगूठा विशेष चौड़ा हो, तो विधवा होने की बहुत संभावना होती है।

(१८) पैर की अंगुलियां—कोमल, घनी, गोल और बड़ी तथा ऊंची शुभद होती है। लम्बी अंगुली वाली कुलटा, पतली अंगुली वाली निर्धन, छोटी अंगुली वाली अल्पायु, चपटी अंगुली वाली दासी और टेढ़ी अंगुली वाली सदैव अपने पति को धोखे में रखने वाली होती है। अलग-अलग अंगुली होने पर दरिद्रता तथा जिस स्त्री के चलने पर मार्ग में धूल उड़ती हो, वह व्यभिचारिणी होती है। जिसकी कनिष्ठा, मध्यमा और अनामिका अंगुली भूमि को स्पर्श न करे, वह विधवा होती है। यदि पैर की तर्जनी अंगुली अंगूठे से बड़ी हो तो कुमारी अवस्था में ही संभोग सुख प्राप्त कर लेती है। कनिष्ठा अंगुली का भूमि को स्पर्श न करना वैधव्य का द्योतक है। स्त्री के पैर की पीठ ऊंची हो, तो वह राजकीय अधिकारी की पत्नी होती है।

स्त्रियों के हृदय में तिलादि चिन्ह सुख और सौभाग्यवर्धक होते है। स्त्री के दाहिने स्तन पर लाल तिल सुख सौभाग्य और अनेक संततिप्रद होता है, जबकि बांए स्तन पर लाल तिल होने पर एक पुत्र को जन्म देने पर विधवा हो जाती है। नाक के अग्रभाग में लाल मस्से का चिन्ह राजमहिषी होने का लक्षण है। यदि नासिका के अग्रभाग में काला तिल हो तो पति को अत्यन्त अशुभ होता है। जिस स्त्री के भाल में त्रिशूल का चिन्ह हो, वह राजमहिषी होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हथेली पर विभिन्न पर्वत

★ ओंकारलाल शर्मा 'प्रमद' प्राचार्य

मनुष्य की हस्तरेखाओं, पर्वतों की स्थिति, पर्वतों पर विभिन्न चिन्हों से मनुष्य के व्यक्तित्व, सफलता-असफलता, जीवन निर्वाह एवं स्वास्थ्य, रोग एवं निदान के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। हस्तरेखा विदों ने सात प्रकार के हाथ बतलाये हैं जैसे सामान्य हाथ, वर्गाकार हाथ, चपटाकार, दार्शनिक हाथ, नुकीला हाथ, मनोवैज्ञानिक हाथ और मिश्रित हाथ। सामान्य हाथ वाले प्रायः हर कार्य में शिथिल, उदासीन एवं आलसी होते हैं, इनमें विशेष मानसिक शक्ति नहीं होती। वर्गाकार हाथ वाले सतर्क, नियमानुसार कार्य करने वाले, कर्त्तव्य निष्ठ और कानून के पाबन्द होते हैं। चिमटाकार हाथ वाले क्रियाशील एवं मांगलिक उद्भावनाओं के केन्द्र होते हैं। दार्शनिक-हाथ वाले उत्तम विश्लेषक एवं तार्किक होते हैं। नुकीले हाथ कलाकारों के होते हैं जो ललित कला. संगीत रंगमंच आदि कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं। मिश्रित हाथ वाले व्यक्ति कई गुणों से विभूषित बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं। जिन व्यक्तियों की हथेलियों में गुरु, सूर्य और शुक्र के पर्वत पुष्ठ, उठे हुए, संतुलित और शुभ चिन्हों से युक्त होते हैं उनका स्वास्थ्य उत्तम, प्रसन्नचित एवं बुराई से दूर रहते हैं। शनि एवं बुध पर्वत जिनका संतुलित नहीं होता या अधिक उठा हुआ दूषित चिन्हों से युक्त होता है वे आसानी से मर्यादा का उलघंन कर जाते हैं एवं बुराई की ओर अग्रसर हो जाते हैं। जिन व्यक्तियों का मंगल पर्वत (स्वच्छ एवं उच्च) अच्छा होता है वे तेजस्वी होते हैं मंगल पर्वत दूषित होने पर वे प्रायः हिंसक हो जाते हैं, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि मंगल प्रधान व्यक्ति बुरा ही हो। मंगल साहस और वीरता का प्रतीक भी है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति काल्पनिक, रूखे, अशान्त, अपनी धुन में मस्त रहने वाले स्वार्थी प्रवृति के होते हैं। गुरु-प्रधान व्यक्ति महत्वाकांक्षी नेतृत्वप्रिय, धार्मिक, स्वाभिमानी, आत्म निर्भर होते हैं। ये विपरीत लिंग की ओर विशेष आकर्षित होते हैं। शांति के पुजारी, परम्परावादी, सत्य और स्वतन्त्रता के रक्षक, सम्मान के इच्छुक, प्रकृति प्रेमी और ईमानदार होते हैं। पौष्टिक आहार एवं फलों के विशेष शौकिन होते हैं। कभी-कभी मदिरा एवं धूम्रपान के शौकिन भी देखे गए हैं इनको अधिक पीने-खाने से स्वास्थ्य खराब होने का खतरा रहता है। शनि-प्रधान व्यक्ति मानसिक दृष्टि से निर्बल, उदासीन, प्रेम के स्थान पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष से प्रभावित। इनको वायु विकार विशेष रूप से होता है। बुध-प्रधान व्यक्ति मानसिक दृष्टि से चालाक, चतुर और चुस्त होते हैं। यदि बुध पर्वत दूषित हो तो व्यक्ति अब्बल नम्बर का तस्कर, धोखेबाज, चालबाज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और कालाधन जोड़ने वाला होता है। यदि बुध पर्वत उन्नत एवं शुभ चिन्हों से युक्त हो तो डाक्टर, इंजीनियर और सफल शिक्षक बनाता है। सूर्य-प्रधान व्यक्ति प्रतिभाशाली होता है। वह प्रेम, सौन्दर्य, कला, रंग, रूप का विशेष शौकीन होता है। उत्तम सूर्य पर्वत, अन्तर्ज्ञान की रेखा रखने वाला व्यक्ति महान अन्तर्ज्ञानी होता है। अनुसंधान में विशेष रुचि, प्रतिमूर्तिकार तथा पुरानी चीजों को नये ढांचे में ढालने वाला बिना अध्ययन के ही अन्तर्ज्ञान से सीखने वाला, गूढ़ विषयों एवं रहस्य विज्ञान में दक्ष होता है। इनकी मित्रता प्रायः सीमित होती है। विश्व यात्रा का शौकीन, ईमानदार, स्वयं के दोषों को जानने वाला, निष्पक्ष और प्रायः अपनी प्रशंसा के पुल बांधने वाला भी होता है। इनका वैवाहिक जीवन प्रायः सुखद नहीं होता। इनको हृदय रोग का खतरा रहता है। ये सिद्धान्तों में मानवतावादी होते हैं। इनकी जीवन संगनी प्रायः इनसे कम पढ़ी-लिखी और विशेष सहायक सिद्ध नहीं होती। सूर्य पर्वत विकृत होने पर या अशुभ चिन्हों के होने पर नेत्र ज्योति कम होने का या अंधे होने का खतरा रहता है। सूर्य पर्वत पर आड़ी रेखाएं पितृ सुख से वंचित करती हैं। मंगल प्रधान व्यक्ति सबसे अधिक खाने-पीने वाला होता है। खेलों का शौकीन होता है। युद्ध और संघर्ष की कहानियां पढ़ता है। वीर एवं रौद्र रस उसके प्रिय होते हैं। कद में छोटा चेहरा लाल, आंखें लाल, चमड़ी पर धब्बे, टेढ़ा मुंह लम्बे कान, प्रेम में असफल होने पर हत्या तक कर देता है। मंगलीय व्यक्ति को शुक्र प्रधान नारियां प्रसन्न करती हैं। वह सौन्दर्य और कला का का प्रशंसक भी होता है। रक्त चाप, आंतों की गड़बड़ी, गले और श्वास की बिमारियों से ग्रसित होता है।

चन्द्र प्रधान व्यक्ति लम्बा होता है, बड़े पैर होते हैं। बांहे सुदृढ़ नहीं होती, भूख न लगना, खून की कमी, निर्बल हृदय, किडनी रोग आदि होते हैं। दांत बड़े, लम्बे और अव्यवस्थित होते हैं उंगलियां छोटी और नुकीली होती हैं। चित्त में अस्थिरता एवं यात्रा का विशेष शौकीन होता है। संगीत, एकान्त, प्रकृति का विशेष प्रेमी अतएव रूखे एवं स्वार्थी हो जाते हैं। अत्यधिक कल्पना शक्ति से प्रायः अस्वस्थ रहते हैं जीवन में कभी संतुष्ट नहीं होते। चन्द्र पर्वत पर आड़ी रेखाएं मातृ सुख में कमी करती हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की हथेली पर पर्वतों का विशेष महत्व है। यदि शुक्र सौन्दर्य प्रिय बनाता है तो गुरु महत्वाकांक्षी, शनि विद्वान एवं करुण हृदय, बुध विद्वान एवं चालाक, चन्द्रमा काल्पनिक, सूर्य दूरदर्शी, मंगल साहसी बनाता है। अतएव सभी ग्रहों में संतुलन एवं सामंजस्य होना चाहिए।

ज्यौतिष

जीवन के किसी भी क्षेत्र सम्बन्धी समस्या के समाधान हेतु, जन्म-कालीन विवरण अथवा दोनों हाथों के हस्त-चित्र सहित मिलें। समय प्रातः ९ बजे से १२ बजे और ४ बजे से सायं ५ तक। फोन नं० ६२५०६; ज्यौतिष मार्तण्ड कार्यालय डी-१९ गणेश मार्ग, सत्संग भवन के सामने बापूनगर, जयपुर-३०२०१५ राजस्थान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गतांश से आगे

कर्क राशि

☐ डा० घनश्यामदास मेहरा एम० काम०, एल० एल० बी०

(८) अष्टम भाव में कर्क राशि—जिस जातक का जन्म धनु लग्न में होता है। उसके अष्टम भाव में कर्क राशि होती है। अष्टम भाव से आयु का विशेष तौर से विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्त्री–भोग अथवा पुरुष–भोग की इच्छा, शराब पीना व बनाना अथवा आबकारी अधिकारी, भूमि, लाभ, कीर्ति, शोक आदि का विचार किया जाता है। जिस जातक के अष्टम भाव में कर्क राशि होती है। जिस जातक के अष्टम भाव में कर्क राशि होती है। ऐसा जातक पेय पदार्थों के कारखानों में कार्य करता है अथवा ऐसे कारखानों में धन लगाता है अथवा पेय पदार्थों के सेवन का शौकीन होता है। ऐसे जातक को किसी विशेष कार्य हेतु पुरस्कार भी प्राप्त होते है। जातक में स्त्री भोग इच्छा बलवान होती है। जातक की प्रायः दो शादियां होती है अथवा दो स्त्रियों से सम्बन्ध कायम होते हैं। ऐसे जातक की मृायु घर से दूर जल में डूबने आदि से होती है। यदि कर्क राशि या कर्क राशि का नवांश हो तो मन्दाग्नि या अरुचि से भी मरण सम्भव है। मान सागरी के अनुसार—

कर्केऽषृमस्थे च जलोप
सर्गात्कीटान्तथा चैव विभीषणाद्वा
भवेद्विनाशः परहस्ततो वा
विदेश संस्थस्य नरस्य चैव ॥

अर्थात् जिस जातक के अष्टम भाव में कर्क राशि हो, उस मनुष्य की जलाशय से या भयंकर कीड़े से या परदेश में दूसरे के हाथ से मृत्यु होती हैं। ऐसा ही विचार वृद्धयवन ने व्यक्त किया है। उनके अनुसार—

कर्केऽषृमस्थे च जलोप सर्गात्,
कीटान्नथा चैव विभीपणाद्वा।
भवेद्विनाशो परहस्तो वा,
विदेशसंस्थस्य नरस्य चैवम् ॥

अर्थात् जिस जातक के अष्टम भाव में कर्क राशि होती है तो जातक का जल के उत्पाद से कीटाणु से, या भय से या दूसरे के हाथ से परदेश में मरण होता है। मानसागरी और वृद्धयवन में कितनी समानता है यह उपरोक्त कथित श्लोकों से ज्ञात होती ।

(९) नवम भाव में कर्क राशि—जिस जातक का जन्म वृश्चिक लग्न में होता है उसके नवमभाव में कर्क राशि होती है। नवमभाव जन्म-पत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। इस भाव से जातक का भाग्य, दूसरे विवाह से भाग्योदय या हानि, हिन्दू कानून, दूसरी भाषा, दर्शनशास्त्र, शिक्षक, प्राध्यापक विश्वविद्यालय की उपाधि जैसे–पी० एच० डी०, एम० ए०, एल० एल० बी०, एम० बी० बी० एस० आदि। दूर देश की यात्रा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक पत्नी व्रत या व्यभिचार का विचार किया जाता है। जिस जातक के नवम भाव में कर्क राशि होती है तो ऐसा जातक भाग्य का स्वयं निर्माता करता है। भाग्य निरन्तर उसका साथ देता रहता है। तथा ऐसे जातक संघर्ष के क्षणों में ही अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं। कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है। इसलिए जातक में नेतृत्व करने की गजब की क्षमता व शक्ति होती है। ऐसे जातक विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी, ये अपना मस्तिष्क संतुलन बनाये रखते हैं। ऐसा जातक राजनीतिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा जातक कल्पनाप्रिय होता है। ऐसा जातक सफल शिक्षक, पत्रकार, प्रकाशक या लेखक हो सकता। ऐसे जातक मध्यकाल में कई उतार-चढ़ाव देखता है तथा धनहानि भी सहनी पड़ती है। वायु प्रकोप जीवन भर बना रहता है, एवं अस्थिरता चंचलता एवं त्वरित निर्णय न ले सकने के कारण कई बार हानि भी उठाता है। जातक व्यापार के लिए दूर परदेश की कई बार जीवन में यात्रा करता है। व्रतोत्सवादि में जातक रुढ़िवादी विचारों का होता। बचपन में इसे पेट सम्बन्धी बीमारियों होती है। मान सागरी के अनुसार—

व्रतोपवासैर्विषमैर्विचितौर्धर्म,
नरः संकुरुते सदैव।
धर्माश्रिते चैव चतुर्थ रासौ,
तीर्था श्रयाद्वा वनसेवनेव ॥

अर्थात जिसके नवम भाव में कर्क राशि होती है तो वह जातक अनेक प्रकार के व्रत, उपवास आदि से धर्म करने वाला, तीर्थों में भ्रमण करने वाला और वन में तपस्या करने से निरन्तर धर्म में लगा रहता है वृद्धयवन के अनुसार—

व्रतोपवासैर्विषमैर्विचित्रैर्धर्म,
नरः संकुरुते सदैव।
धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ,
तीर्थाश्रयाद्वा धन सेवया च ॥

अर्थात जिस जातक के नवम भाव में कर्क राशि होती है तो जातक विचित्र व विषम व्रत तथा उपवासरूपी सदा ही धर्म करने वाला अथवा तीर्थों के आश्रय से धन की सेवा से धर्म करने वाला होता है।

(१०) दशमभाव में कर्क राशि—जिस जातक का जन्म तुला लग्न में होता है उसके दशम भाव में कर्क राशि होती है। जन्म-कुण्डली में दशम भाव विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इस भाव से जातक की वृत्ति का अध्ययन किया जाता है। जातक का व्यवसाय क्या होगा ? कैसा होगा। नौकरी सरकारी होगी अथवा गैरसरकारी। इसलिए यह भाव जातक का कर्म स्थान कहलाता है। फारसी में इसे शाहखामे, बादशाहखाने के नाम से पुकारते हैं।

जिस जातक के दशम भाव में कर्क राशि स्थित होती है तो जातक का बचपन अत्यन्त आनन्द से व्यतीत होता है ऐसे जातक का भाग्य निरन्तर साथ देता है। ऐसे जातक का विकास १८ वर्ष के पश्चात होता है। जातक धार्मिक विचारों वाला होता है। वह जीवन में ऐसे कार्य करता है जिससे उसको मृत्यु के पश्चात भी लोग याद करते रहते हैं। जैसे धर्मशाला बनवाना, प्याऊ लगवाना, पानी के लिए कुंआ खुदवाना या टंकी लगवाना, गरीबों को धन या वस्तु वितरित करना आदि कार्य करता है। ऐसा जातक धर्म, श्रम एवं न्याय में विश्वास रखता है। माता-पिता का भक्त होता है और उनकी आज्ञा का पालन करता है। ऐसा जातक समाज में पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करता हुआ लोकप्रियता अर्जित करता है। ऐसा जातक स्वस्थ, सुन्दर, कुलीन, गुणवान एवं नीति को समझने वाला होता है। नौकरी में ऐसा जातक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्नति करता है और शीघ्र ही नौकरी में उच्च पद प्राप्त करता है। ऐसा जातक आकर्षक व्यक्तित्व रखने के साथ-साथ विरोधियों में भी प्रशंसा का पात्र बना रहता है। मानसागरी के अनुसार—

कर्कोऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः,
कर्म प्रपारामतडाग संगम।
विचित्रवापी तट वृन्दजं च
कृपापरं नित्यकलमषं च॥

अर्थात जिस जातक के दशम भाव में कर्क राशि होती है वह मनुष्य प्याऊ, बगीचा, तालाब, विचित्र, बावड़ी आदि कर्मों को करने वाला, दयाशील और पाप रहित होता है। वृद्धयवन के अनुसार—

कर्कोऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः,
कर्म अपारारामतड़ागजातम्।
विचित्रवापतिऽधट्टजं च,
कृपारिनित्यं तम कल्पकञ्च॥

अर्थात जिस जातक के दशम भाव में कर्क राशि होती है तो जातक प्याऊ, बगीचा व तालाब सम्बन्धी विचित्र, बावरी, तट व घाट जन्य, दया से शून्य और क्रोधयुक्त काम करने वाला होता है। वृद्धधवन जातक में भी कहा है—

कर्कोऽम्बरस्ये प्रकरोति मर्त्यः,
कर्म प्रपारामत्डागजातम।
विचित्रवापीतरुवृन्दजं च,
कृपादिधर्मेकपरं सदैव॥

(११) एकादश भाव में कर्क राशि—जिस जातक का जन्म कन्या लग्न में होता है उसके एकादश भाव में कर्क राशि होती है। जिस जातक के एकादश भाव में कर्क राशि होती है तो जातक साहसी, दृढ़ निश्चयी एवं हठी होता है। शत्रु इसके नाम से श्रीहीन हो जाते है। यद्यपि आय के साधन सीमित होते हैं परन्तु जातक का अधिकांश व्यय परिवार, बच्चों की शिक्षा व सुरुचिपूर्ण प्रसाधन तथा सजावट पर व्यय होता है। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। अगर जातक लाटरी के टिकिट खरीदे तो उसको इससे धन मिलने की अधिक सम्भावना रहती है। परन्तु हमने एक खास बात अनुभव में देखी कि जातक का बचपन साधारण स्तर का ही होता है। ऐसे व्यक्ति व्यापार से कहीं अधिक नौकरी में लाभ कमाते हैं। ऐसा जातक युवावस्था में विख्यात होता है। इनके पास आय के साधन ठोस होते है जिसके फलस्वरूप जीवन में धन का अभाव नहीं रहता। इनकी आवश्यकताएं सहज ही पूरी हो जाती है। ऐसे जातक राजनीतिक भी पाये गए और उन लोगों में इस क्षेत्र में सफलता भी प्राप्त की है। इनके विचार सर्वथा मौलिक एवं अछूते होते हैं। मानसागरी के अनुसार—

लाभोभवेल्लाभगते चराशौ,
सदा चतुर्थे वरजातकानाम।
सेवाकृषाभ्यां जनित प्रभूतः,
शास्त्रेपा वा साधुजनैश्च पश्चात॥

अर्थात जिस जातक के एकादश भाव में कर्क राशि हो तो मनुष्य बड़े लोगों की सेवा करने से, खेती करने से, शास्त्र से अथवा साधुजनों से अधिक लाभ पाने वाला होता है। वृद्धयवन के अनुसार—

लाभभवेल्लाभगते च राशौ,
सदा चतुर्थे वरभाजनानाम्।
सेवाकृषिव्यां जनितः प्रभूतः,
शास्त्रेण वा साधुजनस्य पार्श्वान्॥

अर्थात् जातक की जन्म-कुण्डली में ग्यारवे भाव में कर्क राशि हो तो जातक श्रेष्ठ वर्तनों से, सेवा व खेती से, शास्त्र से अथवा सज्जनों की संगति से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। वृद्धयवन जातक में भी इसी प्रकार लिखा है—

लाभोभ वेल्लाभगते चराशौ,
नृणां चतुर्थे चवरांगनानाम्।
सेवाकृषिभ्यां जनितः प्रभूत,
शास्त्रेण व साधु जनोपकारात्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१२) द्वादश भाव में कर्क राशि—जिस जातक का जन्म सिंह लग्न में होता है उसके द्वादश भाव में कर्क राशि होती है। जिस जातक के द्वादश भाव में कर्क राशि होती है तो जातक क्रोधी स्वभाव का होता है, इसे शीघ्र ही क्रोध आ जाता है जिसके कारण सोचने की शक्ति क्षीण हो जाती है। यह भाव किसी ग्रह से पीडित हो रहा हो तो जातक की बांई आंख कमजोर हो जाती है और आपरेशन कराना पड़ता है। मानभागरी के अनुसार—

कर्कव्यस्थे द्विज देवताना, व्ययोम वेद्यज्ञसमुद्रमवश्च
धर्मक्रियामिविदधाति चैवं, प्रशंसिते साधुजनेन लोके

अर्थात् जिस जातक के द्वादश भाव में कर्क राशि होती है तो वह मनुष्य देवता, ब्राह्मणों के निमित यज्ञादि से एवं धर्म कार्यों से खर्च करने वाला और साधुजनों से प्रशंसा पाने वाला होता है। वृद्धयवन के अनुसार—

कर्क व्ययस्थे द्विजदेवतानां,व्ययो मवेद यज्ञसमुद्रभवैश्च।
धर्म क्रियामिर्षि विद्याभिरेवं,संशसितः साधु जनेन लोके।।

अर्थात् जिस जातक की कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि होती है तो ऐसा जातक ब्राह्मण व देवताओं के कार्य में यज्ञादि जन्य अनेक धार्मिक कार्यों में और सज्जन पुरुष से शंकायुक्त खर्च करने वाला होता है। ★

श्री भगवती प्रसाद खेतान ट्रस्ट :—खेतान भवन, ५ माला, १९८, जमशेदजी टाटा रोड़, चर्चगेट, बम्बई : ४०००२०
टेलीफोन नं० २२ १६४५/२२ १५५९ तार : खेतानसंस बम्बई, टेलेक्स :-०११-४८०३
केबीसी इनकी ओर से समस्त बुद्धिजीवियों, क्षात्रों, शिक्षित समुदाय और पाठकों से विनम्र निवेदन :

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषतायें

१–सारे विश्व में सृष्टि संवत् की गणना केवल भारत में १, ९५, २९, ४९, ०८४ वर्षों से चली आ रही है। जिसका प्रमाण सारे भारत में फैले करोड़ों पंचांगों में पाया जाता है।

२–भारत देश के सर्वमान्य ग्रंथ ऋग्वेद को पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर ने भी विश्व की सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक माना है।

३–विश्व के अनुपम आदर्श प्रजातन्त्र व्यवस्था रामराज्य को राष्ट्रपिता बापू ने भी स्वीकार किया था।

४–इसी देश के आदर्श ग्रंथ श्रीमद्भागवद्गीता को इंटरनेशनल कृष्णा कौंसियसनेस ने ७० भाषाओं में करीब १० करोड़ पुस्तकें तैयार कराकर सारे विश्व में फैलाता है। जिसकी रूस, चीन, इजराइल, अमरीका आदि देशों में भारी मांग है।

५–इसी देश के महाराजा श्री अग्रसेनजी का जीवन्त समाजवादी राज्य विख्यात है। जो आज से ५,००० वर्ष पूर्व पंजाब, हरियाणा सीमा पर अग्रोहा में था। वहां पर नवागंतुक को वहा के निवासी एक लाख परिवार एक-एक रुपया और एक-एक ईट देकर अपने समान बना लेते थे। इससे सारे विश्व में बैंकिंग और सराफे के धन का केन्द्र अग्रोहा में था। किन्तु वहां धनपतियों से किसी को कोई ईर्ष्या विरोध नहीं था। जबकि आज बड़े देशों के लोग अपनी तरफ धन को खींचने में लगे हुए हैं।

६–भारत में आज भी करोड़ों मानव जो कि प्राणिमात्र की भलाई पर विचार व काम कर रहे हैं। जैसे वैष्णव, जैन, संतमत, सूफीमत, गांधीवादी विचारधारा वाले इत्यादि। जबकि अपने आपको आज के वर्तमान में, वैज्ञानिक विद्वान, बड़े समझदार, ऊंचे पढ़े-लिखे हुए विदेशों के लोग अपने आपको मानव मात्र की भलाई की बातों का दंभ भरते हैं। दूसरी तरफ घातक हथियार, एटम बम, रसायन बनाकर प्राणिमात्र को ही समाप्त करने की होड़ में लगे हैं।

७–हमारी युवा पीढ़ी से अपील है कि वह अपनी संस्कृति को समझे, जाने और उचित लगे तो उसके अनुरूप आचरण करे जिससे **भारत पुनः विश्वगुरु बन सके।** इसका श्रेय भी आपकी ही पीढ़ी को प्राप्त होगा। धन्यवाद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

☆ मृत्यु और आसक्ति ☆

संसार की दृष्टि में 'मृत्यु' एक भयानक शब्द है। मृत्यु के ख्याल मात्र से मनुष्य के रोंगटे खडे हो जाते हैं और मनुष्य के सामने एक तस्वीर खडी कर देता है कि अन्त समय में तेरा क्या होगा? बाल, बच्चे, परिवार, स्त्री और धन-दौलत जो कि जीवन भर अथक परिश्रम कर, कमाई है उसका क्या होगा? इसी प्रकार की बातों से मनुष्य भयभीत हो जाता है, लेकिन मृत्यु एक ऐसी बला है जिससे कोई भी बच नहीं सकता। राजा हो या रंक, सभी को मृत्यु का शिकार होना पड़ता है, मृत्यु बताकर नहीं आती कि मैं आ रही हूं। किन्तु अकस्मात ही आ जाती है। उस समय सारा ही 'मैं' और मेरापन छूट जाता है ये घटनायें हम सभी के सामने प्रायः घटती दिखाई देती है, लेकिन फिर भी मनुष्य जीवितकाल में इतना लगाव कर लेता है कि हरेक वस्तु को अपनी ही समझता है। परिवार भर में अपने को ही योग्य और चतुर समझता है, लेकिन हरेक के मन में यहीं होता है कि मेरे बिना परिवार का चलना कठिन है, अगर मैं न रहा तो न जाने परिवार का क्या होगा? लेकिन परिवार वाले स्वतन्त्रता चाहते है, किसी का दबाव उन्हें पसन्द नहीं। फिर भी मनुष्य स्वयं को परिवार भर में श्रेष्ठ समझ कर अपनी ही राय के मुताबिक परिवार को चलाना चाहता है। इसका तात्पर्य है कि हमारी परिवार से आसक्ति इतनी घनीभूत हो चुकी है, मैं-मेरापन इतना गहरा हो चुका है कि हम अपने आपको परिवार पर लादे बिना रह ही नहीं सकते।

मनुष्य अपने जीवनकाल में, अपने अन्दर इतनी महत्वबुद्धि कर बैठता है कि मेरे बिना दुकान, घर तथा कारखाना नहीं चल पायेगा, लेकिन उसके चले जाने पर सब काम ज्यों का त्यों चलते रहते हैं। घर में भी उसी प्रकार का खान-पान हंसी मजाक सभी आवश्यक चीजें होती रहती हैं।

एक वृद्ध मृत्यु-शय्या पर पड़ा अन्तिम श्वास गिन रहा था और अपने पुत्रों को कह रहा था कि इन्कमटैक्स के फार्म लाओ। मैं उन्हें भरता जाऊं। शायद मेरे जाने के बाद तुम्हें भरना न आए।

कितनी आसक्ति थी उसकी पैसों पर कि अन्त में इन्कमटैक्स ही याद आ रह है लेकिन जो पुरुष परिवार से निरासक्ति प्राप्त कर चुका है, वह घर में तो रहता है किन्तु निरासक्त होकर अतिथि की तरह रहता है। घरेलू मामले में किसी प्रकार का दखल नहीं देता। जो भी होता है होने देता है और जो भी पकता है, प्रसन्नतापूर्वक खा लेता है, ऐसे व्यक्ति से परिवार वाले भी सन्तुष्ट रहते हैं। निरासक्ति हो जाने के कारण मृत्यु का भी भय नहीं रह जाता। क्योंकि मृत्यु का भय वहीं रहता है जहां आसक्ति होती हैं, मोह होता है, ममत्व होता है, मैं और मेरापन होता है, जहां न किसी चीज से आसक्ति हैं न किसी से मोह है, न ममत्व बुद्धि है और न मैं और मेरापन ही है उसे कभी भी मृत्यु का भय नहीं रहता, क्योंकि जिसकी मृत्यु होती थी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसकी मृत्यु ही हो चुकी होती है। अब शेष वही चीज बची है जिसकी कभी मृत्यु नहीं हो सकती। वस्तुतः, देखा जाय तो मनुष्य की उसी समय से मृत्यु होनी शुरू हो जाती है जबसे उसका जन्म हुआ था जन्म ही मृत्यु का आमन्त्रण है। मां कहती है कि मेरा लड़का १० साल का हो गया। किन्तु सच तो यह हैं कि उसकी उम्र १० वर्ष घट गई है। मृत्यु के निकट पहुंचने में १० साल कम हो चुके हैं। शायद यही कारण है कि जब किसी की जन्मतिथि मनाते हैं, तो जितने वर्ष की उम्र हो चुकी होती है उतनी ही मोमबत्तियां जलाकर उन्हें फूंक मार बुझा देते हैं, इसका तात्पर्य है कि "जीवन" दिन-प्रतिदिन बुझता चला जा रहा है। जन्म-तिथि भी मनुष्य को सचेत करती है और सालभर का लेखा-जोखा करने में सहायक होती है। मनुष्य जिस धन को जीवन भर परिश्रम करके कमाता है। अन्त समय में वह भी साथ नहीं देता और जिस परिवार के लिए सभी प्रकार के अकर्तव्य कर्म करता है वे भी अपने नहीं रहते।

एक वृद्धा अन्तिम श्वास ले रही थी। उसके दो लड़के थे। उनमें से बड़े लड़के ने मौका देख कर उसके तकिये के नीचे से चाबी निकालकर अलमारी में से कीमती सामान निकाल लिया और बाद में पुनः छोटे भाई के सामने खोल कर कह दिया इसमें से तो कुछ भी नहीं निकला। कितनी विचारणीय बात है कि जिस पुत्र को माता ने बड़े लाड़-प्यार से पाला, वही अन्त में अपनी दम तोड़ती मां की फिक्र छोड़ कर धन के पीछे पागल हो रहा है। मरणोपरान्त सब रिश्ते टूट जाते हैं, जिनके लिये रात-दिन एक करके धन कमाते हैं, मकान बनाते हैं अन्त में वे ही इस शरीर को चिता में रखकर आग लगा देते हैं।

यह शरीर भी जिसका जन्म-मरण हो रहा है अपना नहीं है। शरीर के जन्म-मरण में हमारा कोई अधिकार नहीं है। एक ओर जन्म है और दूसरी ओर मृत्यु। जन्म और मृत्यु जीवन के दो छोर हैं। मृत्यु ही जन्म का कारण है और जन्म की मृत्यु निश्चित है। यही समझ कर हम जीवन-काल से निरासक्त और निराभिमानी होकर जीएं और प्रसन्नतापूर्वक मरें। यही जीवन का एक रहस्य है। ब्रह्मलीन सम्पादिका राजरानी देवलाजी जी कहा करती थी कि बेफिक्र होकर जीओ और बतकुल्लुफ होकर मरो। जिसका जीवन बेफिक्र होकर बीतता है और प्रसन्नतापूर्वक मृत्यु होती है उसी का जीवन धन्य है। ऐसे मनुष्य को मृत्यु नहीं, किन्तु अमरत्व की प्राप्ति होती है। 卐

卐 उपयुक्त समय 卐

□ भरत

एक यात्री जगन्नाथपुरी पहुंचा, सुना कि कल समुद्र-स्नान का बहुत ही बड़ा माहात्म्य है, समुद्र-स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होगी। यात्री भी समुद्र-स्नान करने गया, किन्तु स्नान करने के बजाय वह किनारे पर बैठा रहा। एक व्यक्ति जो बहुत देर से उसे देख रहा था उसने आगे आकर पूछा, "स्नान करने आए हो तो किनारे पर क्यों बैठे हो? स्नान कब करोगे?" उस यात्री ने उत्तर दिया, "इस समय समुद्र अशान्त है। उसमें ऊंची-ऊंची लहरें आ रही हैं। लहरें बन्द होंगी और समुद्र शांत होगा तभी स्नान करूंगा। उस व्यक्ति को हंसी आ गई। वह बोला, "भले आदमी समुद्र की लहरें क्या कभी रुकने वाली हैं? ये तो आती ही रहेंगी। समुद्र-स्नान तो लहरों के थपेड़े सहकर ही करना चाहिए।" ऐसा हमारे जीवन में आता है। हम विचार करते हैं कि सभी प्रकार की अनुकूलताएं आएंगी, तभी परमात्मा का भजन-ध्यान करेंगे, किन्तु सभी प्रकार की अनुकूलताएं जीवन में किसी को कभी मिलती नहीं। संसार समुद्र के समान है जिसमें बाधा रूपी तरंगें हमेशा उठती रहेंगी। उपयुक्त समय की राह न देखकर ईश्वर-भजन में लग जाना चाहिए। ★

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्यौतिष और आपका नाम

□ पं० रामगोपाल दाधीच

एक व्यक्ति की आकृति हमारे मन में, ध्यान में, चिंतन में कब आती है ? जब उस व्यक्ति का नाम हमारे ध्यान में आता है। अतः यह स्पष्ट है कि नाम से व्यक्ति पहचाना जाता है। जन्म कुण्डली का लग्न और लग्नेश व्यक्ति के व्यक्तित्व की जानकारी देते है। जिस प्रकार एक जातक का नाम 'श्रीनिवास' है। जातक की कुण्डली में कर्क लग्न में शुक्र है। चतुर्थ में तुला के गुरु-राहु है। नवम में मीन का मंगल है। दसम में मेष के शनि-चन्द्र-केतु है। लाभ-स्थान में वृषभ का बुध तथा व्यय स्थान में मिथुन का सूर्य है। सामान्यतः चन्द्र राशि पर से ही नाम रखा जाता है, किन्तु इस जातक का नाम चन्द्र राशि से सम्बन्धित नहीं है।

अब प्रश्न यह उठता है कि जातक के माता-पिता के ध्यान में यह नाम कैसें आया ? इसका पता जन्मकुण्डली को देखने से लगेगा। इसके लिए हम लग्न और लग्नेश से पता लगाना चाहिये। लग्न पर किस ग्रह का प्रभाव है ? कौन ग्रह लग्न में स्थित है ? लग्नेश किस भाव में स्थित है ? उस पर किस ग्रह का प्रभाव है ? इन बातों की छान-बीन से हम जातक के नाम का पता लगा सकते हैं। प्रस्तुत उदाहरण में लग्न में कर्क राशि है, जो चतुर्थ भाव अर्थात् निवास स्थान की नैसर्गिक राशि है। उसमें 'श्री' का कारक शुक्र स्थित है। 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी नैसर्गिक कुण्डली म शुक्र धन स्थान का स्वामी होता है। राष्ट्रीय ज्यौतिष में भी धन स्थान से इकट्ठ धन (बैंक) इत्यादि देखते हैं। इसलिए शुक्र का असर होने से जातक का नाम श्रीनिवास पड़ा।

उदाहरण दूसरा—जातक का नाम 'कीर्ति आसर'। लग्न में कन्या का गुरु है। धन स्थान में तुला का राहु और नेपच्यून है। तृतीय स्थान में वृश्चिक का वक्री शनि है। अष्टम भाव में मेष का केतु है। दसम भाव में मिथुन के सूर्य, चन्द्र और बुध है। लाभ स्थान में कर्क के मंगल और शुक्र हैं। व्यय स्थान में सिंह का प्लुटो है। चन्द्र मिथुन का है। मिथुन राशि के अक्षर क, छ, घ, होते हैं। 'क' पर से अनेक नाम बन सकते है, किन्तु जातक के माता-पिता के ध्यान में 'कीर्ति' शब्द कैसे आया ? मान, प्रतिष्ठा, कीर्ति आदि हम दसम भाव से देखते हैं। दसम भाव कुण्डली में सबसे उच्चस्थ भाव है। उसमें स्थित ग्रह पूर्णतः दृश्यमान है। लग्नेश बुध दसम भाव में यश के कारक सूर्य के साथ स्वग्रही होने से नाम 'कीर्ति' रखा गया। अब इस कुण्डली को जरा गहरायी से देखें। लग्न, लग्नेश, सूर्य और चन्द्र इन चारों पर बुध और बुध की राशियों का प्रभाव होने से जातक की शिक्षा भी बुध की लाइन कामर्स (Commerce) की हुई।

लग्नेश, बुध, सूर्य के समीप होने से अस्त है। अर्थात् लग्नेश बुध के कर्मों का फल सूर्य को मिलता हैं, इसलिए आजीविका की शुरूआत सर्विस से हुई। अब सर्विस किस प्रकार की ? इस पर भी विचार करें। बुध वाणिज्य का कारक है। वितरण (Marketting) भी बुध के अन्तर्गत हैं। अतः जातक एक कन्ज्युमर प्राडक्टस् बनाने वाली एक कम्पनी में सीनियर मार्केटिंग आफिसर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अब फल कथन के लिए एक नवीन, मौलिक दिशा के प्रति इशारा करता हूं। इस कुण्डली में सूर्य-चन्द्र-बुध मिथुन के हैं। नैसर्गिक कुण्डली में मिथुन राशि तृतीय भाव की राशि होती है, इसलिए तृतीय भाव में जो भी राशि और ग्रह स्थित हैं उनसे यह त्रिपुटी प्रभावित होगी। तृतीय भाव में वृश्चिक का शनि है। यह शनि वक्री है, बलवान है, राहु और केतु की एक तरफ यह शनि है, बाकी दूसरी तरफ सभी ग्रह हैं। सार यह है कि जीवन के आधे भाग पर शनि की पूर्ण जवाबदारी है। शनि वर्गोत्तमी हैं, अपने स्वनक्षत्र का हैं और विशेषतः आत्मकारक हैं। शनि वायु प्रधान ग्रह हैं तथा तेल का सूचक भी है। इसीलिये शनिवार को वायुपुत्र हनुमान को तेल चढाते हैं। यह जातक जिस कम्पनी में काम करता है उस कम्पनी की प्राडक्ट तेल हैं। तृतीय भाव से संदेश, वाहन, व्यवहार, ब्राडकास्टिंग, तार, टेलीफोन, पोस्ट, पोस्टमेन आदि गतिविधियां देखते हैं। अतः इसकी कम्पनी जो तेल बनाती हैं उस ब्राण्ड का नाम हैं 'पोस्टमेन'। पोस्टमेन आइल के नाम से यह ब्राण्ड प्रसिद्ध हैं। इन सब बातों को देखते हुए, क्या यह मात्र योगानुयोग (Coinciedence) है? कदापि नहीं। यह ज्यौतिष के गूढ रहस्य हैं। अब आपके समक्ष कुछ प्रख्यात व्यक्तियों की कुण्डलियाँ रखता हूं।

इन्दिरा गांधी : जातक की कुण्डली में कर्क लग्न हैं। लग्नेश चन्द्र सप्तम भाव में मकर का है। अतः नाम राशि पर से नहीं रखा गया हैं। इन्दिरा नाम इसलिए पडा कि इन्दु कहते हैं चन्द्र को और चन्द्र सप्तम भाव से लग्न को देख रहा है।

डॉ. राधाकृष्णन : नाम का अर्थ है राधा कृष्ण, लक्ष्मी और विष्णु। अब हमें यह देखना है कि कौन ग्रह इन नामों से सम्बन्ध रखता है? शुक्र को हम लक्ष्मी का कारक ऊपर के उदाहरण में सिद्ध कर चुके है। अब बुध को विष्णु का कारक मानते हैं। इनकी कन्या लग्न की कुण्डली में बुध, शुक्र विराजमान हैं। अतः नाम राधाकृष्णन पडा।

देवधर पाण्डेय : नाम का अर्थ है किसी देव को धारण करने वाला। जातक की कुण्डली में चन्द्र मीन का हैं। अतः माता-पिता ने जो नाम रखा हैं वह चन्द्र राशि से सम्बन्धित नहीं हैं। कुण्डली में धनु लग्न हैं, और वहाँ गुरु महाराज विराजमान हैं, गुरु सभी देवताओं का गुरु हैं। अर्थात् सभी देवताओं को धारण कर रखा हैं। इसलिये नाम देवधर। चन्द्र लग्न से भी गुरु दसम भाव में स्वग्रही हैं अर्थात् पूर्णतः दृश्यमान हैं।

रणधीर कपूर : नाम का अर्थ हैं युद्ध क्षेत्र में धैर्य रखने वाला। यह सर्व विदित हैं कि मंगल युद्ध का कारक तथा शनि धैर्य का। जातक का मेष लग्न हैं और लग्नेश मंगल दसम भाव में मकर का। इसलिये लडाकू स्वाभाव का सिद्ध हुआ तथा चतुर्थ में कर्क का शनि धैर्य की दृष्टि से देख रहा है। इसलिये नाम रणधीर।

रूबी : यह एक लडकी का नाम हैं। रूबी का अर्थ है, माणिक जो सूर्य का नग हैं। जातक की कुण्डली में वृश्चिक लग्न में सूर्य और मंगल स्थित हैं, इसलिए नाम रूबी पडा। वैसे ही आभा प्रभा; प्रकाश, दिवाकर, दिनकर, दीपक, रोशन, किरण आदि नामों वाली व्यक्तियों के लग्न और लग्नेश पर सूर्य की असर अवश्य होता हैं।

रति अग्निहोत्री : जातक एक विख्यात अभिनेत्री हैं। मेष लग्न हैं। लग्नेश मंगल अष्टम भाव में शुक्र के साथ वृश्चिक राशि के हैं। रति का अर्थ है, कामदेव की पत्नी। काम का कारक शुक्र है, काम का भाव अष्टम, और काम की राशि वृश्चिक। काम के सभी प्रभाव लग्नेश मंगल पर है अतः नाम रति।

शेष पृष्ठ ४६ पर देखें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दीपावली पर्व पर भविष्यवाणी

विजयादशमी से दीपावली के अन्तराल

☐ विद्यासागर, एम. ए. ज्यौतिष रत्न

वे सभी जातक, क्यों न किसी भी लग्न के हो जिनकी परिस्थितियां मई प्रथम के सप्ताह ८५ तक बिलकुल ठीक थी किन्तु बाद में परिस्थितियां बिगड़ती चली गयी, जून में गड़बड़ी आयी, जुलाई में संकट गहराया, अगस्त पूर्वार्द्ध तक जिनका संकट पराकाष्ठा को स्पर्श कर चुका था और अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक परिस्थितियां लगभग उसी तरह की बनी हुई थीं या परिवर्तन तो हुआ किन्तु उस परिवर्तित माहोल को कदापि उत्साह-जनक नहीं कहा जा सकता था, निश्चित रूप से वे सभी अक्टूबर के अन्त तक मनोनुकूल आनन्दपूर्ण परिस्थितियां प्राप्त कर लेंगे, या कुछ इस प्रकार की परिस्थितियों को प्राप्त करने में भरपूर प्रयत्नशील रहेंगे।

उपर्युक्त भविष्यवाणी–जन सामान्य के लिए है किन्तु वे सज्जन जिनकी उम्र ६० से ७२ के बीच है अधिक प्रभावित होंगे। विभिन्न लग्नों के लिए सुधारात्मक परिवर्तन के संदर्भ निम्न प्रकार के होगे। परिवर्तित संदर्भ का आनन्द अनिवार्य रूप से तीन महीने मिलता रहेगा।

वृष लग्न के लिए गुरुजनों, भाग्य या प्राकृतिक सहयोग से उचित लाभ का वातावरण बनेगा। मिथुन–लग्न के लिए घरेलू और सामाजिक बिगड़ी परिस्थितियों में क्रमिक सुधार की अपेक्षा है। कर्क—लग्न के लिए प्रभावशाली, बडप्पन और भाग्य-संयुक्त दाम्पत्य जीवन या सहयोग पक्ष मजबूत होता रहेगा। सिंह—लग्न के लिए संकट या झंझट पर विजय, बौद्धिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। कन्या—लग्न के लिए सम्पूर्ण घरेलू या शैक्षणिक, बौद्धिक वातावरण आनन्दित करता रहेगा। तुला—लग्न के लिए शक्ति-संघर्ष से उपलब्ध सम्पत्ति, जमीन-जायदाद से सुख मिलेगा। वृश्चिक—लग्न के लिए कोष-कुटुम्ब, बुद्धि या संतान पक्ष से उत्पन्न शक्ति का विकास होगा। धनु—लग्न के लिए व्यक्तित्व या स्थावर सम्पत्ति से उत्पन्न कोष और कुटुम्ब सुख का विकास होता रहेगा। मकर—लग्न के लिए पुरुषार्थ शक्ति और खर्च शक्ति से उत्साह और आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। कुम्भ—लग्न के लिए कोष एवं लाभ की वृद्धि से खर्च का उत्साह बना रहेगा। मीन—लग्न के लिए कार्य क्षमता, सामाजिक सहयोग तथा आत्मविश्वास से उपलब्धि या लाभ संभाव्य है।

स्मरण रहे उन सभी जातकों के लिए उल्लिखित संदर्भ में किसी भी सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है, जिन्हें अप्रैल-मई ८५ में इन्हीं तथ्यों के कारण, बहुत ही कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा हो। जिन व्यक्तियों के लिए मई का प्रथम सप्ताह बहुत बुरा सिद्ध हो चुका है अक्टूबर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का अन्तिम या नवम्बर का प्रथम सप्ताह बुरा ही सिद्ध होगा। जिन जन्म पत्रियों में सूर्य-वृहस्पति परस्पर सम-सप्तम षडाष्टक सम्बन्ध बनाये हुए हैं, वह १ नवम्बर, ८५ के आस-पास अच्छाई की कल्पना न करें। गत वर्ष ३१ अक्टूबर को शनि-मंगल ६० डिग्री की कोणिक दूरी बनाए हुए थे, इस अक्टूबर, विजयादशमी के अत्यन्त निकट शनि-मंगल के बीच परस्पर ६० डिग्री का कोण है, अतः इस विशेष ग्रह स्थिति से प्रभावित होने वाले व्यक्ति भी आकस्मिक दुर्घटनाओं के प्रति सतर्कता बनाए रखें तो अच्छा रहेगा।

कुछ अतिरिक्त भविष्यवाणियां

(१) इस बार विजयादशमी के अत्यन्त निकट शनि-मंगल के बीच परस्पर ६० डिग्री कोण का कोण बनता है। अतः कहीं-उग्रवादियों या किसी असामाजिक तत्वों के नृशंस कार्यवाही के प्रति प्रशासन को सतर्क रहना उचित होगा। गत वर्ष ३१ अक्टूबर को शनि-मंगल ६० डिग्री, सूर्य वृहस्पति ६० डिग्री में श्रद्धेय इन्दिरा गांधी ब्रह्मलीन हुई थी और उसी दिन शुक्र-चन्द्र ६० डिग्री होने पर देश-वासी इस घटना की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर आहत हुए थे। (२) दिसम्बर, ८५ के तीसरे सप्ताह में यत्र-तत्र वर्षा होती रहेगी। अतः इस महिने के उत्तरार्द्ध में भूमण्डल में रिकार्ड की ठंठक और सर्दी पड़ती रहेगी। भारत के कृषि क्षेत्र में अगात गेहूं या चने की खेती के लिए विशेष लाभ की संभावना है। (३) फरवरी, ८६ में लंका के राष्ट्रपति जयवर्द्धने या वहां की सेना की पराकाष्ठा पर पहुंची, उदण्डता या स्वच्छन्दता न केवल तमिल समुदाय अपितु पूरे भारत देश की चिन्ता का कारण बन सकती है। (४) ३ फरवरी, १९८६ के अत्यन्त निकट किसी देश में विनाशकारी भूकम्प की संभावना है। (५) दिसम्बर जनवरी फरवरी ८६ सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर में, भारत को आन्तरिक या वाह्य आक्रमण को बहुत बड़ा खतरा है। इसकी भयंकरता नवम्बर के अन्त या में संभाव्य है। फलित ज्यौतिष को सत्य मानकर प्रशासन इस अवधि के पहले ही उचित प्रतिरक्षात्मक तैयारी अवश्य कर ले। अग्र सोची सदा सुखी।

BOOK REVIEW

Publishers and authors in tne field of astrology, palmistry, numerology and other allied subjects are welcome to avail of the services of "Review" column. Those who intend to have their publications reviewed may send their works by registered mail, in duplicate to :

DEO DHAR PANDEY
CHIEF EDITOR
JYOTISH MARTAND
D– 19 Ganesh Marg, Bapu Nagar
JAIPUR–302015 (Raj.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

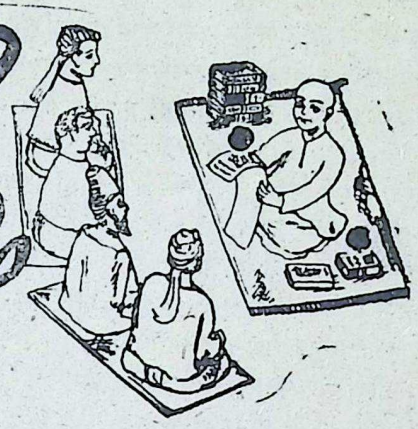

"आपके प्रश्न, हमारे उत्तर" स्तम्भ में रुचि रखने वाले सज्जनों से निवेदन है कि वे जन्मकुण्डली की नकल, अथवा दोनों हाथों के फोटो प्रिंट प्रेस की स्याही या तवे की कालिख से कागज पर अपने दोनों हाथों के स्पष्ट चित्र, अपने प्रश्नों के साथ, उत्तर प्राप्ति हेतु, कम से कम ५१ रुपये पारिश्रमिक अवश्य भेजें, तभी प्रश्नों के उत्तर दिये जा सकेंगे। डाक से प्रश्नों का उत्तर चाहने वालों को १०) रु० अधिक भेजना चाहिये, ताकि उत्तर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जा सके। ज्यौतिष मार्तण्ड के शुभचिंतकों एवं पाठकों को हम यह अवगत कराना चाहते हैं कि इस स्तम्भ से प्राप्त होने वाली राशि को हम ज्यौतिष मार्तण्ड के साज-सज्जा व अन्य सुधार पर व्यय करते हैं। —सम्पादक

प्रश्न—कर्क लग्न—सिंह में, राहू सूर्य—कन्या में बुध, शुक्र—धनु में वृहस्पति और वक्री, शनि—कुम्भ में, केतु—मेष में चन्द्रमा—मिथुन में मंगल —आनन्द कुमार

उत्तर—आपका लग्न बुध नक्षत्र में उदय हो रहा है, बुध तृतीय भाव में उच्च है और शुक्र के साथ है। बुध, सूर्य नक्षत्रीय है और शुक्र लग्नेश चन्द्र के नक्षत्र में है। अतः आप भाग्यवान, शास्त्र-ज्ञाता, ज्ञानवान और धनवान पुरुष बन जावेंगे।

—पं. देवधर पाण्डेय बी. ए. ज्यौतिषाचार्य

आप व्यापार के गुप्त रहस्यों को बखूबी जानने वाले और व्यापार में सफलता प्राप्त करने वाले, दीर्घायु-प्राप्त धैर्यवान पुरुष हैं। आपके मन के सभी संकल्प पूर्ण और सफल होंगे। सूर्य, शुक्र नक्षत्रीय है, अतः आपको अपने पिताश्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा पिता को पूर्ण सुख देने वाले पुत्र कहलावेंगे, किन्तु राहू के साथ सूर्य होने से आप दाम्भिक और अंहकारी न बन पाये इसका आपको ध्यान रखना होगा। राहू के कारण शिक्षा पूर्ण नहीं होती, सूर्य राहू पर वृहस्पति की दृष्टि से, सूर्य को बल प्राप्त हुआ है अतः धन की आपके पास कमी नहीं होगी। मैं इस सूर्य को राजयोग का कारक मानता हूं। भाग्येश वृहस्पति छठे भाव में अष्टमेश शनि के साथ स्थित है, अतः यह छठे भाव का शुभ फल ही अधिक देगा। वृहस्पति, केतु के नक्षत्र में है और शनि, शुक्र नक्षत्रीय है। वृहस्पति आपके शत्रुओं का नाश करता है परन्तु वातजन्य रोगों को पैदा न करे इसकी व्यवस्था रखनी होगी। यह वृहस्पति और शनि. लोहे के क्रय-विक्रय से लाभ भी देता हैं। मामा का सुख नहीं प्राप्त होता। शनि वृहस्पति की युति आपको महाबली बनाती है। लग्नेश चन्द्र केतु के नक्षत्र में है। चन्द्र से द्वितीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और व्यय भाव में कोई ग्रह नहीं है, इससे बाल्य-अवस्था में अल्प सुख प्राप्त होता है। जनता बिना वजह विरोध करती हैं इससे कार्य के पूर्ण होने में विघ्न बाधा आती है और रुकावट का सामना करना पडता है। चन्द्र पर वृहस्पति की दृष्टि हैं अतः आप धर्मात्मा जैसा व्यवहार करने लगते हैं, धनी-मानी लोगों से तथा राजा जैसे पुरुषों से सुख और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते है। मंगल व्यय भाव में स्वनक्षत्री हैं परन्तु मैं इसे शुभ नहीं मानता, धन हानि का कारण यह मंगल ही हैं। अष्टमेष शनि की दृष्टि इसे और अशुभ फलप्रद बनाती हैं। षष्टेश अष्टमेश की दृष्टि व्यय भाव में अशुभ मानी गई है। अतः चोट लगने के चिन्ह शरीर में पाये जाते हैं। झूठी अफवायें अधिक फैलाती है। झगड़े-झझट अधिक होते हैं इससे और दुबुद्धि के कारण जीवन सुखमय नहीं होता, नौकरों के कारण भी दुःख उठाना पडता हैं। आपका सूर्य और राहु, शुक्र नक्षत्रीय हैं। सूर्य नक्षत्रीय नहीं है। विशोतरी दशानुसार इस समय सूर्य की महादशा में राहु का अन्तर सितम्बर ८५ तक है यह समय शुभ नहीं हैं। सितम्बर ८५ के बाद वृहस्पति का अन्तर आवेगा जो जून १९८६ तक है। वृहस्तति मेष नवांश में है तथा सूर्य से पंचम है यह शुभ फलप्रद है। यह व्यापार की दृष्टि से अच्छे फल देगा। प्रतिष्ठा और वैभव का सुख प्राप्त होगा, आप अपने पिता को पूर्ण सुख देने में सफल होंगे।

प्रश्न–जन्य लग्न कुम्भ में सूर्य मंगल-मीन में शुक्र राहु-वृषभ में चन्द्र-कर्क में गुरु-कन्या में केतु-मकर में शनि बुध।

—कन्हैयालालजी नवगांव

उत्तर–अपका जन्म लग्न राहु नक्षत्रीय है और राहु जन्म लग्न से द्वितीय भाव में है। लग्नेश शनि व्यय भाव में स्थित है जो अष्ठमेश बुध के साथ है। लग्न में सूर्य और मंगल दो पापी ग्रह स्थित है। यदि हम चन्द्र लग्न से देखे तो चन्द्र लग्नेश शुक्र उच्च है, शुक्र, शनि नक्षत्रीय है शनि स्व राशि का भाग्य भवन में पंचमेश बुध के साथ और चन्द्र हैं उच्च राशि में है। अतः चन्द्र लग्न जन्म लग्न से बलवान है। ज्यौतिष शास्त्र का सिद्धान्त है कि फलित करने से पूर्व यह देखना चाहिए कि जन्म कुण्डली का फलित लग्न से किया जावे, अथवा चन्द्र लग्न से? यदि जन्म लग्नेश, चन्द्र लग्नेश से बली हो तो फलित जन्म लग्न से करना चाहिए। (यदि जन्म लग्नेश और चन्द्र लग्नेश दोनों ही बलहीन हो तो भी फलित जन्म लग्नसे ही करना चाहिये)। यदि जन्म लग्नेश से चन्द्र लग्नेश बली हो तो पूर्ण फलित चन्द्र लग्न से करना चाहिये। आपका चन्द्र [illegible] ऊपर बताये अनुसार जन्म लग्नेश से बली है [illegible] आपकी कुण्डली का फलित चन्द्र राशि स्थित लग्न [illegible] किया जाना चाहिये। चन्द्र कुण्डली–वृषभ लग्न में चन्द्र–कर्क का गुरु–कन्या का केतु–मकर का शनि बुध–कुम्भ का मंगल सूर्य–मीन का शुक्र राहु। मै जन्म कुण्डली का विवेचन आपको भेज चुका हूं। आज चन्द्र कुण्डली का विवेचन कर रहा हूं अब आप ही निर्णय करे कि कौन सा फलित अधिक ठीक है? आशा है आप उत्तर अवश्य देगें। लग्नेश शुक्र षष्ठेश होकर लाभ भाव में राहु के साथ है। अतः कर्ज के रूप में धन लाभ होता है। बड़ी आसानी से कर्जा मिल जाता हैं। सर्वविधि भोग भोगने के लिए मिलते हैं। ऐसा जातक विद्वान, बहु धनवान, भूमि-लाभवान होता है। शुक्र और राहु शनि के नक्षत्र में हैं शनि भाग्य भवन में है अतः अन्त में श्रेष्ठ द्रव्योपार्जनी होती है और वृद्धि अवस्था आनन्द और सुख पूर्वक व्यतीत होती हैं। पराक्रमेश चन्द्र स्वनक्षत्रीय होकर लग्न में है। अतः जातक सुन्दर, चंचल, मधुरभाषी, कोमल शरीर का होता है। बुद्धिमान और धनी होता है। यात्रायें अधिक करनी पड़ती है। शास्त्रानुकूल जीवन व्यतीत करता है। शुक्र स्वनवाश में हैं अतः शुभ फलप्रद है। वृहस्पति बुध नक्षत्रीय है, बुध शनि के साथ है अतः शुभ फलप्रद है। वृहस्पति, बुध नक्षत्रीय है, बुध शनि के साथ है अतः भाइयों से सुख नहीं मिलता, विश्वसनीय मित्र नहीं मिलते, भाग्योदय होने पर भी सन्तोषजनक लाभ नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिलता। सूर्य मंगल दशम भाव में है। सूर्य, मंगल के नक्षत्र में है और मंगल स्वनक्षत्रीय है अतः जातक विद्वान, प्रसिद्धि प्राप्त होता है किसी ज्यौतिष ग्रन्थ में लिखा है :—'दशमेऽगार कोयस्य सजातः कुल दीपक' अर्थात जैसे निविड अन्धकार में दीपक उजाला करता है, उसी प्रकार इस दशम भावस्थ मंगल के प्रभाव से जातक अपने पराक्रम से, अपने भुजवलार्जित धन से तथा अन्य स्थावर जंगम संपति के कारण अपने कुल को उजागरकर प्रसिद्ध के स्थान पर पहुचा देता है। बुध, मगल के नक्षत्र में और शनि, सूर्य नक्षत्रीय है, शनि बुध की भाग्य भवन में युति शुभ नहीं है, क्योंकि बुध शनि के अशुभ प्रभाव में आ गया है। पिता का सु ा नहीं मिलता, मित्रों और प्रियजनों का वियोग सहना पड़ता है। कार्यो के पूर्ण होने में वहुत अडचनें आती है। शनि नवम भाव में प्रारम्भ में दुःखी ही अधिक देता है अन्त में ऊंचा उठाता है इस कारण जातक तत्वान्वेषक पुरुष बन जाता है। दूसरों के प्रति व्यवहार में कटुता आ जाती है। ऐसे जातक रजोगुण प्रधान व्यक्ति होता है, अतः प्रतापी और भाग्यवान वन जाते है। जनता के हित के लिए कई प्रकार के श्रेष्ठ कार्य करते है। राजनीति में इन्हें अधिकार प्राप्त होता है, और ये प्रतापी और भाग्यवान पुरुष कहलाये जाते है। विशोत्तरी दशानुसार इस समय दिनांक १५.७.८२ से १५.९.८५ तक शनि की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा है यह समय शुभ नहीं है धन-मान-प्रतिष्ठा सभी की हानि हो सकती है अतः सावधान रहे।। शनि की महादशा दिनांक २३.९.१९७५ को प्रारम्भ हुई, इसके सभी अन्तर अभी तक ठीक नहीं गये होंगे, परन्तु वृश्चिक राशि का सप्तम शनि काफी सुधार देगा। शनि महादशा का श्रेष्ठ शुभ फल ही आपको मकर राशि में जब शनि आवेगा तभी पूर्ण रूप से प्राप्त होगा।

प्रश्न—हस्तचित्र भेज रहा हूं, कृपया इसे प्रकाशित न करें। प्रश्नों के उत्तर अवश्य दें। आयु ४५ वर्ष। —राधामोहन मद्रास

उत्तर—इस स्तम्भ में प्रकाशित प्रश्न और उत्तर' से जहां आपको प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते है, वही इस विद्या के विद्यार्थियों को भी ज्ञानवर्धन होता है तथा हमने क्या गलत लिखा हैं? यह भी पात्रों द्वारा हमको इस विद्या के विद्वानों से प्राप्त होता है। अतः कुछ विशिष्ट प्रकार के हस्तचित्र और जन्म कुण्डलियों को हम इस स्तम्भ में प्रकाशित कर सुरक्षित रख लेते हैं, इससे हमारा अनुसंधनात्मक कार्य चलता रहता है। आप १९५४ वर्ष का वार्षिक शुल्क ४५)५० भेज दीजिये हम मय विशेषांक के १२ अंक आपको भेज देंगे। आपके द्वारा भेजा गया हस्तचित्र भी इसी प्रकार है। खैर! इस हस्तचित्र में भाग्य रेखा मणिवन्ध से निकलकर शनि पर्वत तक गई है। स्पष्ठ और सीधी है वीच में कहीं टूटी नहीं है और न इस रेखा पर डाट-क्रास आदि अशुभ चिन्ह है अतः आप भाग्यवान और धनवान हैं, सुन्दर व्यक्तित्व को धारण करने वाले है, आप किसी भी अन्य पुरुष के गुणों को पहचानने की क्षमता रखते है। यह गुण आपको उस त्रिकोण के कारण मिला है, जो जीवन रेखा मस्तक रेखा और चन्द्र रेखा से मिलकर वना है। अत; आपके हृदय में अत्यन्त दया और ममता है। दूसरों की मदद करने में आपको संतोष होता है। आपकी विवाह रेखा कई जगह पर कटी हुई है, स्पष्ठ और स्वच्छ नहीं है। इससे प्रतीत होता है कि आपके जीवन में स्त्री सुख की कमी है। गुरु पर्वत उच्च है, सूर्य रेखा स्वच्छ स्पष्ट है जो हृदय रेखा को काट कर भाग्य रेखा में मिलना चाहती है अतः आप प्रतिष्ठित एक योगी की तरह शुद्ध मन से पूजा-पाठ कर अत्यन्त शांति प्राप्त करने वाले पुरुष है। आपका भाग्यउदय २६ वर्ष की आयु से प्रारम्भ हुआ होगा। आपका ५७-५८ वां वर्ष कठिन पूर्ण संघर्ष का होगा, परन्तु विजयश्री अन्त में आपकी ही होगी। ६१ वर्ष के बाद आपको कोई परेशानी नहीं हैं। जीवन का सबसे सुखता समय ६१ वर्ष के बाद प्रारम्भ होता हैं। आपकी आयु ८२ वर्ष के आस-पास तक है। आपका हस्तचित्र अत्यन्त श्रेष्ठ और शुभ हैं। आप धनी, अपनी शुभ महत्वा-

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपका मासिक भविष्य

नवम्बर १९८५ ☐ 'भाष्कर'

[प्रस्तुत राशिफल सामान्य ग्रह संचार पर आधारित है। अतः जिनकी जन्म कुण्डली में शुभ ग्रहों की दशा भुक्ति आदि चल रही है, उन्हें नेष्टफल की अनुभूति नही, अथवा अल्परूप में होगी। जिनको नेष्ट ग्रहों की दशा, भुक्ति चल रही है उन्हें सावधानी बरतने की आवश्यकता है।]

मुख्य ग्रह संचार :–सूर्य तुला में, दिनांक १७ को वृश्चिक में आवेगे। **मंगल** कन्या में, **बुध** वृश्चिक में दिनांक १८ को वृश्चिक में वक्री होगे। **वृहस्पति** मकर में। **शुक्र** कन्या में दिनांक ५ को तुला में और दिनांक २९ को वृश्चिक में आवेगे। **शनि** वृश्चिक में। **राहु** मेष में। **केतु** तुला में। **हर्षल** वृश्चिक में। **नेप्च्यून** धनुमें। **प्लूटो** तुला राशि में, इस मास में भ्रमण कर रहे है, इन समस्थ ग्रहों को मैं नमस्कार करता हूं। दिनांक ६ को शनि पश्चिम में अस्त्र होंगे और बुध दिनांक २१ को पश्चिम में अस्त होगे।

मेष—उदर रोग से, शारीरिक निर्बलता हो सकती है। ऋतु प्रकोप शक्ति क्षीण करेगा। झगड़े झंझट से बचें मानसिक चिंता व्यवसाय में विघ्न धन क्षति का कुयोग है। महिलाओं को इस मास में धीमी गति रखनी है। राजकीय महिलाओं को यह मास शुभ नहीं है। भरणी नक्षत्र में जन्मे अधिक सुख सुविधाप्राप्त करेंगे, अश्विनी, और कृतिका नक्षत्रों में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख ४-५-१३-१४-२१-२२-२३ अशुभ है।

वृषभ–आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। व्यापारिक गतिरोध का निवारण होगा, रुका धन वापिस मिलेगा यदि रोगी हैं तो रोग से मुक्ति मिलेगी, सम्मान और ऐश्वर्य प्राप्त होगा। उच्च वर्ग को विदेश यात्रा का योग है। दाम्पत्य जीवन सुखी होगा। व्यापारिक उन्नति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी। महिलाओं को इस मास में श्रेष्ठ शुभफल प्राप्त होगे। अभिनेत्रियों को कई अच्छे कानट्रेक्ट मिलेगे। राजकीय महिलायें प्रसन्न रहेंगी, मृगशिरा नक्षत्र में जन्मे लोग अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेगें, कृत्तिका और रोहणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख ६-७-८-१५-१६ २४/२५ अशुभ हैं।

मिथुन–गोचरानुसार, भौतिक बाधा और दुख से तथा राजकीय उलझनों से, आप को छुटकारा मिलेगा। नेताओं के मनोरथ पूरे होंगे। सुयश वैभव व आनन्द प्राप्ति का योग है। तीसरे सप्ताह में छठा बुध वक्री होकर उलझन और बढायेगा। महिलाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अभिनेत्रियों को अपने कानट्रेक्ट सोच विचार कर लेने हैं। मृगशिरा नक्षत्र में जन्में व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेगे, पुनर्वसु और आद्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख १-९-१०-१७-१८-२६-२७-२८ अशुभ हैं।

कर्क– मैं इस मास को शुभ नहीं मानता। धन का अपव्यय, प्रवास पीड़ा, मानसिक संताप और विरोधियों के षड़यन्त्र से आपको परेशानी हो सकती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नवम्बर माह के पर्व त्यौहार एवं व्रत

दिनांक १ शुक्रवार–संकष्टी श्री गणेशचतुर्थी ४ व्रत।
.... ५ मंगलवार–अहोई ८ व्रत।
.... ६ बुधवार–कलाष्टमी ८ बुधाष्टमी ८ पर्व।
.... ९ शनिवार–रम्भा ११ एकदशी व्रत सबका
.... १० रविवार–प्रदोष व्रत, धनत्रयोदशी १३ (धन तेरस) नरक चतुदशी १४ चन्द्रोदय २८ बजकर ३५ मिनट पर। १३ तिथि क्षय।
.... १२ मंगलवार–भौमवती अमावस्या ३० दीपावली ३०।
.... १३ बुधवार–अन्नकूट १ चन्द्र दर्शन-गोवर्धन पूजा, बली पूजा, नेपाली संवत ११० प्रारम्भ।
.... १४ गुरुवार–चन्द्र दर्शन, भ्रातृद्वितीया (भैयादूज)
.... १५ शुक्रवार–रवि-उल-अव्वल ३ माह शुरू श्री वैयनाकी श्री गणेशचतुर्थी ४ व्रत।
.... १६ शनिवार–५ तिथि क्षय, सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति, नर्मदा में स्नान।
.... १७ रविवार–सूर्य षष्ठी (डाला छठ) ६ व्रत।
.... १९ मंगलवार–दुर्गाष्टमी ८ गौ पूजा।
.... २० बुधवार–अक्षय नवमी ९ व्रत।
.... २२ शुक्रवार–सूर्य सायन धनु में दोपहर दो बजकर २१ मिनट पर।
.... २३ शनिवार–प्रबोधिनी (देवोत्थानी) ११ एकदशी व्रत सबका।
.... २४ रविवार–प्रदोष व्रत, चातुर्मास्य व्रत।
.... २५ सोमवार–चतुर्दशी १४ महानिशीथ काल रात्रि के ११ बजकर १८ मिनट से रात्रि के १२ बजकर ११ मिनट तक।
.... २६ मंगलवार–व्रत की त्रिपुरारी पूर्णिमा १५ फातेहा दुआज यजदहूम (वारावफात) मोहम्मद साहब का जन्म दिन।
.... २७ बुधवार–कृत्तिका पुता कार्तिकी पूर्णिमा १५ गुरुनानक जयन्ती, रथयात्रा (जैन)
.... २९ शुक्रवार–अशून्य शयन २ व्रत।

है, अतः सावधान रहे। महिलाओं के लिए यह मास शुभ नहीं है, वह अपने को विरोधियों के घिराव में महसूस करेंगी। नेतृत्व शक्ति में कमजोरी आवेगी। पुष्य नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, अषलेषा और पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख २-३-१२-१९-२०-२९-३० अशुभ हैं।

सिंह–दैनिक जीवन में अनुकूलता, बकाये रकम की प्राप्ति होगी। उत्तरार्ध में परेशानी और निराशा का योग है। महिलाओं को अपने समस्त कार्यों पर निगरानी, सतर्कता रखनी होगी, अन्यथा किसी विपति में फंस सकती हैं। पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, मघा और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्तिओं से इस मास की तारीख ४-५-१३-२१-२२-२३ अशुभ हैं।

कन्या–मासारम्भ में नेत्र रोग, वाणी में कठोरता, जननेन्द्रिय कष्ट अथवा व्यापारिक गतिरोध पैदा होगा। उत्तरार्ध में श्रेष्ठजन से लाभ प्राप्त होगा। वक्री बुध से भ्रातृ विरोध, साहस हीनता होगी। महिलाओं को, सामाजिक प्रतिष्ठा पर आंच आवेगी। हस्त नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेगें, उत्तराफाल्गुनी और चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से इस मास की तारीख ७-६-८-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

तुला–साहस और धैर्य से कार्य की सिद्धि होगी। द्रव्य लाभ और आजीविका के साधनों में उन्नति होगी। प्रभाव में शुभ वृद्धि होगी। कामवासना से अधिक प्रभावित होंगे। मासान्त में कुछ बिगड़ा अधूरा कार्य बनेगा। महिलाओं को यह मास शुभ-फलप्रद है। विशाखा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, स्वाती और चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख १-९-१०-१७-१८-१९-२१-२७-२८ अशुभ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृश्चिक–उच्च अधिकार, सुखानन्द उपहार यश, धन प्राप्ति में बाधा आवेगी। सम्मान विरोधी घटनाओं का कुयोग है। महिलाओं को पति कष्ट होगा। ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तिय अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, अनुराधा और विशाखा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से इस मास की तारीख २-३-११-१२-१९-२०-२१-२९-३० अशुभ हैं :

धनु–द्रव्य लाभ और दैनिक जीवन में खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त होगे। भूमि-विवाद चिंता का कारण होगा। रोजी-रोजगार में विघ्न-बधा का प्रभाव भी रहेगा। सात्विक गुणों को बढ़ाने का प्रयत्न करें। महिलाओं को समाजिक प्रतिष्ठा और यश की प्राप्ति में कठिनाई आवेगी। उत्तराषाढा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, पूर्वषाढा और मूल नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख ४-५-१३-१४-२१-२२-२३ अशुभ हैं।

मकर–राजकीय और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। कोई हर्षदायक समाचार प्राप्त होगा। नौकरी और व्यापार में प्रगति, स्त्री, संतान, सुख, प्राप्त होकर शुभ विचारों का उदय होगा। श्रेष्ठ व्यक्तियों के सम्पर्क से धन का लाभ प्राप्त होगा। महिलाओं को उच्च स्थान और महत्वपूर्ण कार्यों में सिद्धि मिलेगी। धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, श्रवण और उत्तराषाढा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से इस मास की तारीख ६-७-८-१५-१६-२४-२५ अशुभ हैं।

कुम्भ–दैवी कृपा का लाभ अभीष्ठ, प्रयासों में सफलता और उत्साहपूर्वक अपने उद्योग में रुचि लेंगे। धन लाभ का सुन्दर योग है। पारिवारिक उत्तरदायित्व की वृद्धि होगी। शत्रु एवं अन्य बाधाओं पर विजय, आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होगा। महिलाओं को यह मास शुभ हैं, इष्टमित्र औरपरिवार का पूर्ण सहयोग मिलेगा। शतभिषा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, धनिष्टा और पूर्वभाद्रपद नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख १-९-१०-१७-१८-२६-२७-२८ अशुभ हैं।

मीन–सामान्य दिनचर्या रहेगी। भाग्यावरोध और शुभ प्रयासों में बाधा, स्थानान्तरण का योग हैं। गुप्त शत्रुओं की वृद्धि चिन्तनीय है अतः राजकीय उपद्रव और विरोधियों की प्रवलता आदि के कारण चित परेशान रह सकता हैं। महिलाओं का संतान से मतभेद के कारण चित अप्रसन्न रहेगा। उत्तराषाढा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति अधिक सुख-सुविधा प्राप्त कर सकेंगे, पूर्वभाद्रपद और रेवती नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों से। इस मास की तारीख २-३-११-१२-१९-२०-२९-३० अशुभ हैं।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

साधना : साधना का अर्थ योग से संबन्धित हैं। वृश्चिक लग्न है। धन स्थान में धनु राशि का शनि। पंचम भाव में मीन का केतु। अष्टम भाव में मिथुन का सूर्य। नवम भाव में कर्क का चन्द्र, मंगल बुध। दसम भाव में सिंह का शुक्र। लाभस्थान में कन्या का राहु और व्यय स्थान में तुला का गुरु है। जिस जातक का जीवन योग साधना से सम्बन्धित होता है। उसके लग्नेश और अष्टमेष का सम्बन्ध होना आवश्यक है। यहां लग्नेश मंगल और अष्टमेष बुध भाग्येश चन्द्र के साथ भाग्य स्थान में स्थित होने से यह योग सिद्ध होता है: इसलिए नाम साधना पडा, और भी यहां शनि धनु राशि का है। इसके लिए वराहमिहिर का सूत्र है तपस्विनी अर्थात् साधनारत। मीन का केतु भी यही बताता है कि जीवन के भोग जीवन को आवश्यकता से अधिक कर लिये गए हैं अतः वर्तमान जीवन साधना का होगा।

और ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। अब आगे पाठकगण अपनी-अपनी बुद्धि से खोजें। यह मानकर चलें कि जिसने ताला बनाया है उसने उसकी चाबी भी बनाई हैं। आज की आवश्यकता है। पुराने ग्रंथों के अर्थों में आज का दृष्टिकोण रखना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यापार भविष्य

नवम्बर, १९८५

—दुर्गाप्रसाद गुप्ता, साहित्य विशारद

इस लेख में ज्यौतिष शास्त्र के आधार पर ग्रहों की युति, वेद्य, दृष्टि, वक्री, उदय और अस्त आदि का विचार करके व्यापारिक भविष्य फल लिखा गया है।

१. नवम्बर, वदी तीज की वृद्धि शुक्रवार—तीन दिन के अन्दर हर एक वस्तु में एक बार तेजो आयेगी। तब सौदा सुधार लें। २. नवम्बर, बदी ४, शनिवार—हस्तेभौम घृत, गुड़, खाण्ड, चीनी, नमक, जौ, गेहूं चना, चावल, तेज। वर्षा कम, खेती में हानि हो। ३. नवम्बर, वदी ५, रविवार—आर्दा नक्षत्र। "कार्ति के पंचमी रौद्र योगे—कातिक। आर्दावार रवि राजा युद्ध विरोध स्मातृण संग्रहः। चतुष्पेदऽन्यथा दुःख जायतेऽत्ये वृष्टिभम्" तृण-घास-चारा संग्रह करना चाहिए। आगे वर्षा की कमी से चारा तेज रहेगा। राजाओं में युद्ध हो, (कार्तिके रविणा रौद्र योगे संज्ञा महारण)। ४. नवम्बर, बदी ६, सोमवार—शाम को साढ़े सात बजे तुलायां शुक्र—"मेदिन्या क्षेमा रोग्यं किंचित्किं विरोधकृत" आरोग्य क्षेम कुशलता रहे। कहीं-कहीं वैर भाव भी हो। ५. नवम्बर, बदी ७, मंगलवार—अनाज, गुड़, खाण्ड, चीनी, चावल तेज। ६. नवम्बर, बदी ८, बुधवार—विशाखायां रविः चांदी, सोना, रस, सूत, रूई, नोट शेयर्स तेज, दक्षिणी देशों में दंगे। अस्त शनि—रूई, अलसी, सरसों, तिल, तेल, पाट, कुष्टा, सन, सूत, बारदाना, फल, फूल तेज। पशुओं में रोग हो। ७. नवम्बर बदी ९, गुरुवार—मघा नक्षत्र वर्षा कारक, वर्षा होने पर अन्न कुछ मन्दा हो सकता है। सिंहस्थ चंद्रमा, गुड़, गेहूं, मूंग, सोना, चांदी में तेजी, वर्षा की खैंच कारक। ८. नवम्बर, बदी १०, शुक्रवार—कल वाले भाव रहेंगे। ९. नवम्बर, बदी ११ शनिवार—सरसों, अलसी, तिल, तेल, पाट, कुष्टा, शेयर्स तेज। ज्येष्ठा का बुध गन्ना, चावल, घी, रस पदार्थ तेज तथा रोग कारक स्वात्यां शुक्र सभी चीजें तेज करेगा। १०. नवम्बर, बदी १३, रविवार—"रवि कृष्ण त्रयोदश्यां यव गोधूम मूल्यकृत" जौ, गेहूं तेज। सभी प्रकार का अनाज तेज हो। त्रयोदशी का क्षय, तीन दिन के अन्दर हर एक वस्तु में एक बार मन्दी कारक भी है। ११. नवम्बर, बदी १४, सोमवार—बाजार मन्दा रहेगा। मंदी में माल का स्टाक करें। तुला का चन्द्रमा रुई, कपास, विनौला, मूंगफली, सोना, चाँदी मन्दी करेगा। १२. नवम्बर, बदी अमावस्या, मंगलवार—को दीपमालिका (दीवाली) है। शुभ नहीं है। मंगलवारी पड़ै दिवारी, हंसै किसान रोवै व्यापारी। ऐसे भी कहा है (स्वाती में दीवा जले विशाखा खेलै गाय, कै धरती का पति मरै कै शाखा निष्फल जाय) १३. नवम्बर, कार्तिक सुदी १, बुधवार—काती सुदी पड़वा दिने जो बुधवारी होय। बिमणा तिगुणा चौगुणा कणे कबड्डा होय" (मेघ महोदये) अर्थात् धान्य का भाव दुगुना-तिगुना चौगुना तक तेज हो, और भी कहा है "प्रतिपत् सर्व मासेषु बुधे दुभिक्ष कारिणी" प्रत्येक मास की पड़वा बुधवारी दुर्भिक्ष कारक होती है। अन्न का स्टाक रखने वालों को अच्छा लाभ होगा। १४ नवम्बर, कार्तिक सुदी २ गुरुवार—आज का चन्द्र-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दर्शन रुई, कपास, सूत, सन, कपासिया तेज तथा सोना, चांदी मन्दे करेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र सोना, चांदी, तांबा पीतल सभी धातुयें मन्दी करेगा। १५. नवम्बर, कार्तिक सुदी ३, शुक्रवार—धनु का चन्द्रमा सोना, चांदी, रुई, कपास, गुड़, गेहूं, सरसों मूंगफली मन्दी करेगा। १६. नवम्बर कार्तिक सुदी ४, शुक्रवार—चतुर्थी का क्षय— मूंग, उड़द, चावल घी तेज। (किसी मास में तीजया सुदी चौथ घट जाय—ग्राहक मांगे मूंग, घी, विक्रेता नट जाय) अर्थात् माल नहीं है। सुदी में तिथि क्षय तीन दिन के अन्दर एक बार हर एक वस्तु में तेजी लाती है।

(पृष्ठ ४३ का शेष)

कांक्षाओं को पूर्ण कर देश, समाज में प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ पुरुष कहलावेंगे।

प्रश्न—हस्तचित्र भेज रहा हूं। मेरे प्रश्नों के उत्तर दें। उम्र ४० वर्ष।

— ओमप्रकाश सारस्वत, गोवा

उत्तर—आपकी भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर सर्व जिह्वाकार है। यह ठीक है। मैं इसे शुभ लक्षण मानता हूं। यदि यह असाधारण रूप से ऊंची चली जाती हैं, और शनि क्षेत्र को पारकर मध्यमांगुली के बाहर पहुच जाती तो हम इसे अशुभ मानते। परन्तु आपका हस्तचित्र ऐसा नहीं हैं। भाग्य रेखा शनि क्षेत्र तक ही पहुच रही हैं और हृदय रेखा भी शनि क्षेत्र पर स्पष्ट और स्वच्छ है अतः आप अपने जीवन में अपने सभी कार्यों में सफल रहे होगे। आपकी भाग्य रेखा जीवन रेखा को स्पर्श करती आगे बढ़ी हैं। यह भी शुभ है आपकी योगयता और परिश्रम द्वारा ही अपने भाग्य का निर्माण कर सके हैं। भाग्य रेखा और जीवन रेखा का स्पर्श स्थान की आयु २८ वर्ष हैं। अतः आपका २८ वां वर्ष सर्व श्रेष्ठ गया होगा। आपके हस्तचित्र में मुझे विशेष बात यह नजर आती है कि चन्द्र क्षेत्र से एक रेखा शनि क्षेत्र तक बढ़ रही है जो भाग्य रेखा में भी मिल रही है। ऐसी रेखायें मैने बहुत कम हाथों में देखी हैं। अर्थात आपकी आयु के २७ वें वर्ष में कोई ऐसा व्यक्ति आया होगा। जिससे आपकी उन्नति विशेष रूप से हुई होगी। आपके मणिबन्ध रेखा के तीनों बलय में से प्रत्येक यवाकार चिन्ह लिए हुए हैं। अतः आप भाग्यवान और धनी पुरुष हैं। स्वास्थ्य रेखा से एक रेखा निकट कर मंगल पर्वत को अर्धवर्तुलाकार घेरती हुई स्वच्छ और स्पष्ट हैं अतः आप अपने धन्धे की विद्या और कालाओं के पूर्ण जाता है और आप अपने धन्धे व्यापार आदि में चमत्कार दिखाने की शक्ति रखते हैं। यह ठीक है कि हस्त की रेखाओं में ९ वर्ष के अन्दर परिवर्तन होता रहता है। अतः प्रत्येक नौ वर्ष बाद हस्तचित्र पढ़ना चाहिये और पिछले हस्त-चित्र को समाल कर नहीं रखते।

नोट—श्री रणधीरसिंह चन्डीगढ़, जयसिंह मथुरा, कुमारी हेमलता बम्बई, विजय बहादुर काठमडू कु० प्रताप उज्जैन, प्रेमशंकर नागपुर, हरीसिंह उपाध्याय भोपाल के प्रश्नों के उत्तर मय जन्म पत्रिका के रजिस्ट्रर्ड डाक से भेज रहा हूं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने व्यवसाय की जानकारी प्रत्येक प्रान्त, शहर, गांव में पहुंचाने हेतु, ज्यौतिष-मार्तण्ड में विज्ञापन दें ।

यह पत्रिका भारत के प्रमुख रोड़वेजों के बुक-स्टालों तथा रेल्वे-बुक-स्टालों पर प्राप्त है और भारत के प्रमुख पुस्तक विक्रेता इस पत्रिका को बड़ी संख्या में बेचते है। विदेशों में भी इसकी प्रतियां नेपाल, भूटान, अमेरिका, इंगलैंड, कनाड़ा, मारीशस, कुवेत, दुबई, दोहकतार, मलेशिया तथा सिंहापुर के नागरिकों को प्रतिमास भेजी जाती है। राजस्थान सरकार एवं हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा समस्त पुस्तकालयों एवं शिक्षण संस्थाओं के लिए तथा समस्त संस्कृत विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए मान्यता प्राप्त है। राजस्थान सरकार के जन सम्पर्क विभाग द्वारा राजकीय विज्ञापनों के लिए "ए" श्रेणी में वर्गीकृत है। भारत के प्रमुख नगरों एवं ग्रामोण क्षेत्रों में पंचायत स्तर पर "ज्यौतिष मार्तण्ड" अत्यधिक लोकप्रिय है। अतएव समस्त उद्योगपति, व्यवसायी एवं सामान्य व्यापारिक वर्ग से निवेदन है कि अधिकाधिक विज्ञापन देकर अपने उत्पादन का प्रचुर मात्रा में प्रचार करावें और धनलाभ प्राप्त करें, तथा इस धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थान की प्रगति में योगदान दें। **हर शहर में एजेन्ट एवं ट्रेवलिंग एजेन्ट तथा भारत के प्रमुख व्यापारिक एवं औद्योगिक केन्द्रों के लिए ऐसे प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो विज्ञापन जुटा सके। अनुभव और विवरण सहित आज ही पत्र लिखें।**

व्यवस्थापक—

"ज्यौतिष-मार्तण्ड" कार्यालय
पोस्ट बाक्स नं. १९९, सतसंग भवन के सामने
डी-१९, गणेश मार्ग, बापूनगर जयपुर (राजस्थान)
पिंकोड नं. ३०२०१५

विज्ञापन की दर प्रति अंक
साधारण पृष्ठ—४५० रु०
आधा पृष्ठ—३५० रु०
चौथाई पृष्ठ—२५० रु०

नोट:—विज्ञापन के मेटर के साथ बैंक ड्राफ्ट से धन भेजना अनिवार्य है।

"ज्यौतिष-मार्तण्ड के ९ सर्वश्रेष्ठ विशेषांक" और ६० सर्वश्रेष्ठ अंक

विशेषांक, १९७३-७४-७५-७६-७९-८१, १९८३, १९८४, १९८५ विशेषांक १९८३ और १९८४ सर्वश्रेष्ठ सुन्दर कागज में प्रकाशित हैं। प्रत्येक का मूल्य दस रुपये हैं। कलेवर प्रत्येक विशेषांक का २०० पृष्ठ के करीब है। पाठकों की रुचि और जिज्ञासाओं की तृप्ति हेतु हमने अनेक विद्वानों के खोजपूर्ण एवं सत्य घटनाओं के आधार पर— तन्त्र मंत्र, यन्त्र, पुनर्जन्म, परकाया-प्रवेश एवं प्रेतात्मा तथा अन्य कई गूढ़ विषयों पर, स्वर-शास्त्र, सगुन-शास्त्र, सामुद्रिक-शास्त्र तथा ज्यौतिष-शास्त्र आदि पर अनेक उच्च-कोटि के गवेषणात्मक लेख प्रस्तुत किये है। इन सभी कारणों [illegible] आलौकिक तत्व और दुर्लभ साहित्य से भरपूर [illegible] अतः इन्हें आज ही प्राप्त कीजि[illegible] ६० सर्वश्रे[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Registration No. R. N. 18041/69
Post Regd. No. J. 2519

"ज्यौतिष-मार्तण्ड पाक्षिक पत्रिका"

इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन इनके ग्राहकों एवं आजीवन ग्राहकों पर ही निर्भर है। अतः इसके ग्राहक बन कर तथा बनाकर, इसे अधिक सहयोग दीजिए।

ग्राहक बनने के अधिकारी—

१. प्रत्येक के प्रथम पक्ष का शुल्क (१२ अंक) ४५-५० रुपये

२. प्रत्येक के द्वितीय पक्ष का शुल्क (१२ अंक) २५-५० रुपये

३. दोनों पक्षों का वार्षिक शुल्क (२४ अंक) ७१ रुपये

४. आजीवन ग्राहक शुल्क ५०१ रुपये

★ ग्राहकों से प्राप्त धन का उपयोग ज्यौतिष सम्बन्धी योजनाओं के प्रचार-प्रसार एवं ज्यौतिष–मार्तण्ड पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने एवं तत्सम्बन्धी नवीन कार्यक्रम, सम्मेलनों, गोष्ठियों व ज्यौतिष प्रशिक्षण शिविर आदि के कार्यों में किया जाता है।

★ आजीवन ग्राहकों को ज्यौतिष शास्त्र से सम्बन्धित उनकी समस्त समस्याओं का यथोचित समाधान, समय-समय पर भारत के विद्वान ज्यौतिषियों द्वारा कराया जाता है, जिसका केवल आंशिक शुल्क ही लिया जाता है।

★ ज्यौतिष प्रेमियों से अनुरोध है कि वे इस पत्रिका के उपर्युक्त ग्राहकों की सूची में अपना नाम लिखाकर इस विज्ञान के,प्रचार-प्रसार में योगदान करें। इस पत्रिका का आजीवन सदस्य बनना समाज में एक गौरव की बात समझी जाती है।

Contact (Phone : 62506–66516)

भी मिल रहा है। [illegible] रेखायें
में देखी हैं। अर्थात आपकी आयु के [illegible] में
कोई ऐसा व्यक्ति आया होगा। जिससे आपकी
उन्नति विशेष रूप से हुई होगी। आपके मणिबन्ध

ज्यौतिष-मार्तण्ड, पत्रिका वर्ष १९६९ से प्रकाशित है।

उद्देश्य

★ ज्यौतिष, सामुद्रिक, अङ्क ज्यौतिष, मन्त्र-तन्त्र एवं तत्सम्बन्धी समस्त शास्त्रों की चर्चा-परिचर्चा करना।

★ समय-समय पर सम्बन्धित विषयों पर परिसम्वादों का आयोजन, विवेचन एवं अनुसंधान करना, इन कार्यों में लगे हुए विद्वानों के लिए सामग्री एवं सूचनायें एकत्र करना तथा उनके अनुभवों एवं उपलब्धियों को प्रकाश में लाकर जन-सामान्य का ज्ञान सम्बर्द्धन करना।

★ जन-सामान्य में ज्यौतिष-शास्त्र एवं अधिकृत अविश्वासों के प्रति, विश्वास एवं श्रद्धा बढाना।

★ देश-विदेश के सम्बन्धित अधिकृत विद्वानों से सम्पर्क कर, उनके विचारों एवं उपलब्धियों से पाठकों को अवगत कराना।

★ अधिकृत पांडुलिपियों को खोजकर, पत्रिका के द्वारा उसे प्रकाश में लाते हुए, बाद में पुस्तकाकार में, संग्रह कर, सामग्री को विवेचन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन के लिये उपलब्ध कराना।

★ अधिकृत विद्वानों को आमन्त्रित करना, उनका सम्मान करना।

★ इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये साधन जुटाने में सहायता देना।

★ ज्यौतिष मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। लेख की कापीराइट (अधिकार) प्रधान संपादक देवधर पाण्डेय के पास सुरक्षित है। अतः बिना लिखित पूर्वानुमति लिए किसी भी लेख से कोई उदाहरण नहीं लेना चाहिये।

[illegible] समस्त मामले के लिये न्यायालय-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu